समाज विकास

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का मुखपत्र

दिसम्बर २००५ ♦ वर्ष ५५ ♦ अंक १२ ♦ एक प्रति १० रुपए ♦ वार्षिक १०० रुपए

राजस्थान के पूर्व मुख्यमंत्री एवं अ.भा. कांग्रेस कमिटी के महासचिव श्री अशोक गहलोत

भारत के राष्ट्रपति माननीय महामहिम डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम से पद्मभूषण अलंकार प्राप्त करते हुए श्री हरिशंकर सिंघानिया

संसदीय कार्य एवं आवकारी मंत्री प्रो. प्रबोध चन्द्र सिन्हा पश्चिम बंग सरकार

७१वां स्थापना दिवस समारोह - २००५

विशेषांक सम्पादक : सीताराम शर्मा

Precision player

Patton is a multi-product company, a Government of India recognised Export House, Star Exporter, a recipient of National Award for Excellence in Exports from The President and The Prime Minister of India.

The passion for quality. That's what wins our products the approval from Underwriters Laboratories Inc.(UL), USA, Canadian Standards Association(CSA) ISO 9001 from RWTUV, Germany and ISO 14001 form KMAQA, Korea.

The will to win sets Patton apart as an organisation of unusual strengths- excelling in Industrial Fasteners, Pipe Fittings, Builders' Hardware, Electrical Stampings, Pressed Steel and Plastic Water Storage Tanks, Material Handling Containers, Pallets, Drums, Insulated Boxes, Jerry Cans, Lamp Shades and Rigid PVC Pipes.

Patton. We deliver excellence... the way the world demands it.

PATTON

Endeavour Enterprise Excellence

3C, Camac Street Calcutta 700 016
Ph : +91 33 2229 4369/4148
Fax : +91 33 2217 2189, 2226 5448
Email : patton@pattonindia.com
Visit us at : www.pattonindia.com

India's Only ISO 9002 & 14001 Certified Manufacturer & Exporter of Rotomoulded, Blowmoulded & Extruded Products

इस अंक में

अनुक्रमणिका	३
जनवाणी	४
संपादकीय	५
अध्यक्ष की कलम से / *श्री मोहनलाल तुलस्यान*	६-७
७० साल के साये में / *श्री नंद किशोर जालान*	८
चुनौतियों से रूबरू होने की... / *श्री भानीराम सुरेका*	९-१०
संस्कार छिपता नहीं / *श्री प्रकाश चंद्र अग्रवाल*	११
सामाजिक वैमनस्यता कारण व निवारण / *श्री चिरंजीलाल अग्रवाल*	१२
हमारे पूर्वज - राजस्थानी वैश्य / *श्री बालकृष्ण गोयनका*	१३-१४
प्रकृति सबसे बड़ी गुरु / श्री सोमप्रकाश गोयनका	१५
विवाह को समस्या बनने से रोकना आवश्यक / *श्री राजेन्द्र शंकर भट्ट*	१६
नया नेतृत्व नये कार्यकर्ता... / *श्री केवलचंद मीमानी*	१७
खुली बाजार व्यवस्था के दौर में... / *श्री बंशीलाल बाहेती*	१८-२१
कविता - पिला सकूं / *श्री दीपचंद सुठार*	२१
देवी शक्ति और राक्षस से पराजित / *श्री श्याम सुन्दर बगड़िया*	२२
व्यवसाय में सेवा या सेवा में व्यवसाय / *श्री गौरीशंकर काया*	२३-२४
सबसे बड़ा दर्द / *श्री नथमल केडिया*	२५
सम्मेलन के विगत अधिवेशन और पदाधिकारी	२७
सम्मेलन के पदाधिकारी व कार्यकारिणी समिति	२८
सम्मेलन की स्थायी समिति	२९
प्रांतीय अध्यक्ष एवं मंत्रीगण	३०
मारवाड़ी सम्मेलन फाउंडेशन ट्रस्टी	३०
अतिथि परिचय	३३
महामंत्री का प्रतिवेदन	३५-४४

युग पथ चरण

■ अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की कार्यकारिणी एवं स्थायी समिति की बैठक का कार्यवृत्त सहित पश्चिम बंग, बिहार, पूर्वोत्तर, उत्तर प्रदेश प्रांतीय सम्मेलनों की रिपोर्टों के साथ अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी महिला सम्मेलन एवं अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच की भी महत्वपूर्ण रिपोर्टें।

४५-५०

समाज विकास

दिसम्बर, २००५

वर्ष ५५ ● अंक १२

एक प्रति- १० रु.

वार्षिक- १०० रु.

समाज विकास

१. अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का विचार मंच।
२. सामाजिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक चेतना का संवाहक।
३. समाज में फैली कुरीतियों, कुसंस्कारों को मिटाने का माध्यम।
४. समाज में संगठन के लिए सशक्त माध्यम।
५. राजस्थानी संस्कृति, कला, साहित्य व भाषा के प्रति समर्पित।
६. समाज में होने वाली सामाजिक घटनाओं, वर्जनाओं का वैचारिक संदेशवाहक।
७. भारत के कोने-कोने में फैले हुए ९ करोड़ मारवाड़ियों को शब्द प्रदाता।
८. आपकी आवाज व विचारों को देश-विदेश के कोने-कोने में बुलन्दी देने हेतु

प्रकाशित रचनाओं से सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं है।

स्वत्वाधिकारी : अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन, १५२-बी, महात्मा गांधी रोड, कोलकाता- ७, फोन : २२६८-०३१९ के लिए श्री भानीराम सुरेका द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित तथा इलस्ट्रेटेड इंडिया प्रेस, ७४, लेनिन सरणी, कोलकाता-७०००१३ में मुद्रित।

संपादक-नंदकिशोर जालान

ज न वा णी

इस स्तम्भ के अंतर्गत सांस्कृतिक, आर्थिक एवं सामाजिक विषयों पर पाठकों के मतों का स्वागत है। साथ ही समाज के आंतरिक एवं गहन विषयों तथा समाज विकास में प्रकाशित सामग्री पर आपकी प्रतिक्रिया और सुझाव भी आमंत्रित है। *- सम्पादक*

सितम्बर अक्टूबर २००५ के अंक आद्योपान्त पढ़कर प्रसन्नता हुई। पत्रिका में हिन्दी साहित्य की सभी विधाओं के साथ-साथ राजस्थानी भाषा की भी रचनाएं सम्मिलित की गई है जिससे इसका महत्व और अधिक बढ़ गया है। इसी के साथ-साथ विभिन्न प्रांतों में हमारे मारवाड़ी भाइयों द्वारा सामाजिक संदर्भ में किए जा रहे कार्यकलापों की प्रेरणाप्रद व सचित्र जानकारी प्राप्त हो जाती है। एतदर्थ समाज विकास पत्रिका को अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी समाज का दर्पण कहें तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी।

- दीपचन्द सुथार, मेड़ताशहर

पत्रिका सही समय पर मिल रही है। सम्मेलन का कार्यक्रम दिन प्रतिदिन प्रगति के पथ पर बढ़ रहा है। पत्रिका के माध्यम से जानकारी मिल रही है। पत्रिका के पृष्ठों को बढ़ाने की ओर ध्यान दीजिए।

- अशोक अग्रवाल,
खेतराजपुर

'समाज विकास' का संपादकीय से सजा-धजा अंक मिला। संपादकीय का अभिधार्थ और लक्षणार्थ के साथ व्यंजनार्थ भी अत्यंत गंभीर है। आप और आपसे जुड़े आत्मीयजन इस संक्रांति बेला में जो श्लाघनीय प्रयत्न कर रहे हैं उसका हृदय से अभिनंदन करता हूं।

- दीनदयाल ओझा, जैसलमेर

'समाज विकास' अक्टूबर अंक प्राप्त हुआ। मारवाड़ी सम्मेलन का यह मुख पत्र आपके संपादन में मौलिक विचारों और समाचारों का सुग्राह्य बनता जा रहा है। साधुवाद। अंक में संपादकीय गांवों से शहरों की ओर पलायनता पर वास्तविक चिन्ता व्यक्त करता है। और युवाओं की भूमिका को भी सुस्पष्ट करने की ओर संकेत करता है। मोहनलाल जी तुलस्यान का आलेख भी युवाओं से संबंधित है। उनकी भी चिन्ता वाजिब ही है कि उद्यमिता की भावना का विकास युवाओं में होने पर अस्तित्व की रक्षा की जा सकती है। सीतारामजी, भानीरामजी, हीरालाल सोमानी, बंशीलाल बाहेती और अनिता अग्रवाल के लेख भी प्रेरित करते हैं। पूरे ही अंक के योग्यतम संपादन के लिए साधुवाद।

- रामेश्वर शर्मा, कोटा

'समाज विकास' का आपका सम्पादकीय व अन्य सामग्री बड़ी ज्ञानवर्धक, शोधपूरक, शिक्षाप्रद व सूचनाप्रद होने के साथ अत्यन्त रोचक होती है। समकालीन सामाजिक घटनाओं के साथ समाज में प्रचलित कुप्रथाओं, विकृत रीति रिवाजों के निवारण हेतु भी जनजागरण व चेतना हेतु सामग्री और समाज को संगठित करने, उत्सव, समारोहों का समीचीन विवरण पढ़कर अच्छा लगता है। एक प्रगतिशील समाज की सही तस्वीर देखने को मिलती है। आप व संपादक मंडल के सभी सदस्य बधाई के पात्र हैं।

- डॉ. तारालक्ष्मण गहलोत
जोधपुर

अक्टूबर अंक प्राप्त हुआ। 'समाज विकास' में अपने समाज को बहुत ही बारीकी से तौला एवं परखा जा रहा है जो एक बहुत बड़ी उपलब्धि है। अध्यक्ष की विचारधाराओं से युवा वर्ग को निश्चित रूप से उपदेश लेना उचित है। श्रद्धेय केवल चंद मिमानी लिखित ''धरा को उठाओ, गगन को झुकाओ'' अपने आप में अनोखा लेख है। ''कवि और पीड़ा'' में लेखिका श्रीमती कोमल अग्रवाल ने नारी जीवन की आंतरिक वेदना एवं उलझती जीवन की परिपाटी को बड़े ही व्यथित शब्दों में लिखा है। इनके उद्‌गारों के लिए उन्हें धन्यवाद।

- सत्यनारायण तुलस्यान
मुजफ्फरपुर, बिहार

सितम्बर ०५ के अंक में सम्पादकीय में 'समाज विकास' एक मूल मंत्र पढ़कर मानसिक चेतना का विकास होता है। इसके सर्वे भवन्तु सुखीनः वे - सर्वे सन्तु निरामयः की भावना जाग्रत होती है तथा व्यक्ति और समाज का अन्योन्याश्रय संबंध प्रतीत होता है। इस महान विचार के लिए सम्पादक धन्यवाद के पात्र हैं। राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मोहनलाल तुलस्यान द्वारा लिखित ''दौरे हस्ती में उभर वर्ना सिमट जाएगा'' बहुत ही अच्छा लगा। इससे एक स्वस्थ समाज की कल्पना की जा सकती है।

सम्पादकीय

आज सम्मेलन की क्या जरूरत है ?

✍ सीताराम शर्मा, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

"अब सम्मेलन की क्या जरूरत है ? सम्मेलन की उपयोगिता एवं प्रासंगिकता समाप्त हो गई है। २१वीं शताब्दी में मारवाड़ी सम्मेलन की बात करने का क्या औचित्य है ? आज का मारवाड़ी समाज अपने आप को सम्मेलन से जोड़ नहीं पा रहा है। शिक्षित समाज एवं युवा पीढ़ी की प्राथमिकताएं बदल रही है, उनका सोच बदल रहा है एवं इस बदलते सोच में सम्मेलन कहां 'फिट' हो पा रहा है।"

यदा-कदा प्रश्न उठते रहते हैं जिन्हें न तो सिरे से खारिज किया जा सकता है, न ही उन्हें नजरअन्दाज किया जाना चाहिए। क्योंकि यह सच है कि समाज में तेजी से एक बदलाव आया है। उसके सोच में, आचरण में आदर्शों में, तथा मूल्यों में बदलाव आया है।

७० वर्ष पूर्व १९३५ में जब सम्मेलन की स्थापना की गई थी तब भी उसके उद्देश्यों एवं कार्यक्रमों के प्रति समाज आशंकित था। सम्मेलन को पूरे समाज का समर्थन भी प्राप्त नहीं था। आरम्भ के वर्षों में तो समाज सुधार के मुद्दों को अलग रख दिया गया था क्योंकि समाज ऐसी बातों को सुनने को भी तैयार नहीं था। हर परिवर्तन का विरोध होता आया है, लेकिन परिवर्तन अवश्यमभावी है। कुछ परिवर्तन अच्छे के लिए होते हैं, और कुछ अवांछित।

आज हमारे घर की लड़कियां एवं बहुएँ उच्च शिक्षा प्राप्त कर रही हैं, घर में ड्रेस, सलवार कमीज पहनती हैं। प्रेम विवाह तथा अन्तर्जातीय विवाह पर बातचीत करती हैं - यह सब आज बड़ा सहज एवं स्वाभाविक लगता है। लेकिन कुछ वर्षों पूर्व तक यह ऐसा नहीं था। इस परिवर्तन के लिए सम्मेलन ने, समाज ने एक लड़ाई लड़ी है, अथक प्रयास किया है। एक तरफ जहां पर्दा प्रथा के खिलाफ आन्दोलन किये, वहीं लड़कियों को शिक्षा मिले इसके लिए घर-घर जाकर प्रयास किया गया। इसी तरह मृत भोज, विधवा विवाह आदि कितनी सदियों, अंधविश्वासों एवं परम्पराओं के विरुद्ध समाज एवं सम्मेलन ने एक लगातार आंदोलन किया है।

पर्दा प्रथा या नारी शिक्षा के सवालों पर आज सम्मेलन की जरूरत पर कुछ हद तक सवाल किया जा सकता है। हालांकि इन समस्याओं को हम शहरों-कस्बों तक ही सुलझा पाए हैं। लेकिन समाज की नारी को आज भी अत्याचार-प्रताड़ना का सामना करना पड़ता है। दहेज के नाम पर आज भी बहुओं को जलाया जाता है। विधवा को आज भी प्रताड़ना का सामना करना पड़ता है। इन्हें आज भी सम्मेलन द्वारा समाज सुधार की जरूरत है।

समाज शिक्षित हुआ है लेकिन सुधार अभी भी बाकी है। संचय की प्रवृत्ति का ह्रास हुआ है एवं झूठा दिखावा बढ़ रहा है। व्यवसाय में ईमानदारी जो कभी समाज की ताकत थी, में कमी आ रही है। "न खाता सही, न बही सही, मारवाड़ी कहे वही सही" - अब एक सिर्फ खोखली कहावत रह गई है। अपने से बड़ों की इज्जत, पारिवारिक अनुशासन, टूटते विवाह आदि ऐसे सामाजिक प्रश्न हैं जिनको कोई कोर्ट-कचहरी नहीं सलटा सकती। यह सुधार सिर्फ समाज को स्वयं करना है, जो सम्मेलन के माध्यम से ही संभव है।

मैं यह बात सदैव एवं सभी जगह कहता हूं कि सम्मेलन एक ऐसी संस्था है जो अपने समाज की बड़ाई का ढोल नहीं पिटता बल्कि समाज की कमियों, बुराइयों एवं खामियों के बारे में बातचीत कर उनके निराकरण के लिए प्रयास करती है। ऐसी संस्था किसी अन्य समाज में नहीं है।

हमारे सामाजिक-नैतिक मूल्यों में एक बड़ी गिरावट आई है। सम्मेलन भी इस गिरावट से अछूता नहीं रहा है क्योंकि समाज से ही सम्मेलन है। कोई भी अन्य समाज या स्वयं देश इससे अछूता नहीं है। लेकिन हममें कुछ खूबियां थीं जिसके चलते हमारा एक विशिष्ट स्थान था, वह खूबियां भी हम खो रहे हैं। यह एक चिन्ता का विषय है। यह हमारे बुजुर्गों की दूरदर्शिता थी कि उन्होंने इस जरूरत को समझा कि समाज में लगातार सुधार की आवश्यकता है एवं सम्मेलन की स्थापना की। सम्मेलन न सिर्फ समाज को सुरक्षा एवं विकास के लिए एक प्लेटफार्म प्रदान करता है बल्कि बदलते समय के साथ-साथ चलने एवं परिवर्तन के लिए विचार भी प्रदान करता है। सम्मेलन एक सेवा संस्था नहीं, बल्कि एक विचार मंच है जो समाज की वर्तमान खामियों एवं असंगतियों से समाज को आगाह करने के साथ-साथ भविष्य की चुनौतियों के लिए तैयार करता है। समाज सुधार एक निरन्तर प्रक्रिया है अतएव सम्मेलन की आवश्यकता कल थी, आज है एवं कल भी रहेगी।●

जमाने को आगे बढ़ाना है

✍ मोहनलाल तुलस्यान

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का यह ७१वां साल है और मैं भी अपनी उम्र के ७०वें पड़ाव पर हूं। सत्तर साल का सफर चाहे व्यक्ति का हो या संस्था का, निश्चित तौर पर बाधा-विघ्नों से परे नहीं हो सकता। हुआ भी नहीं है। जिस तरह मैं संघर्ष के एक लंबे दौर से गुजरकर आज की स्थिति तक पहुंचा हूं उसी तरह सम्मेलन भी आन्दोलनों के लंबे इतिहास का गवाह बनता आज तक कायम है।

मैं कल रहूं या न रहूं यह कहना मुश्किल है क्योंकि जीवन नश्वर है। मनुष्य आदिकाल तक नहीं रहता लेकिन संस्थाओं के मामले में ऐसा नहीं होता। संस्थाएं पीढ़ियों का प्रतिनिधित्व करती हैं। एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी, फिर तीसरी, चौथी क्रमिक रूप से संस्थाओं का प्रतिनिधित्व बदलता जाता है पर संस्थाएं बनी रहती हैं बशर्ते बदलते वक्त के साथ सोच, कार्यशैली और लक्ष्य में बदलाव को प्रमुखता दी जाए।

जड़ता मृत्यु का सूचक है चाहे वह व्यक्ति के परिप्रेक्ष्य में हो या संस्थाओं के। सतत् परिवर्तन, सतत् चिन्तन, सतत् प्रयास से ही व्यक्ति और संस्थाओं को प्रासंगिक बनाया जा सकता है।

★★★

भूले बिसरे हुए दिनों का ख्याल, गुमशुदा रास्ते दिखाता है,
क्या बढ़े हम नई रूतों की तरफ, पिछला मौसम हमें बुलाता है।

- मुख्मूर सईदी

उम्र के ७०वें पड़ाव पर पहुंचकर मेरी चेतना में ये पंक्तियां कौंध रही हैं। न जाने क्यों जमाने का नया चलन दिल को कुछ रास नहीं आ रहा। लगता है कुछ छूट गया है। कुछ तो है जो टूट गया है। बहुत सोचने-विचारने पर एक शब्द उछलकर सामने आता है - आत्मीयता। हां आत्मीयता का भाव ही आज हमसे छूटता जा रहा है जबकि यह मनुष्य की सबसे अमूल्य धरोहर है।

मनुष्य-मनुष्य में आत्मीयता न रहे, एक-दूसरे के सुख-दुख में काम आने की भावना न रहे तो क्या मनुष्यता कायम रह सकती है? लेकिन ऐसा हो रहा है और सबसे बड़ी विडम्बना यह है कि इसे आधुनिकता का नाम देकर गौरवमंडित भी किया जा रहा है।

बहुत पहले किसी दार्शनिक ने कहा था-

"सबसे अधिक सुखी समाज वह है जिसमें हरेक व्यक्ति एक-दूसरे के प्रति हार्दिक सम्मान की भावना रखता है।"

मैंने बचपन में अपने समाज यानि मारवाड़ी समाज में इस विशेषता को देखा था। तब मारवाड़ी समाज संभवत: अकेला ही ऐसा समाज था जिसके सदस्यों में सहयोग, समर्पण व सद्भाव की भावना बलवती थी। कोई भी मारवाड़ी भाई जीविका के सन्धान में गांव से शहर आता था तो रोटी की चिन्ता से मुक्त रहता था। आते ही रोटी और ठहरने की व्यवस्था लोग करते थे और फिर उसके लिए रोजी की खोज भी करते थे। समाज के सहयोग से एक अजनबी मारवाड़ी स्वनिर्भर होकर अपने परिवार के भरण-पोषण का जिम्मा उठाता था। तब सामाजिक क्षेत्र में भी ऐसे लोगों का प्राचुर्य था जो नि:स्वार्थ भाव से समाज की भलाई के लिए अपना तन-मन-धन सबकुछ अर्पित करते थे। अपनी कमाई का एक हिस्सा सामाजिक कार्यों के लिए खर्च करना गौरव की बात होती थी। यह वह दौर था जब शिक्षा में भले ही मारवाड़ी बहुत आगे नहीं थे लेकिन व्यापार-वाणिज्य, सामाजिक आचार-व्यवहार, सांगठनिक एकबद्धता में वे अन्य समाजों के लिए मिसाल बने हुए थे।

★★★

"ज्ञान जब इतना घमण्डी बन जाए कि वह रो न सके, इतना गंभीर बन जाए कि हंस न सके और इतना आत्मकेन्द्रित बन जाए कि अपने सिवाय और किसी की चिन्ता न करे, तो वह ज्ञान अज्ञान से भी ज्यादा खतरनाक होता है।"

- खलील जिब्रान

प्रख्यात दार्शनिक के इन शब्दों की वास्तविकता का कटु अनुभव मुझे मेरे अपने ही समाज में हो रहा है। पिछले वर्षों में

शिक्षा के क्षेत्र में मारवाड़ी युवक-युवतियों ने आशातीत सफलता हासिल की है, लेकिन जहां इसके प्रभाव से समाज को और आगे बढ़ना चाहिए था वहां देखा यह जा रहा है कि समाज टुकड़ों में बंट रहा है। सामाजिकता तो दूर पारिवारिकता की सही भावना भी अधिकांश लोगों में नहीं है। एक समय पूरे गांव को परिवार मानने वाला मारवाड़ी समाज आज पति-पत्नी और बच्चे तक को परिवार मानने की संकीर्णता से ग्रस्त है। सहोदर भाई तो दूर माता-पिता तक से किनारा करने की मनोवृत्ति बढ़ रही है। क्या यही ज्ञानवृद्धि का परिणाम है ?

★★★

ऐ आसमाँ ! तेरे खुदा का नहीं है खौफ, डरते हैं ऐ जमीन ! तेरे आदमी से हम

– जोश मलीहाबादी

मुझे भी भगवान से डर नहीं लगता। भगवान के प्रति मेरी पूरी आस्था है। जानबूझकर मैंने कभी ऐसा कोई काम नहीं किया जिससे किसी को भी क्लेश पहुंचे। मेरी भक्ति मेरे मन में बसी मनुष्योचित भावना को सुरक्षित, संरक्षित रखने व संवर्धित करने की साधना है। मगर मारवाड़ी समाज में भक्ति को लेकर इन दिनों बड़े प्रयोग हो रहे हैं। युवाओं का एक बड़ा हिस्सा अपने व्यापार से दूर होकर धार्मिक आयोजनों को सफल बनाने की मुहिम में जुट गया है। साल भर छोटे-बड़े धार्मिक आयोजनों की केन्द्रीय धुरी बने मारवाड़ी युवा इस बात से अनजान हैं कि उन्नति का आधार धर्म नहीं कर्म है। धर्म तो कुपथ पर संचालित होने से बचने का एक अंकुश मात्र है।

आजका धार्मिक क्षेत्र भी कलुषित होने से बचा नहीं है। आये दिन धर्म के ठेकेदारों की काली करतूतों की पोल खुलती रहती है इस पर भी लोग चेत नहीं रहे। मैंने तो यह भी अनुभव किया है कि धर्म की आड़ में जो व्यापार विकसित हुआ है उसमें मनुष्यता, सच्चरित्रता, आत्मीयता महज लोगों को रिझाने का शब्दजाल है। वास्तविकता तो यह है कि धार्मिकता पाखंड का पर्याय बन चुकी है। जिस समाज में भाई-भाई का दुश्मन हो, बाप-बेटे में नहीं बनती हो उस समाज में धर्म या प्रभाव अपने आप में चिन्तन का विषय होना चाहिए।

★★★

मेरे गीतों में मुहब्बत कम बगावत वेश है,
पिस रहा हो जब कि इन्सां
लूट रही हो आदमीयत,
चूसती हो जिस्मे-इन्सानी का खूं
जोंक सलाए की यूं आराम से,
क्या यह जायज है कि उल्फत के तराने गाऊं मैं ?
या मुहब्बत का अलंबरदार बनकर आऊं मैं ?

आज के समाज में व्याप्त रूढ़ियों, कुरीतियों को देखकर मुझे बड़ी कोफ्त होती है। मैं सोचता हूं कि आधुनिकता का क्या यही अर्थ है कि लोग परम्परा को विकृत करें, अच्छाइयों की जानबूझकर उपेक्षा करें या लोकलाज के भय से सच को झूठ ठहराने की मजबूरी प्रदर्शित करें।

जब समाज की संरचना बिखर रही हो, आर्थिक दृष्टि से समग्रता में समाज पिछड़ रहा हो, घर-घर में कलह उत्पन्न हो रहा हो ऐसे में समाज की पुनर्संरचना की पहल न करके आत्ममुग्धता में जीना या किसी चमत्कार की आशा में बैठे रहना किसी भी तरह चेतनासंपन्न, ज्ञानी समाज का लक्षण नहीं है। आज जरूरी है कि नये सिरे से मारवाड़ी समाज की संरचना पर गंभीर चिन्तन किया जाय एवं इक्कीसवीं सदी की चुनौतियों के मद्देनजर नये प्रकार से समाज की संरचना को ढाला जाय तभी भविष्य में यह समाज अपना गौरव बचाये रख सकता है।

अंत में 'मजाज' की इन पंक्तियों के साथ अपनी बात खत्म करना चाहूंगा कि –

मुझे आज साहिल पे रोने भी दो
कि तूफाँ में मुस्कुराना भी है,
जमाने से आगे तो बढ़िये 'मजाज'
जमाने को आगे बढ़ाना भी है।

●●●

७० साल के साये में

✍ नन्दकिशोर जालान, पूर्व सभापति, अ.भा.मारवाड़ी सम्मेलन

सम्मेलन की स्थापना हुए आज ७० वर्ष पूरे हो गए हैं- दिसम्बर १९३५ से दिसम्बर २००५। विगत ७० वर्षों में मारवाड़ी समाज और देश के राजनीतिक, धार्मिक, शैक्षणिक, वित्तीय आदि-आदि क्षेत्रों में आये परिवर्तन को उस समय का व्यक्ति सोच भी नहीं सकता था कि इन वर्षों में सम्मेलन की भूमिका भी कई अंशों में महत्वपूर्ण रहेगी।

इंडिया एक्ट आफ १९३५ के अन्तर्गत ब्रिटिश सरकार ने प्रादेशिक लेजीसलेटिव एसेम्बली की स्थापना और उसके सदस्यों का चुनाव स्वीकार किया था। लेकिन देश में ६०० से अधिक रजवाड़ों के व्यक्ति जो ब्रिटिश इंडिया में रहते थे, उनको वोटाधिकार से वंचित रखने का प्रस्ताव रखा था। अपना समाज देश के कोने-कोने में बसा था, यह प्रावधान इसके लिए घातक था। समाज के कुछ विशिष्ट व्यक्तियों ने इसके दुष्परिणामों को समझा और अनेकों ने जिनमें श्री ईश्वरदास जालान, श्री देवीप्रसाद खेतान एवं श्री घनश्यामदास बिड़ला आदि थे, उन्होंने भरसक प्रयत्न किया और इस प्रावधान को हटाया गया। ब्रिटिश सरकार के कागजों में उल्लेख है- ''मारवाड़ी समाज की दिक्कतों को देखते हुए यह नियम हटाया जा रहा है।''

सम्मेलन की स्थापना के दिन से इसका प्रमुख उद्देश्य रहा- ''देश के राजनीतिक अधिकारों में अपने समाज को किसी तरह की बाधा न आने दी जाए।''

महात्मा गांधी के नेतृत्व में स्वतंत्रता की लड़ाई दिनों दिन जोर पकड़ रही थी। समाज ने उसे आर्थिक, मानसिक, व्यक्तिगत सहयोग देने में कोई कमी नहीं रखी। सम्मेलन की हीरक जयन्ती में पधारे देश के तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. शंकरदयाल शर्मा के इन शब्दों से अधिक इस बात की पुष्टि कौन करेगा-

''स्वतंत्रता आन्दोलन के समय अनेक मारवाड़ी युवकों ने क्रांतिकारियों की मदद की थी। अरविंद घोष, शरतचंद्र बोस, अतुलनाथ तथा अवधबिहारी आदि को मारवाड़ियों से आवश्यक सहायता मिलती थी। जेल की यात्रा करने में मारवाड़ी महिलाएं भी पीछे नहीं रहीं। भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान हजारों पुरुषों के अलावा कुसुम गुप्ता, जानकी देवी बजाज, इंदुमती गोयनका, कमला देवी, सरस्वती गाड़ोदिया जैसे अनेक नाम हैं। बंगाल के प्रमुख अधिकारी श्री ए.एच. गजनवी ने २७ अगस्त, १९३० को वायसराय को लिखा था- ''यदि महात्मा गांधी के आंदोलन से मारवाड़ी व्यापारियों को अलग कर दिया जाए तो नब्बे प्रतिशत आंदोलन अपने आप समाप्त हो सकता है।''

सम्मेलन ने सामाजिक सुधारों में सशक्त भूमिका निभाई। धर्म के नाम पर अनेक घातक रुढ़ियां वर्तमान थी। सन् १९५० से १९७८ तक कलकत्ता ही नहीं बल्कि पूर्वी भाग एवं देश के अन्य भागों में सम्मेलन ने सशक्त जन आन्दोलन किया। समय का सहयोग भी मिला और पर्दा प्रथा, छोटी-छोटी उम्र की लड़कियों की शादियां वृद्धों के साथ करना, लड़कियों को पढ़ाना धार्मिक गुनाह, दहेज और दिखावा आदि विकृतियों को समाज ने तिलांजलि दी। अपने आंदोलनों में सम्मेलन ने करोड़पतियों और अरबपतियों को भी बाद नहीं दिया था। इस उपलब्धि का इससे बड़ा प्रमाण क्या हो सकता है कि आज समाज की सुशिक्षित लड़कियां भी उच्चतम शिक्षा के लिए विदेश जा रही हैं और बड़े-बड़े संस्थानों में उच्च पदों पर नियुक्त की जा रही हैं।

सम्मेलन की एक महत्वपूर्ण भूमिका रही है कि देश के किसी भी भाग में समाज के व्यक्तियों के विरुद्ध हमले, लूट-पाट आदि की सूचना प्राप्त होते ही उच्चतम अधिकारियों से सम्पर्क कर अविलम्ब उन घटनाओं को रोकने एवं सम्मेलन के पदाधिकारियों द्वारा उस स्थान पर जाकर स्थिति को काबू में लाना और सम्भव हो तो राहत पहुंचाना। पश्चिम बंगाल में सिलीगुड़ी, असम में तिनसुकिया डिब्रूगढ़, मणिपुर की राजधानी इम्फाल में जहां कर्फ्यू के बीच मुख्यमंत्री के साथ सम्मेलन के पदाधिकारी घर-घर घूमे थे, पश्चिम उड़ीसा हुई घटना संबंधी एक मंत्री को मंत्री पद से हटवाया गया था आ घटनाएं इसके ज्वलंत उदाहरण हैं।

जिस प्रकार की धार्मिक रूढ़िवादिता आज से ७० वर्षों पहले कुछ मंदिरों को छोड़कर बाकी कहीं भी दृष्टिगत नहीं हो रही है। आ धार्मिक गुरु, पुरोहित आदि सभी इस परिवर्तन को स्वीकारते हैं परिवर्तित स्थिति में अपना सब प्रकार का सहयोग देते हैं। धार्मिक में जो रूढ़ मान्यताएं थीं वे प्रायः शेष हो गई हैं। एकाध को छोड़ प्रायः सभी मंदिरों में प्रवेश जन-साधारण के लिए खुल गया दलित एवं अनुसूचित जातियों पर जो धार्मिक प्रतिबन्ध थे वे अधिक गायब हो गए हैं या होते जा रहे हैं। सम्मेलन से सम्बन्धित कई व्यो इस दिशा में आधुनिक शिक्षा एवं धर्म प्रचार के माध्यम से एक चेतना के उद्गम का प्रबंध कर रहे हैं। सम्मेलन के पदाधिकारियों ने गौहाटी में समाज के हरिजनों के साथ बैठकर भोजन किया एवं उन लिए एक बड़ा कमरा बनवाया, जिसमें बाद में और भी कमरे ज गए। लेकिन धार्मिक परिवर्तन का क्रम पूर्णतः नहीं रुका है, जिस आवश्यकता को नकारा नहीं जा सकता। इस ओर पिछले वर्षों में कु राज्य सरकारों ने ध्यान देना प्रारम्भ किया है, जो एक उत्साहवर्ध कदम दिखता है।

समाज और देश की वित्तीय स्थिति यानी आर्थिक प्रगति पर न डालें तो जो प्रगति समाज ने १९७० तक की थी भारत सरकार एवं कु राज्य सरकारों द्वारा राष्ट्रीयकरण की नीति के कारण बाधा उत्पन्न थी। इसका एक उदाहरण डॉलर की कीमत जो ६ से ८ रुपये से बढ़ ४५ से ५० रुपये तक हो जाना एवं अन्य विदेशी मुद्राओं के परिप्रेक्ष्य भी वही हाल होना अपने आप में सबसे बड़ा उदाहरण है। इस दि में सन् १९९० के बाद से अब तक किए गए बदलाव के कारण देश विभिन्न भागों में प्रगति के साथ-साथ अपना समाज भी आर्थिक में कदम-दर-कदम आगे बढ़ता जा रहा है। देश में नये कल-कारख लगाने एवं व्यापार के विभिन्न तरीकों के माध्यम से बदली सहभागि में अपना योगदान दे रहा है तो साथ ही साथ आज विदेशों में प्रायः दुनिया के अनेक देशों में कल-कारखानों का अधिग्रहण क के साथ ही नई शृंखलाएं जोड़ने में भी संलग्न है। इसके अलावा कु विदेशों में तो समाज के एवं अन्य उद्योगपतियों को आज उनके देश जाकर नये कल-कारखाने लगाने के आमंत्रण दिनों-दिन दिए जा हैं।

विगत ७० वर्षों के इतिहास की एक एक शृंखला अपने आप अभिभूत कर देने वाली दिखती है। समाज में हुए परिवर्तन ने सम का सभी क्षेत्रों में एक नया रूपक खड़ा किया है।

सम्मेलन ने पिछले ७० वर्षों में जिन स्थितियों अ परिस्थितियों के परिष्करण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, दृष्टि से आज और आने वाले कल के प्रश्न के विषय में एक चिन्तन और नई दृष्टि की महत्ता दिनों-दिन बढ़ती जा रही है

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के ७१वें स्थापना दिवस पर

चुनौतियों से रुबरु होने की मानसिकता गढ़नी है

भानीराम सुरेका, राष्ट्रीय महामंत्री, अ.भा.मारवाड़ी सम्मेलन

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन अपनी स्थापना के ७० वर्ष पूरे कर ७१वें वर्ष में प्रवेश कर रहा है। सम्मेलन से जुड़े प्रत्येक सामाजिक कार्यकर्ता व समाज के सभी लोगों के लिए यह गर्व का विषय है। किसी सामाजिक उसमें भी वैचारिक संस्था के लिए इतना लंबा सफर कोई आसान काम नहीं है। आज जब विचारों के खत्म होने पर विश्वव्यापी बहस छिड़ी हुई है, संस्कृति और सभ्यता के पतन की चर्चा हो रही है वैसे में तो ऐसी संस्था का टिके रहना और भी आश्चर्य का विषय है। लेकिन सम्मेलन आज भी अपनी प्रासंगिकता बनाए हुए है क्योंकि समयानुसार विचारों के सामयिक पक्ष पर सम्मेलन नेतृत्व ने चिन्तन किया है और समाज को ऐसे ही दिशानिर्देश दिये हैं जो मान्य हो सकें।

सम्मेलन की स्थापना १९३५ में हुई थी, जब भारत अंग्रेजी शासन का गुलाम था। तब से अब तक न जाने कितने सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनीतिक परिवर्तन हुए हैं पर सम्मेलन सदा प्रवासी मारवाड़ियों के बीच लोकप्रिय रहा है। प्रवासी राजे रजवाड़ों को मताधिकार दिलाने से लेकर प्रांतीय और केन्द्रीय राजनीति में मारवाड़ियों की महत्वपूर्ण भूमिका सुनिश्चित करने की दिशा में सम्मेलन गतिशील रहा है। समाज सुधार, शिक्षा, सुरक्षा एवं समरसता सम्मेलन की गतिविधियों का मुख्य विन्दु रहा है।

आज मारवाड़ी समाज का जो स्वरूप है उसकी संरचना में सम्मेलन के वैचारिक आन्दोलनों का बहुत बड़ा हाथ है। बीसवीं सदी के प्रारंभ में कालीकृष्ण खेतान जब उच्चशिक्षा के लिए विलायत गये थे तो देश आकर उन्हें सामाजिक बहिष्कार का दंश झेलना पड़ा था लेकिन आज विदेशों में बस चुके मारवाड़ियों की संख्या लाखों में है। आये दिन लोग विदेश यात्राएं करते हैं। अपने बच्चों को विदेशों में पढ़ाते हैं। अब यह हैसियत एवं प्रतिष्ठा का विषय बन चुका है। सम्मेलन ने इस मानसिकता के निर्माण में लंबी वैचारिक लड़ाई लड़ी। अब तो सम्मेलन की शाखाएं विदेशों में भी खुल रही हैं।

आज मारवाड़ी समाज में महिलाओं के लिए सामान्य परदा की बात होती है क्योंकि आधुनिकता की दौड़ में वे सीमाहीन उन्मुक्तता पर उतर रही हैं पर एक समय ऐसा भी था जब घूंघट काढ़ने की इतनी कड़ाई थी कि जीवन की रंगीनीयत का अहसास कर पाना मुश्किल था। सम्मेलन के कार्यकर्ताओं की टोली ने मार खाकर, उलाहना सहकर समाज से उस प्रथा को खत्म करने में सफलता पाई थी।

समाज में जड़ पकड़ चुकी रूढ़ियों, कुरीतियों, कुसंस्कारों, अंधविश्वासों यथा, बाल विवाह, मृतक बिरादरी भाज, अशिक्षा के निर्मूलन, विधवा विवाह के प्रोत्साहन में सम्मेलन के माध्यम से किये गये आन्दोलन मारवाड़ी समाज के इतिहास में गौरवपूर्ण अध्याय हैं।

सम्मेलन के पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं की अथक परिश्रम और निरंतर आन्दोलन की वजह से ही स्वातंत्र्योत्तर भारत में मारवाड़ी समाज प्रगतिशील समाज के रूप में चिन्हित हुआ। हालांकि प्रगतिशीलता का बीजारोपण उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध में बंगाल में हुए नवजागरण के दौरान ही हुआ था पर उसका विकास स्वातंत्रोत्तर भारत में देखने को मिला। मारवाड़ी समाज में शिक्षा के प्रति आकर्षण बढ़ा, सिर्फ व्यवसाय पर आश्रित न होकर अन्य क्षेत्रों में भागीदारी निभाने की मानसिकता बनी, रूढ़ियों कुरीतियों पर एक हद तक लगाम कस पाना संभव हुआ।

आज मारवाड़ी समाज का विस्तार पूरी दुनिया में है। जीवन का ऐसा कोई क्षेत्र नहीं है जिसमें मारवाड़ी समाज के लोगों की उपस्थिति नहीं हो। व्यवसाय के अतिरिक्त शिक्षा, चिकित्सा, कला, राजनीति, कानून, पेशेवर व्यवसाय यहां तक कि सूचना तकनीक के क्षेत्र में भी मारवाड़ियों की उपस्थिति सम्मानजनक है।

समग्रता में देखें तो पारंपरिक अवधारणा के विपरीत आज मारवाड़ी समाज नये-नये क्षेत्रों में प्रवेश कर रहा है और अपनी लगन, मेहनत व बुद्धि से सफलता भी हासिल कर रहा है, जो गौरव का विषय है, किन्तु इन सबके बावजूद कुछ ऐसी चीजें हैं जिन पर विचार आवश्यक है ताकि भविष्य में इस समाज का अवस्थान सम्मानजनक हो।

मारवाड़ी समाज भी अन्य समाजों की तरह है अत: अच्छाइयों और बुराइयों का प्रभाव भी उसमें वैसे ही होता है जैसा कि अन्य समाजों में। सम्प्रति इस समाज में कुछ विकृतियां नये सिरे से शुरू हुई हैं एवं दिनोंदिन बढ़ रही हैं। इन विकृतियों के मूल में तेजी से बदल रही संस्कृति है जो सूचना तकनीक के विकास के साथ-साथ दूरदर्शन, इंटरनेट आदि के माध्यम से हमारे घरों में घुस चुकी हैं। इस नई संस्कृति का एकमात्र ध्येय है - खाओ, पीओ, मौज करो - की अवधारणा का विकास। इसमें आत्मीयता, मानवीयता, सामाजिकता, संवेदनात्मकता जैसी भावनाओं के लिए कोई जगह नहीं (जबकि यही मारवाड़ी समाज की धरोहर रही है, सामूहिकता की जगह व्यक्तिगत विकास पर जोर दिया जा रहा है एवं लोग तेजी से इस ओर आकृष्ट हो रहे हैं। परिवार टूट रहे हैं, भाई-भाई अलग हो रहे हैं, बाप-बेटे में नहीं निभ रही। आधुनिकता ने पारिवारिकता पर भी कुठाराघात कर दिया है।

जीवन शैली को विशिष्ट बनाने एवं प्रतियोगिता में टिके रहने के लिए रात-दिन एक करने की स्थिति ने परिवार और समाज में संवादहीनता को जन्म दिया है। यह संवादहीनता इतनी प्रबल है कि चाहकर भी कोई दूसरे की स्थिति पर चिन्तन नहीं करना चाहता। ऐसे में पारिवारिकता, सामाजिकता और राष्ट्रीयता सबके समक्ष एक प्रश्नचिन्ह लग जाता है।

आज संकट यह नहीं है कि समस्या का समाधान कैसे होगा बल्कि उससे भी बड़ा संकट यह है कि समाधान की पहल कौन करेगा ? आज तो समाज के लोगों के लिए मुझे कैलाश गौतम की ये पंक्तियां अधिक उपयुक्त जान पड़ती हैं-

ममता से / करुणा से / नेह से दुलार से
घाव जहां भी देखो / सहलाओ प्यार से
भटके ना / राहगीर कोई / अंधियारे में
दीये की तरह जलो / घर के / गलियारे में
हाथ बनो, पैर बनो / राह बनो जंगल में
प्यासों की प्यास हरो / पानी की धार से
नहरों में नाव बनो, सेतु बनो दलदल में

पर क्या लोग इन भावनाओं को समझने की चेष्टा करेंगे ? मेरा मन आशावादी है तो इसलिए कि मारवाड़ी समाज आज भी सामाजिक-सांस्कृतिक-धार्मिक आयोजनों का सूत्रधार है एवं इन क्षेत्रों में करोड़ों का दान प्रतिवर्ष इस समाज के लोग देते हैं। इसलिए मन के किसी कोने में संवेदना अब भी बची है जिसे संबर्द्धित, विकसित करने की जरूरत है। जरूरत है समर्पित, सामाजिक कार्यकर्ताओं को आगे बढ़ाने की, सामाजिक कार्यों को प्रचारित-प्रसारित करने की।

एक दौर था जब कोलकाता से प्रकाशित 'दैनिक विश्वमित्र' मारवाड़ी समाज के सुधार आन्दोलनों का पृष्ठपोषक था। सामाजिक कार्यकर्ताओं को प्रोत्साहित करना एवं सामाजिक कल्याण के मुद्दों पर मुखर होकर उत्साह पैदा करना इस अखबार की खासियत थी। दुर्भाग्य से यह क्रम अभी टूटा हुआ है जिसे शुरू करने की जरूरत है।

इस वर्ष स्थापना दिवस पर हम मारवाड़ी समाज के एक सिरमौर, प्रतिष्ठित उद्योगपति पद्मभूषण श्री हरिशंकर जी सिंघानिया का अभिनन्दन कर रहे हैं। सौभाग्य से श्री सिंघानिया सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष रह चुके हैं एवं मुझे उनकी कार्यकारिणी में उनके साथ काम करने का मौका मिल चुका है।

श्री सिंघानिया के अभिनन्दन के माध्यम से हम यह संदेश देना चाहते हैं कि मारवाड़ी समाज जिन विशेषताओं के बूते राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय क्षितिज पर प्रतिष्ठित हुआ उसकी रक्षा हर कीमत पर होनी चाहिए एवं नई व्यवस्था में नई चुनौतियों से रूबरू होने की मानसिकता गढ़ने के लिए हम सबको एक नए विश्वास, नई ऊर्जा एवं नई संगठनात्मक शक्ति के साथ आगे बढ़ना चाहिए ताकि आने वाला कल हमारे लिए आज से भी अधिक गौरवपूर्ण हो।

सम्मेलन का केन्द्रीय नेतृत्व वैचारिक दिशानिर्देश देने का काम करता है पर उसे कार्यान्वित करने का काम देश भर में सक्रिय सम्मेलन की प्रांतीय व जिला स्तरीय शाखाएं करती हैं, जो वास्तविक रूप में सम्मेलन की आत्मा है। इस अवसर पर हम अपने सभी प्रांतीय व जिलास्तरीय शाखाओं के सदस्यों से अपेक्षा रखते हैं कि वे इसी तरह समाज के व्यापक हित में काम करते रहेंगे।●

Foods Fats & Fertilisers Limited

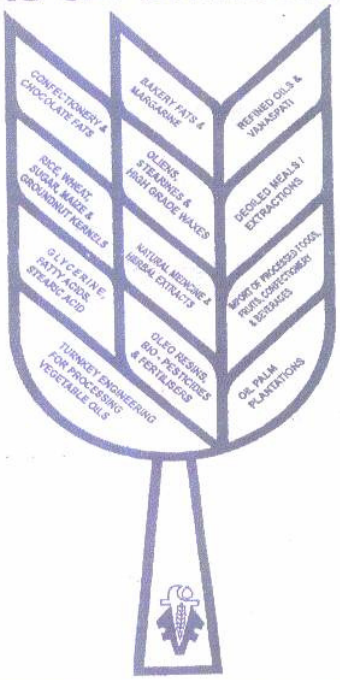

INTERLEAVING INDIA'S PROGRESS

From contract faming of oil palm, processing Indian and exotic oil seeds into wide range of products like refined oils, vanaspati, bakery fats, confectinery & chocolate fats, margarine - fatty acids, stearic acids, glycerine, oilens & stearines, research products like oleo resins, high grade waxes, bio-pesticides & fertilisers, natural medicine & herbal extracts, international trading in commodities, import and marketing of processed foods, fruits, confectionery & beverages, etc. to turnkey engineering for vegetables oil processing, the FFF tree grows & grows to offer varied products for industrial and consumer use. Growing more leaves for building a more prosperous india.

FOODS FATS & FERTILISERS LIMITED
P.B. No. 759, Fountain Plaza,
7th Floor, Pantheon Road,
Egmore, Chennai - 600 008
Telephone : 28263121 (5 Lines)
E-Mail : sbg@fff.co.in
Fax : 91-44-28263022
Website : www.fff.co.in

● TADEPALLIGUDEM ● MUMBAI
● HYDERABAD ● KAKINADA
● BARODA ● KOLKATA ● DELHI
● NAGAPATTINAM ● KOCHI

EXPORT HOUSE
RECOGNISED BY GOVT. OF INDIA

'विश्वमित्र से साभार'

संस्कार छिपता नहीं

✍ प्रकाश चन्द्र अग्रवाल, सम्पादक 'दैनिक विश्वमित्र'

संस्कार जन्मजात होता है। जैसा पारिवारिक परिवेश वैसा ही संस्कार। वैसी ही आदतें। रहन-सहन बोलचाल और सामाजिक व्यवहार मनुष्य के संस्कार के अनुसार ही होते हैं। यह संस्कार बहुत कम उम्र से ही धीरे-धीरे जड़ जमाने लगता है। दिनों-दिन मजबूत होता जाता है। जीवन की पूरी दिनचर्या इस संस्कार पर आधारित होती है।

यही कारण है कि अलग-अलग परिवार, अलग-अलग संप्रदाय वर्ग और संप्रदाय के संस्कार अलग-अलग होते हैं। कोई बचपन से ही धर्म-कर्म, पूजा-पाठ में रुचि लेता है। कोई हिंसा को पसन्द करने लगता है। लड़ाई-झगड़ा, मारपीट में बढ़-चढ़ कर शामिल होता है, तो कोई जुआड़ी और कोई शराबी बनता है।

जीवन के आरंभ में जो संस्कार बनता है वह अमिट होता है। उसे बदलना या छिपाना आसान नहीं है। बदला तो जा ही नहीं है। किसी भी तरह से उसे परिवर्तित नहीं किया जा सकता। कई बार ऐसा होते हुए देखा गया है कि अपने जन्मार्जित संस्कार को छिपाने का प्रयास करने में अपमानित होना पड़ गया। तिरस्कार झेलना पड़ गया है। भेद खुल जाने पर प्रसन्नता गम में या गम खुशी में तब्दील हो जाता है। ऐसे मामलों में यदि किसी प्रकार का षड्यंत्र रचा जाता है तो भंडाफोड़ होने पर षड्यंत्रकारी को दंडित भी होना पड़ता है।

प्रजापालन में तत्पर और कुशल प्रशासन से सभी को संतुष्ट रखने वाले एक राजा सुख शांति और ऐश्वर्य के सारे साधन मौजूद रहने पर भी संतानहीन होने के कारण चिन्ताग्रस्त रहता था। राजा बराबर उदास दिखाई पड़ता था। कर्तव्य का पालन अनिवार्य था। सभी काम निपटाता, प्रजा की शिकायतें सुनता और दु:ख दूर करने का प्रयास करता। चारों ओर जय-जयकार की ध्वनि सुनाई पड़ती फिर भी उदासी बनी ही रहती थी।

ऐसे ही दिन बीतते जा रहे थे कि एक दिन भरे दरबार में बैठे राजा को यह संदेश प्राप्त हुआ कि रानी प्रसूतावस्था में है। यह खबर मिलते ही नाच-गाना का आयोजन शुरू हुआ। खुशियां मनाई जाने लगीं, किन्तु संयोग ऐसा उपस्थित हुआ कि उसी समय उसी गांव की एक हरिजन महिला भी प्रसूतावस्था में थी। जिस प्रसूति गृह में रानी भर्ती थीं उसी में वह हरिजन महिला भी भर्ती हो गई। दैव योग से हरिजन महिला का बच्चा गोरे रंग का और रानी का बच्चा श्याम वर्ण का हुआ। यह देखकर अस्पताल के कर्मचारियों ने सोचा कि राजा का लड़का गोरा होना चाहिये। इसलिए बच्चों को नहाने और कपड़े बदलने के समय ही दोनों बच्चों को इधर-उधर कर दिया। गोरा लड़का राजा के घर में बढ़ने लगा और सांवला हरिजन के घर में। इसी तरह कुछ दिन बीत गए। राजघराने में पल रहा बच्चा जब तीन वर्ष का हुआ तो एक दिन उसे अच्छे कपड़े पहना कर राजदरबार में लाया गया। सभी दरबारी उसको दुलारने पुचकारने लगे। काफी भीड़ थी। सभी हंसी-खुशी के माहौल में इधर-उधर आना जाना कर रहे थे। इसी बीच बच्चा वहां नहीं दिखाई पड़ा। बबुआ जी कहां, बबुआ जी कहां की चीख-पुकार होने लगी। सभी इधर-उधर दौड़-धूप करने लगे। किन्तु अचानक देखा कि जहां पर दरबारियों के जूते-चप्पल पड़े थे बच्चा वहीं पर जूते-चप्पलों से उलझ रहा था। उसे वहां से उठाकर लाया गया और बात आई-गई हो गई। उसके दूसरे ही दिन राजा साहब घोड़े पर सवार होकर घूमने निकले। हरिजन बस्ती के निकट एक तालाब के टीले पर कुछ बच्चों को खेलते हुए देख कर घोड़ा रोक दिया। एक लड़का टीले पर बैठा था और अन्य लड़के उसके सामने खड़े फैसले का इन्तजार कर रहे थे। बच्चे ने फैसला सुनाया एक बच्चा सिपाही बनेगा। दो चोर बनेंगे। एक दरोगा और एक कोतवाल बनेगा। मैं राजा बनूंगा। जो चोरों को पकड़ कर मुझे प्रथम सूचना देगा उसे तरक्की मिलेगी। दरोगा चोरों को पकड़कर टीले के पास ले आया। बालक ने जो फैसला सुनाया उसे सुनकर राजा चकित हो गए। उसने कोतवाल को नौकरी से हटा दिया था। घर आने पर दरबारियों ने बबुआ के जूते चप्पलों से उलझने की खबर राजा को दी। राजा के मन में संदेह हुआ। छानबीन करवाने पर सारे षड्यंत्र का पर्दाफाश हो गया। उन्हें अपना सही लड़का वही टीले पर बैठकर फैसला सुनाने वाला मिल गया। हरिजन को राजा के घर में पल रहा बच्चा मिला। यह संस्कार की ही करामात है, जो अत्यंत चतुराई से रचे षड्यंत्र को भी समाप्त कर देता है।●

सामाजिक वैमनस्यता कारण व निवारण

✍ चिरंजीलाल अग्रवाल

वैमनस्यता सामाजिक, पारिवारिक या व्यक्तिगत ही क्यों न हो, आखिर वैमनस्यता अच्छी चीज नहीं है यह जानते हुए भी यह समाज में विद्यमान रहती आई है। इसके कारण एक नहीं अनेक होते है और कभी-कभी तो अकारण भी ऐसी नौबत आती है। हम विद्यालय या गुरू के यहां पढ़ते हैं। गुरु निश्चित रूप से सब छात्रों को एक दृष्टि से देखते हुए पढ़ाते हैं। जो उनके आदेशों का कर्तव्यनिष्ठ होकर पालन करता है व दत्तचित्त होकर पढ़ता है। वह कक्षा में सबसे अग्रणी रहता है। उसे शिक्षक द्वारा विशेष स्नेह करना स्वाभाविक है। दूसरे विद्यार्थी अपने में सुधार लाने की बजाए उस छात्र से ईर्ष्या उसमें दोष साथ ही गुरु को भी पक्षपात की दृष्टि से देखने लगते हैं। आगे चलकर यह भावना बढ़कर वैमनस्यता तथा शत्रुत्व के रूप में परिणीत हो जाती है एवं विनाशकत पहुंच जाती है। इसका उदाहरण महाभारत का युद्ध ही लीजिए। दूर्योधन को भीम एवं खासकर अर्जुन से गुरु द्रोणाचार्य से शस्त्र विद्या सीखने के समय से ही ईर्ष्या हो गई थी एवं बाद में वह वैमनस्यता तक पहुंची। अर्जुन धर्नुविद्या में अति निपुण था एवं अन्य पांडव तथा कौरवों से बहुत ही अग्रपंथी में था. गुरु द्रोणाचार्य उसे बहुत चाहते थे, उसकी परीक्षा भी लेते थे एवं प्रशंसा भी करते थे। यह अकारण ही वैमनस्यता का कारण बन गया एवं बढ़ते-बढ़ते दुश्मनी होकर महाभारत की भयंकर लड़ाई में परिणीत हुआ एवं सर्वनाश की कारक बना।

दूसरी तरफ हम रामायण की तरफ नजर करें। महाबली रावण को इतना अहंकार था कि मेरे लिए असंभव कुछ भी नहीं है। रावण सीता स्वयंवर में शिवधनुष तोड़कर सीताजी के प्राप्त करना चाहता था। परन्तु धनुष तोड़ सकना तो दूर उठा तक नहीं पाया एवं ताकत लगाते-लगाते वहीं गिर पड़ा। उसने सीताजी को प्राप्त करनेकी मानसिकता बना ली थी। परन्तु सफल न हो सका। भगवान श्रीराम ने बहुत सहज भाव से विनम्र होकर धनुष की पूजा एवं परिक्रमा कर प्रणाम किया एवं धनुष भंग करने के पश्चात राम सीता विवाह संपन्न हुआ आदि आदि। मां सीता को प्राप्त करने की असफलता के कारण से अहंकारी रावण की भगवान श्रीराम से वैमनस्यता एवं शत्रुता हो गई। इसी वजह से उसने सीताहरण किया आखिरकार मर्यादा पुरुष भगवान श्रीराम से युद्ध हुआ एवं रावण का विनास हुआ।

व्यक्ति व्यक्ति के स्वभाव भिन्न - भिन्न होते हैं। कुछ लोग गुणवान होते हैं, उन्हें दूसरे भाई की उन्नति, सफलता, संपन्नता देखकर खुशी होती है एवं उनकी प्रशंसा करते हैं । कुछ व्यक्ति ईर्ष्यालु स्वभाव होने के कारण दूसरे की उन्नति को देखकर सहन नहीं कर पाते। ऐसे व्यक्ति दूसरा व्यक्ति उन्नति, सफलता हासिल करे यह नहीं चाहते हैं। साथ ही अपने से अधिक संपन्न न हो सके। इस निम्न भावना से ग्रसित रहते हैं। दूसरो को नीचा दिखाना, उसको कोसना, उसकी शिकायत करना यहां तक कि कैसे व्यक्ति बर्बाद हो सके। इस तुच्छ सोच तक पहुंच जाते हैं। अपने तो तनाव ग्रस्त रहते ही हैं दूसरों को भी तकलीफ देते हैं। आखिर सहने की सीमा होती है ऐसी परिस्थिति में आपस में वैमनस्यता पैदा होती है। फिर तो सिलसिला जारी हो जाता है एक दूसरे को बेइज्जत करना, बोलचाल बंद होना, अनर्गल प्रचार-प्रसार करना आदि आदि। अच्छे काम को बुरा बताना, धार्मिक तथा सामाजिक कामों में असहयोग करना चुगली करना कुछ भी बाकी नहीं रहता है। ऐसी स्थिति में समाज का भी बड़ा नुकसान होता है, समाज की बदनामी होती है। खासकर हमलोगों का समाज तो व्यवसायी समाज है। हमलोग छोटी सी बात को भी शिखर तक पहुंचा देते हैं। कोई भी जनोपयोगी निर्माण कार्य नहीं हो पाते उनमें एकता के अभाव में बाधा अड़चन पैदा हो जाती है. चाहे धार्मिक अनुष्ठान हो सामाजिक सेवा का कार्य हो अथवा कोई भी कल्याणकारी योजना हो आगे नहीं बढ़ पाती । स्कूल, अस्पताल, अतिथि भवन आदि का निर्माण एवं संचालन आपस के सहयोग एवं एकता के बिना संभव नहीं है। ऐसा न हो सकने के कारण हम सेवा से वंचित रह जाते हैं। हमारी राष्ट्र के प्रति उद्योग व्यवसाय के अलावा भी जिम्मेदारी होती है वह अपूर्ण रह जाती है। कभी-कभी तो वैमनस्यता की बात यहां तक बढ़ जाती है कि दो समाज भी इसके प्रभाव में आ जाते हैं जो सर्वथा अच्छी बात नहीं है।

दूसरी तरफ समाज में आदरणीय, पूज्यनीय जो लोग आदर्श मूल्य एवं मान्यताओं को अपने जीवन का आधार मानते हैं, वैसे ही व्यक्तियों के कारण समाज आगे बढ़ता आया है आगे भी यह सिलसिला बढ़ता ही रहेगा। व्यक्ति से समाज बनता है अतः व्यक्ति समाज से अलग अपना अस्तित्व नहीं रख सकता है। सभी का भला प्रेम से रहने में ही है। हम अपने अहंकार को छोड़ दें,दूसरों की उन्नति में सफलता में भी अपनी खुशी भी बांटे, चाहे वह व्यवसाय हो, शिक्षा क्षेत्र हो, राजनीतिक क्षेत्र हो या अन्य कोई भी क्षेत्र हो। सोच बड़ा करें छोटा सोचना बंद करेंगे तभी बड़ा बन सकेंगे।

आज का युग बहुत बदल गया है। संचार माध्यम ने दुनिया को एक तरफ एकदम नजदीक ला दिया है तो दूसरी तरफ इनफारमेशन टेक्नालॉजी ने हमको इतना व्यस्त बना दिया है कि दूसरों के बारे में खराब सोचने का समय ही कहां मिल पाता है, फिर भी जबरदस्ती उस तरफ हम क्यों झांके। वैमनस्यता निराकरण का एक ही उपाय है अपने स्वभाव, सोच को बदले, ईर्ष्या खींचातानी के बजाय प्रेम एवं दूसरों को भले की सोच बनाए। कुछ समय निकालकर आजकल टीवी चैनल पर बड़े -बड़े संत महात्माओं के प्रवचन आते हैं इनको श्रवण कर अपने में परिवर्तन लाने की कोशिश करे तो अवश्य ही समाज का भला होगा। वैमनस्यता को भूल जाए यही आज के युग की मांग है। हवा के साथ चलें इसी में हम सबका कल्याण है। ●

हमारे पूर्वज - राजस्थानी वैश्य

✍ बालकृष्ण गोयनका, चेन्नई, उपाध्यक्ष, अ.भा. मारवाड़ी सम्मेलन

राजस्थानी व्यापारी वर्ग अपनी उद्यमशीलता, व्यापार कुशलता, ईमानदारी, साहस एवं जोखिम उठाने की प्रवृत्ति के कारण उनकी सर्वश्रेष्ठ पहचान रही। हमारे पूर्वज प्रकृति के थपेड़ों को झेलते हुए जुझारू बने। 'कुछ करने' की भावना से जहां गये, वहां की माटी, वहां के लोगों को अपना समझा और उनके समरस हो गये। अपना साहित्य व संस्कृति को अक्षुण्ण रखते हुए क्षेत्र विशेष की संस्कृति को भी आत्मसात् किया। वहां की जरूरतों के मुताबिक उद्योग स्थापित किए व व्यापार धन्धों का विस्तार किया। उद्योग व व्यापार के फलने-फूलने से उस क्षेत्र का विकास हुआ। लोगों को रोजगार मिले और बेरोजगारी की समस्या दूर करने में सरकार के सहायक हुए। लोगों का जीवन स्तर ऊंचा उठा, उनकी क्रयशक्ति में वृद्धि हुई।

उनमें कुछ विशेषताएं थी, विशिष्टताएं थी इससे वे जहां भी गये, सफल हुए। वे क्या विशिष्टताएं थीं ?

१. व्यवसाय एवं उद्योग में दक्षता : जहां भी गये वहां की आर्थिक और औद्योगिक विकास की महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। मीठी बोली और मधुर व्यवहार के गुणों में सफल रहे।

२. सरलता, सादगी एवं मितव्यता : सीधा-सादा पहरावा, बड़े-बड़े सेठ भी धोती अंगरखी या कुर्ता, सामान्य वेश भूषा। एक सामान्य सी गद्दी, जहां बैठकर लाखों का व्यापार करते थे। कोई दिखावा, तड़क-भड़क उनमें नहीं थी। 'मितव्यता' को कंजूसी नहीं मान लेवें - उनका अपना सादा जीवन था, परन्तु दान सेवा में सबसे आगे रहते थे। साधारण जीवन जीते थे, लेकिन उनके विचार उच्च थे। एक कहावत प्रचलित है -

''मोटा पहना, मोटा खाया, जो बचा, व्यापार उद्योग एवं समाज के काम आया।''

३. धार्मिक प्रवृत्ति : जीवन में सात्विकता, सदाचार एवं नैतिकता का जीवन अपने स्थान में एवं धार्मिक स्थानों में देवालय, धर्मशाला, स्कूल आदि का निर्माण करना। वे मानते थे आदमी का आचरण शुद्ध हो, सात्विक भोजन और जीवन, संतुलित और व्यवस्थित हो तो जीवन की गाड़ी बहुत अच्छी चलती है।

४. धार्मिक सहिष्णुता : सभी धर्म सम्प्रदाय में समभाव, निरपेक्षता का साकार रूप।

५. समरसता एवं सहिष्णुता : सबके प्रति स्नेह एवं भ्रातृत्व की भावना, वहां के निवासियों में समरस हो जाना। उनसे तारतम्य स्थापित कर लेने की विशेषता / मारवाड़ी व्यापारी एक राज्य का नहीं, सारे हिन्दुस्तान का वासी है।

६. साहस एवं जोखिम उठाने की प्रवृत्ति : पुरुषार्थ, हिम्मत, धैर्य, व्यापार में बड़ी से बड़ी जोखिम उठाने की स्वाभाविक प्रवृत्ति।

उस युग में जब अधिकांश यात्रा कहीं पैदल, कहीं ऊंट या बैलगाड़ियों द्वारा की जाती थी। एक स्थान से दूसरे स्थान की यात्रा में कई-कई महीने लग जाते थे। मार्ग असुरक्षित थे। बरसात, गर्म हवा, लुओं का सामना करना पड़ता था। कहां अग्रोहा एवं राजस्थान के वियावान धोरे और कहां असम, मणीपुर, नगालैण्ड के दुर्गम क्षेत्र। भारत में ऐसा कोई स्थान नहीं होगा जहां राजस्थानी व्यापारी नहीं पहुंचे हो। सुदूर-सुदूर इलाकों में भी वे व्यापार करने पहुंच गये। अपरिचित लोग, अपरिचित भाषा, रहन-सहन, वातावरण सर्वथा अपरिचित, परन्तु उनमें समरस हो गये। वहां अपना व्यापार जमाने के लिए कहीं-कहीं अपना माल अपने कन्धों पर ढोने के अलावा अन्य कोई साधन नहीं थे, परन्तु सारी तकलीफें सहते हुए वे आगे बढ़ते ही गये, कभी पीछे मुड़ कर नहीं देखा और जहां गये वहां उद्योग व्यवसाय में अपने पांव जमा लिए। दुर्गम विरान क्षेत्र को उन्होंने आबाद सरसब्ज और व्यापारी केन्द्र बना लिया। वे जीवन में आये विभिन्न थपेड़ों को झेलने की क्षमता रखते थे। उन्हें विलासिता के जीवन से परहेज था। उद्योग, व्यापार के क्षेत्र में अग्रणी रहा मारवाड़ी समाज, विश्व के सर्वश्रेष्ठ घरानों की जमात में भी शामिल हैं।

७. ईमानदारी एवं अपनी शाख की रक्षा : लाखों के धन्धे हाथ के संकेत मात्र से ही कर लेते थे, कभी मुकरने की नौबत नहीं आती। लाखों का व्यापार सौदा बिना लिखाई-पढ़ाई के, जुबान के आधार पर हो जाता था। परन्तु भुगतान देने में अपनी शाख बनाकर कर रखते, चाहे सौदे में लाखों का नुकसान क्यों न हो। इस समाज की हुण्डियां की शाख सारे भारत में फैली थी। उस जमाने में बैंक नहीं थे। गांव, शहर के लोग अपनी पूंजी इन सेठों के पास जमा करा देते थे और जब भी उन्हें जरूरत हो ब्याज समेत रकम उन्हें मिल जाती थी। व्यापारिक प्रतिष्ठा इतनी थी कि एक छोटी सी हाथ की लिखी पूर्जी मात्र पर लाखों की बीमा राशि का भुगतान कर देते थे। घाटा होने पर कभी नियत में खराबी नहीं लाते, समय पर गहना, जेवर, मकान बेचकर भी अपनी व्यापारिक शाख बनाये रखते थे। एक मारवाड़ी कहावत है, एक स्त्री अपने पति से कहती है :-

''सत्य मत छोड़ो साहिबा, सत्य छोड़ा पत जाय।
सत्य की बान्धी लक्ष्मी, फेर मिलेगी आय।।

८. वित्तीय कुशाग्रता : इनकी वित्तीय कुशाग्रता इतनी प्रबल थी, राजा नवाबों के युग में वे उनके राज्य के वित्त मंत्री रहे। अंग्रेज जब आये तो उन्होंने भी इनकी व्यापार उद्योग की विशिष्टताएं और ईमानदारी के गुणों को देख कर इनके साथ व्यापार धन्धा खूब किया। जब भारत छोड़कर गये तब अपने उद्योग धन्धे इनको ही बेच कर चले गये।

९. निरंतर सतर्कता : ''आगम बुद्धिवाणिया' जो पहले से आगे क्या स्थिति आने वाली है उसके लिए सतर्क रहे। आने वाले खतरों से हमेशा सचेत-चौकन्ना। यही बुद्धि उसकी आध्यात्मिकता में भी अपना अगला भव बनाने के प्रति सतर्कता

में काम करती है।

हमें गर्व है, हमारे पूर्वज राजस्थान की मरूभूमि की विषम परिस्थितियों से चल कर साहसपूर्ण बाधाओं का मुकाबला करते हुए पूर्वांचल में असम की पहाड़ियों से लेकर पश्चिम अरब सागर' तटीय गुजरात तक फैले हुए विभिन्न प्रांतों तक पहुंचे। आज देश-विदेश में बसे नौ करोड़ मारवाड़ी बन्धु बंगाल, बिहार, उत्तर-प्रदेश, मध्य प्रदेश, दक्षिण प्रांत, पंजाब, दिल्ली आदि समस्त राज्यों सहित, विदेशों में भी बस कर वहां के समाजों में समरस हो कर अपनी भाषा, संस्कृति, सभ्यता एवं रहन-सहन की छाप छोड़ रहे हैं। देश की औद्योगिक एवं व्यापारिक प्रगति के कारण ही कहावत प्रचलित है कि राजस्थान के अकेले बिड़ला, पोद्दार, सिंहानिया, गोयनका आदि वंशजों का एक समय देश की तीन चौथाई सम्पदा पर बर्चस्व रहा है। आर्थिक क्षेत्र के साथ-साथ, शिक्षा, संस्कृति, अध्यात्म, चिकित्सा एवं समाज सेवा के क्षेत्रों में भी यह समाज का अभूतपूर्व योगदान रहा है।

राजस्थानी व्यापारी को समय-समय पर निम्न नामों से सम्बोधित करते रहे हैं।

बनिया : वह जो विणज याने व्यापार करे। बनिया वह जो सबको अपना बना सके, बनिया वह जो सबका बन सकता है।

महाजन : वह जो जनों में महान है, ''येन महाजन गतो स: पंथा'' याने जो राह में ''महाजन'' चलता है वही पथ में सबको चलना चाहिए।

सेट्टि (सेठ) : श्रेष्ठ आचरण के कारण। यही शब्द अपभ्रंश होकर धीरे-धीरे सेठ, सेठी, चेटी, चेटियार बन गया।

शाह : साहूकार- अपने वचन का पक्का- ईमानदार, जिसकी शाख चारों तरफ फैली हो।

गुप्त : व्यापारिक गूढ़ता के गुणों के कारण यह नाम प्रचलित हुआ।

परन्तु अब समय बदल गया है, आज की पीढ़ी में, जो हमारी पुरानी विशेषताएं थी, उसमें थोड़ा बदलाव आया है। अच्छा है हम उसको सुधारें। विशेष आवश्यकता है-

१. शील सदाचार का जीवन हो, सत्य के सहारे चले, इसमें कहीं कोई कमी नहीं आने देवे।

२. भिन्न-भिन्न सामाजिक गुटों के विचारों में सहिष्णुता लाने का प्रबल प्रबन्ध हो। अनेक फिरको में बंटे हम एक हों।

३. राष्ट्रीय एकता एवं भिन्न-भिन्न समाजों के साथ हमारी समरसता बढ़े। आज के युग में भाईचारे व एकता की नितांत आवश्यकता है।

४. हमारे में राजनैतिक जागरुकता बढ़े, साथ-साथ सामाजिक सुधारों पर जोर देवे।●

॥श्रीः॥

(स्थापित सन् 1935)

71वें स्थापना दिवस की

हार्दिक शुभकामनायें !

सोम गोयनका
प्रदेश अध्यक्ष
(उ०प्र०)

卐

गोपाल सूतवाला
प्रदेश महामंत्री
(उ०प्र०)

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन (रजि०)

केन्द्रीय कार्यालय : 152-बी, महात्मा गांधी रोड, कलकत्ता - 700007 प्रान्तीय कार्यालय : (उ०प्र०) : 51/40 "गोल्डी हाउस" नयागंज, कानपुर - 208 001
फोन : (अध्यक्ष) 2316862 (महामंत्री) 2546950 फैक्स 0512-2319479

प्रकृति सबसे बड़ी गुरु

✍ सोम गोयनका, अध्यक्ष
उत्तर प्रदेश मारवाड़ी सम्मेलन

आध्यात्मिक धरातल पर गुरू की बड़ी महिमा है। इस महिमा स्तुति में गुरू को प्रभु–सदृश स्थापित किया जाता है। अटूट श्रद्धा से सच्चे गुरू के आशीर्वाद द्वारा इस भौतिकता से पार का अनुभव किया जा सकता है। किन्तु शिष्य की ऐसी अटूट श्रद्धा और सच्चे गुरू का उपलब्ध होना, शताब्दियों में यदा–कदा होने वाली घटना है। स्वामी विवेकानन्द को परमहंस रामकृष्ण जी द्वारा शिष्य स्वीकार किया जाना दैवीय संयोग ही कहा जायेगा।

लेखक, इस विषय वस्तु के अधीन ऐसे दैवीय संयोग के रूप में उपलब्ध गुरू महिमा विषय से हटकर भौतिक परिवेश में सर्वदा साक्षात होने वाले गुरू के महिमा पर पाठकों का ध्यान आकर्षित करना चाहेगा। इस 'भौतिक परिवेश ' से लेखक का आशय प्रकृति से है।

प्रभु की इस अतीव अद्भुत संरचना में निश्चय ही मनुष्य की प्रस्तुति नायक के रूप में है। अतः प्रभू ने उसे ज्ञान बिन्दु की ऐसी क्षमता से उपकृत किया, जिसके प्रकाश में वह जीवन के अभीष्ठ लक्ष्य की ओर अग्रसर हो सके। असीम व भरपूर संशाधनों का खजाना नैसार्गिक रूप से उसे उपलब्ध कराया ताकि स्वावलम्बी जीवन सहज रूप से जी सके। सहजता का इससे बड़ा उदाहरण क्या हो सकता है कि अपनी कृति की अनुकृति को सृजन करने की निमिक्तता भी प्रभु ने प्राणियों को दी है। जैसे प्राणी वैसे ही प्राणियों को सृजन करने की उनकी क्षमता। वह भी आमोद–प्रमोद में, बड़ी सहजता के साथ। नर–मादा के मिलन से सृजन का ऐसा व्यापक रूप हमें क्या सिखाता है? क्या यहीं से सम्पूर्ण सृष्टि के आधार का मूल सिद्धान्त का संकेत नहीं मिलता? अवश्यमेव ही वह सिद्धान्त पोजिटिव व नेगेटिव ऊर्जा का, सभी पदार्थों में विद्यमान रहने का पोषक है। भौतिकी के क्षात्र इसे भली–भॉति जानते हैं। इसकी विस्तृत चर्चा हमारे विषय की सीमाओं को बहुत बढ़ा देगा। अतः यहीं से विषयानुगत दिशा पकड़ते हुये हमारा निष्कर्ष है कि इस सिद्धान्त की सीख भी हम प्राकृतिक प्रक्रिया से ही गृहण करते हैं।

प्रकृति का दायरा असीम है। समस्त ब्रह्माण्ड, नक्षत्र, बनस्पति, अग्नि, हवा, पानी व प्राणि जगत तथा वातावरण प्रकृति के परिवेश में आते हैं। अतः एक वर्ग इसे ही 'ईश्वर ' की संज्ञा देते हैं। प्रकृति और ईश्वर के बीच की दूरी को समाप्त करते हुये भी हम अपने कलेवर को निर्दिष्ट दिशा दे सकते हैं।

नियन्ता की स्वाभाविक सृष्टि में सब कुछ इतना सन्तुलित,, व्यवस्थित और पूर्ण है कि उसके द्वारा नायक रूप में मनुष्य की प्रस्तुति की प्रक्रिया में उसके विकास हेतु समस्त संशाधन उसे उपहार स्वरूप देकर इस पवित्र धरा पर उतारा है। वनस्पतियों से उसे जीवन का आधार मिलता है। और बनस्पति का आधार है हवा–पानी–तपिस (अग्नि) व वातावरण। संरक्षण हेतु भक्षण और भक्षण से संरक्षण प्राकृतिक प्रक्रिया है। सभी प्राणि व वनस्पति जगत में यह प्रक्रिया अनवरत चलती रहती है। किन्तु सृष्टि का नायक बोधत्व प्राप्त मनुष्य प्रकृति की ही शिक्षा से ऐसे आयामों को अंजाम देने में जुटा हुआ है कि प्रकृति भी असीम छेड़छाड़ से रूष्ट होने का संकेत देती नजर आती है। स्पष्ट संदेश मिलता है कि किसी भी धरातल पर छेड़–छाड़ की सीमा मर्यादित होनी चाहये अन्यथा परिणाम विनाश पूर्ण होगें। मनुष्य का सम्पूर्ण अस्तित्व प्रकृति के परिवेश में आबद्ध है। अतः उसका सम्पूर्ण विकास प्रकृति के शिक्षा के ही फलस्वरूप हैं। उसकी शिक्षा देने की सामर्थ्य व संभावनायें अपरमित हैं, जिनको पूर्ण रूप से उपलब्ध करना मनुष्य की क्षमताओं के बाहर है।

प्रभु की संरचना में मनुष्य में बोधत्व का परिमाण अलग–अलग अनुपात में उपलब्ध है। विषयानुगत अभिरूचि के आधार पर मनुष्य इसका विकास करता हैं। उस विकास का क्रम भी बोधत्व की तासीर के अनुपात से नियंत्रित होता है। सार रूप में शिक्षा देने का मूल श्रोत्र बिन्दु तो प्रकृति ही है।

अब चूँकि व्यक्ति में बोधत्व की तासीर और विषयानुगत अभिरूचि के हिसाब से दक्षता प्राप्त होती है, अतः ज्यादा दक्षता प्राप्त व्यक्ति कम दक्षता प्राप्त व्यक्ति पर बोधत्व की वर्चस्वता की स्तिथि बनाता है और वहीं से प्रारम्भ होता है, समाज में मानुषिक स्तर पर 'गुरू–शिष्य' परम्परा की। यह व्यवस्था आलोच्य नहीं कही जा सकती। यदि इस रिश्ते का निर्वाह पूर्ण निष्ठा व लगन से हो तो। गुरू को ईश्वर के दर्जे में प्रतिष्ठित होने के लिये कैसी पवित्रता और अर्हताओं की आवश्यकता है, यह कल्पनातीत बात हैं। ऐसा होने पर शिष्य की श्रद्धा चाहत की बात नहीं वरन् स्वाभाविक रूप से निस्सृत होने की अवस्था है। अपने उच्चस्तरीय बोधत्व की क्षमता से प्रकृति की शिक्षा से अर्जित लाभ को अगर गुरू समाज व शिष्यों को लाभन्वित कर सकें तो स्वीकार योग्य स्थिति है।

विवाह को समस्या बनने से रोकना आवश्यक

✍ राजेंद्र शंकर भट्ट

फिर से संबंधों का समय आया है जो व्यक्ति व्यक्ति के बीच नितांत निजी होते हैं, लेकिन कोई व्यक्ति अकेला नहीं होता, इसलिए विवाह संबंध पारिवारिक, सामाजिक और बहुसंख्या को प्रभावित करने वाले बन जाते हैं। विवाह विवाह में प्रदर्शनीय अंतर परिवारों में भिन्नता से आरंभ होता है, चूंकि परिवार की परंपरा और परिस्थिति के अनुसार वैवाहिक आयोजन होते हैं। परिवार समाज का मूलभूत अंग है और चूंकि समाज उच्छृंखल हो गया है। विवाह जो चाहता है उस तरह कर लेता है।

समाज में व्याप्त स्वच्छंदता भर की बात नहीं है। आर्थिक परिस्थिति के अंतर विवाहों का स्वरूप और प्रभाव निर्मित करने लगे हैं। समस्या मूलतः इसी से बनी है। जब भिन्न-भिन्न समाज में, समुदाय, स्थान और जाति में, सभी के लाभ की चिंताएं थी, हर समाज में अनुशासन था। इसी के अनुरूप, एक ओर विवाह की विधियां निर्धारित रहती थी और यह भी कड़ाई से निभवाया जाता था कि किस रस्म पर कितनी व्यय हो, और कुल मिलाकर किस परिवार में उसके यहां के विवाह पर कितना व्यय किया जा सकता है। यह हर परिवार के लिए एक समान नहीं था, परन्तु नियमन चूंकि परिवार की कुल आय के अनुपात में निर्धारित रहता था, विवाहों के कारण उथल-पुथल ज्यादा नहीं होती थी। इस समय विवाह समारोह सभी के लिए व्यापक रूप से चिंतनीय हो गए हैं, चूंकि एक ओर व्यय का आधिपत्य प्रकंपनकारी उलट-फेर करता है। दूसरी ओर व्यय का संकोच अनेक परिवारों में विवाह को संकट बनाए हुए है। अनेक परिवार हैं जिनमें समय पर समुचित विवाह नहीं हो पाने पर अनहोने और अनुचित व्यवहार हो जाते हैं, जैसी लड़की अपनी इच्छा से, अभिभावकों को बिना बताए अपना विवाह कर लेती हैं। यह संकट बहुत ही गहरा है, जिसने भ्रूण हत्या तक का रूप लिया है और आश्चर्य एवं परिताप यह है कि भ्रूण हत्या से लेकर जो भी असमानता और अनौचित्य महिलाओं को भुगतने होते हैं, उनमें अब जब सभ्यता समुन्नत हुई मानी जा रही है, वृद्धि ही वृद्धि हो रही है। विवाह शुभ अवसर होते हैं, उनके साथ ऐसी आशंकाएं जोड़ना अशुभ माना जाएगा। लेकिन अशुभ जो व्यापक रूप से हो रहा है, उससे किसी भी परिवार अथवा आयोजन को बरी नहीं किया जा सकता। अति अमीर परिवारों में अथवा एक साथ बहुसंख्या में जब विवाह होते हैं, सारा का सारा बाजार हिल जाता है। बाजार से जो कीमती वस्तुएं खरीदी जा सकती है उनकी बिक्री भी बढ़ जाती है और सामान्य चीजों की भी, जैसे साग-सब्जी। जब विवाह को मुहूर्त कम होते हैं, इन परिस्थितियों की व्यापकता को नहीं रोका जा सकता है।

परन्तु समस्या विकट इसलिए बनी है कि विवाह आयोजन समृद्धि के प्रदर्शन बना लिए गए हैं। ऐसे असंतुलित और अनावश्यक व्यय से यह दुष्परिणाम हुए बिना नहीं रहता कि ईर्ष्या और होड़ बढ़ जाती है, जिसने ही यह विकराल रूप लिया है कि कई परिवार अपनी कन्याओं के विवाह नहीं कर पा रहे। उधर इस समय विकास और समृद्धि के नाम पर परिवारों में अंतर इतने आ गए हैं कि कोई भी किसी संस्कार अथवा आयोजन में एकरूपता अंगीकार करने को तैयार नहीं है।

विवाह व्यय से चिंतित होकर, कई समुदायों में सामूहिक विवाह होने लगे हैं। लेकिन इनसे समाज एवं स्थिति का सुधार हो ही नहीं सकता, जब तक जो संपन्न और समृद्ध हैं वे भी इनमें अपने को सम्मिलित नहीं करते। जब इसका प्रतिपादन किया जाता है, सामूहिक विवाहों के समर्थक ही नहीं, सामूहिक विवाहों के प्रशंसक, प्रोत्साहक, आयोजक और सहायता देने वाले भी कह लेते हैं कि अमीर-गरीब हर समय रहे हैं।

स्वतंत्रता को स्वच्छंदता नहीं बना लिया गया होता अथवा संविधान के लक्ष्यों की चिंता होती तो इस प्रकार व्यापक सामाजिक हित के प्रश्नों पर उपेक्षा का भाव नहीं होता. हम समानता तो नहीं बना सकते, लेकिन संतुलन, सद्भाव, संयम बिना भी नहीं रह सकते। विवाह संस्कार जिस प्रकार से पीड़ादायक बनते जा रहे हैं, इससे यह उल्लेख उनके संदर्भ में आ गया है। यह व्यापक समस्या है और भारत की स्वतंत्रता को कलंकित तथा हानिकारी बना रही है। जब असमानता अधिक लो जाती है, इसके प्रदूषण विकराल रूप लिए बिना नहीं रहता, जैसा इन दिनों सभ्य और संपन्न माने जाने वाले देश फ्रांस में हो रहा है। हमें समय रहते इन प्रश्नों पर विचार करना होगा। चूंकि जो स्वतंत्रता हजार साल मिली है उसको हम खतरे में नहीं डालना चाहते।

विवाहों की इस चर्चा में विवाह बाद की समस्याएं तो आई ही नहीं, जिनकी संख्या, विविधता और भीषणता अलग से विकराल बनती जा रही है। जैसा ऊपर आया, विवाह संबंध निजी होते हैं परन्तु कोई भी व्यक्ति सब कुछ अपने आप न समझ पाता है, न कर पाता है। समाज मोटर चलाने के लिए प्रशिक्षण तो अनिवार्य बनाए हुए हैं, लेकिन घर और विवाह संबंध चलाने के लिए प्रशिक्षण की ओर उसका ध्यान नहीं है।

भारत में प्राचीन ग्रंथों में इसके निर्धारण इतने व्यापक और स्पष्ट हैं कि आजकल के अखबार उन्हें पूरी तरह प्रकाशित करना अशोभनीय मान लेते हैं। फैशन के नाम पर नंगेपन के नजदीक जो पहुंच गए हैं, वे भी यह नहीं बताना चाहते कि कपड़े उतारना भी वैवाहिक सफलता के लिए कला होती है। चूंकि भारत में इस विषय का साहित्य बहुत है, 'कामसूत्र' का यह देश है, इसलिए ऐसी परंपरा यहां प्रारंभ नहीं हुई कि विवाह के समय वर-वधू को नसीहत देने की किताबें अलग से बनें। हमारे पड़ोसी देश चीन में ऐसी प्रथा रही है, जिसे वहां कहा ही 'पिलो बुक' जाता था। जो अतीत हो गया है उसका ज्ञान इतना कम होता जा रहा है कि हमारे देश में भी ऐसी पुस्तक की अनिवार्यता बन गई है। कई जगह विवाह संबंध के प्रशिक्षण के संस्थान तथा परामर्श प्रबंध भी प्रारंभ हुए हैं। परंतु ये भी जो संपन्न हैं उनके लिए ही उपलब्ध है।

विवाह हर व्यक्ति का होता है- जो अपवाद बन जाते हैं उन्हें यह जाने दें। अतएव विवाह के सभी पहलुओं पर विचार होने चाहिए, इनको खोट दूर किए जाने चाहिए और यह फिर से स्थापित किया जाना चाहिए कि यद्यपि विवाह अति निजी अनुबंध और आचरण है, इससे सभी को सुख और कल्याण प्राप्त होना चाहिए। ●

नया नेतृत्व, नये कार्यकर्ता बनाने की चुनौती

✍ केवल चंद मिमानी

सामाजिक क्षेत्र में आने के लिए एक समय लोगों में बड़ा उत्साह रहता था। अपनी अंतरात्मा की पुकार पर लोग स्वयंमेव सामाजिक क्षेत्र में आते थे और सामाजिक नेतृत्व से कार्य देने की अपील करते थे। मेरे बचपन के दिनों में तो यह नजारा आम था। संस्था छोटी हो या बड़ी इसका कोई महत्व नहीं था। महत्व उनके द्वारा संपादित होने वाले काम का था। तब सामाजिक नेतृत्व भी कूपमंडुक नहीं था बल्कि उदारमना और खुले विचारों का था। सामाजिकता में व्यवसायिकता की भावना छू तक नहीं गई थी। समाज के प्रतिष्ठित लोग इन संस्थाओं में दान देकर अपनी प्रतिष्ठा बढ़ाते थे। बड़ाबाजार जो मारवाड़ियों का गढ़ रहा है। लंबे समय तक मारवाड़ी समाज के सुधार आंदोलनों का भी गवाह रहा है। आज का अफीम चौरास्ता एक समय सामाजिक आंदोलनों की रुपरेखा बनाने का प्रमुख केंद्र था। मारवाड़ी समाज के न जाने कितने आंदोलन यहां से शुरू हुए और राष्ट्रीय स्तर पर चर्चित रहे।

मारवाड़ी समाज में तब संवाद का बड़ा महत्व था। छोटी-बड़ी घटनाओं पर लोग मिल बैठकर बातचीत करते थे। विभिन्न पहलुओं पर चिंतन करते थे एवं आम राय से उसका एक सर्वसम्मत समाधान निकालते थे। किसी को भी अपनी मर्जी थोपने की छूट नहीं थी।

कोई भी आंदोलन हो कार्यकर्ताओं की कमी नहीं होती थी। नेतृत्व की पुकार पर कार्यकर्ता दौड़े चले आते थे। ऐसा भी नहीं था कि सामाजिक आंदोलनों के चलते मारवाड़ी समाज का व्यवसायिक पक्ष कमजोर रहा हो। व्यवसाय आज की तुलना में तब कहीं अधिक कष्टसाध्य था पर उसमें भी लोग सफल थे। व्यवसायिक उन्नति के साथ सामाजिक उत्थान का अद्भुत तालमेल था।

आज भी मारवाड़ी समाज है पर न वह आंदोलन है न संवाद की प्रवणता। सुधार की बातें तो बीते जमाने की बातें होकर रह गई है। पिछले बीस-तीस वर्षों में मारवाड़ी समाज का प्रसार तो खूब हुआ है। देश की परिधि से निकलकर मारवाड़ी विश्व की परिधि में पहुंच चुके हैं, लेकिन सामाजिकता की भावना उनमें अब नहीं रह गई है।

सामाजिकता से मेरा आशय व्यापक समाज के हितों से है। यहां यह स्पष्ट कर देना उचित है कि मारवाड़ी समाज का स्वरूप भी अन्य समाजों की तरह ही है जिसमें धनी लोगों के साथ-साथ मेहनत मशक्कत करके दो जून की रोटी कमाने वाले लोगों की ही अधिकता है। एक समय धनी वर्ग समाज के मध्यम और निम्न आयवर्ग की चिंता करता था और उनके जीवनस्तर को ऊंचा उठाने के लिए नए-नए उपाय करता था। आज यही भावना खत्म हो रही है।

आज मारवाड़ी समाज कई स्तरों पर बंट गया है। समाज के धनाढ्य वर्ग ने मेहनत मशक्कत करने वालों से नाता तोड़ लिया है। फलस्वरूप समाज का बड़ा हिस्सा मुख्यधारा से कट गया है। संस्थाएं हैं पर कार्यकर्ता नहीं है। क्योंकि कार्यकर्ता जहां से आते थे वह समाज की मुख्यधारा से कटा हुआ है। छोटी-छोटी संस्थाएं बन रही हैं और किसी न किसी धनवान की प्रशस्ति करके, उनकी सामाजिक प्रतिष्ठा बढ़ाने के काम में स्वयं को नियोजित करके अपना अस्तित्व बचाने में लगी हैं। सामूहिक रूप से, बड़े पैमाने पर किसी सामाजिक कार्य की योजना नहीं बन पा रही।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की इस परिस्थिति का गहन अध्ययन करके ऐसी योजना बनानी चाहिए ताकि समाज का हर वर्ग सामाजिक क्षेत्र से जुड़ सके एवं समाज के समक्ष उपस्थित चुनौतियों पर एकजुट होकर उसका मुकाबला कर सके। कार्यकर्ताओं की टोली बनाए बिना सामाजिक कार्य को सफल करने की भावना बेकार है। सम्मेलन को अब ऐसा नेतृत्व समाज के समक्ष उपस्थित करना चाहिए जो अपेक्षाकृत युवा, क्रांतिकारी और आधुनिक सोच का हो। महिलाओं को मुख्यधारा में लाना भी वक्त की जरूरत है तभी समाज का व्यापक हित सधेगा।

With best compliments from

DEEPAK PAC-N-MOV

P-16, New CIT Road, 4th Floor
Kolkata- 700 073

Tele : 2237-5132/3091/1835/9331018758

Fax : 033 2236-1072, Email- deepakkolkata@vsnl.net

Specialist in packing of Household goods &
Transportation for any part of India

खुली बाजार व्यवस्था के दौर में सामाजिक कार्यकर्ताओं की अस्मिता

✍ **बंशीलाल बाहेती**, महामंत्री, लघु उद्योग महासंघ एवं भूतपूर्व संयुक्त मंत्री, आ.भा. माहेश्वरी महासभा

सामाजिक कार्यकर्ता सामाजिक संगठनों की सुरक्षा के लिए एकजुट हो :-

आज सामाजिक कार्यकर्ताओं की अस्मिता दांव पर लगी हुई है। पूरी सामाजिक व्यवस्था को संतुलित रखने और उसे गरिमामय स्वरूप प्रदान करने वाला निष्ठावान कार्यकर्ता आज इस खुली बाजार व्यवस्था में अपनी साख और सम्मान की सुरक्षा के लिए स्वयं असाध्य महसूस कर रहा है। तेजी से भौतिक उपलब्धियों में संलग्न हर व्यक्ति महज निजी हितों के पोषण व नैतिक मूल्यों के शोषण में इस कदर खो गया है कि मानवीय संवेदनाओं और सामाजिक सुव्यवस्था के प्रति अपने कर्तव्य बोध का उसे जरा भी अहसास नहीं रहा है। हर साधन संपन्न व्यक्ति आज स्वयं को प्रतिष्ठित करने की होड़ में लगा हुआ है और इसके लिए उसे सामाजिक कार्यकर्ताओं की निष्ठा को अपने निजी हित में उपयोग करते जरा भी हिचक नहीं होती। परिणाम यह हो रहा है कि सामाजिक कार्यकर्ता स्वयं की प्रतिष्ठा की रक्षा पूरे आदर व सम्मान के साथ नहीं कर पा रहा है। और अब तो नव धनाढ्य व्यक्तियों में निष्ठावान कार्यकर्ता धीरे-धीरे अपना महत्व क्षीण होते देखकर बेहद कुंठित व अपमानित अनुभव कर रहे हैं। इस खुली बाजार व्यवस्था में आज हमारे निष्ठावान कार्यकर्ताओं की नीलामी में संलग्न थोड़े से नवधनाढ्य लोगों की व्यावसायिक विकृति का शिकार पूरी सामाजिक व्यवस्था हो रही है और हम जाने अनजाने उन लोगों की बाजार व्यवस्था का हिस्सा बनने को मजबूर हो रहे हैं। आज सामाजिक कार्यकर्ताओं को माध्यम बनाकर हमारे सामाजिक संगठनों पर ये नवधनाढ्य व्यक्ति उसी प्रक्रिया को अपना रहे हैं जिस प्रकार खुली अर्थव्यवस्था के इस दौर में कमजोर व्यावसायिक प्रतिष्ठानों को हड़पने का सुनियोजित षड़यंत्र सफल हो रहा है और आर्थिक दृष्टि से कमजोर राष्ट्रों को नई पूंजीवादी व्यवस्था अपने शिकंजे में जकड़ रही है। परिणाम कितने भयावह होंगे इसका अहसास जब हम करेंगे तब तक बहुत देर हो चुकी होगी।

इसलिए जो लोग सामाजिक संस्थाओं में कार्यरत हैं यह उनकी जिम्मेवारी है कि वे अपने निष्ठावान कार्यकर्ताओं की अस्मिता की रक्षा के लिए एकजुट रहे- नैतिक मूल्यों की रक्षा का संकल्प करे और सामाजिक संगठनों को बाजार व्यवस्था का हिस्सा बनने से रोकें। अगर ऐसा नहीं किया तो हम न संगठनों को बचा पाएंगे और न अपने कार्यकर्ताओं की अस्मिता की ही रक्षा कर पाएंगे। और तब जो हालात बनेंगे वे आपको अपने परिवार की रक्षा के लिए भी पर्याप्त नहीं रहेंगे। और ऐसा जिस दिन हुआ तो याद रखिए आपका अपना अहम् और निजी पहचान भी इस कदर बिखर जाएगी कि स्वयं आप अपने को माफ नहीं कर पाएंगे। जरूरत है निष्ठावान कार्यकर्ता अपने वजूद को समझे और नवधनाढ्य व्यक्ति अपनी विकृतियों से सामाजिक संगठनों और व्यवस्था को खुले बाजार व्यवस्था का हिस्सा समझने की भूल नहीं करे। हम जिस धरती के वाशिंदे हैं और जहां एक बेहद संवेदनशील और शालीन सभ्यता ने हजारों वर्षो तक सामाजिक व्यवस्था को सुरक्षित व संगठित रखा वह अपने वजूद को विखंडित कभी नहीं होने देगी। इस संक्रमण काल में भी हम इस आक्रमण को झेलने की क्षमता रखते हैं और इसलिए जरूरी है हमारे समाजिक संगठन अधिक जागरूकता से अपने समाज और सामाजिक कार्यकर्ताओं की अस्मिता की सुरक्षा के लिए दृढ़ संकल्प के साथ आगे बढ़ें। अवरोधों से मुकाबला करें एवं विकृत प्रवृतियों को हावी नहीं होने दें।

सामाजिक पृष्ठ भूमि पर प्रभाव :- इतिहास के इस लंबे दौर में बीसवीं सदी का विशेष महत्व है। इस शताब्दी में दो विश्वयुद्ध हुए। भीषण अकाल का पूरे विश्व को सामना करना पड़ा। भयंकर मंदी के दौर में सारी विश्व अर्थव्यवस्था चूर-चूर होकर रह गई और शताब्दी की सबसे बड़ी त्रासदी रही कि पूंजीवादी और साम्यवादी व्यवस्थाओं का एक निर्णायक संघर्ष भी इसी कालक्रम में हुआ।

यह वैचारिक क्रांति का ऐसा दौर था जहां कार्ल मार्क्स और एडम स्मिथ के अपने अपने प्रभावी तर्क थे। लेनिन एवं फ्रेडरिक वान हॉक की तर्क शक्ति का अपना-अपना पुरजोर आधार था। विश्व कौतूहल से निहार रहा था कि मार्क्स-लेनिन और माओ की अवधारणाएं विश्व व्यवस्था का आधार बनती है या स्मिथ व हॉक प्रभावी सिद्ध होते हैं। किन्तु १९८९ में जब बर्लिन की दीवार टूट गई और सोवियत संघ का विघटन हो गया तो विश्व को स्वीकार करने में देर नहीं लगी कि मार्क्स और लेनिन पराजित हो गए हैं। किन्तु स्मिथ व हॉक विजयी होंगे यह कहना जल्दबाजी होगी।

यह सही है कि इसी कार्य में हमने अपनी आजादी की लड़ाई लड़ी। हमारे क्रांतिकारियों ने नए संकल्प और हौसलों के साथ अपने देश की मुक्ति का मार्ग प्रशस्त किया। नेताजी सुभाष चंद्र बोस ने विश्व में नए इतिहास का निर्माण किया और विदेशी धरती पर एक सशक्त सेना का गठन कर अंग्रेजी सल्तनत को हतप्रभ कर दिया। गांधीजी के नए प्रयोग और दर्शन ने इस देश की संस्कृति और गौरव को नया आयाम दिया और शताब्दी की सबसे बड़ी जीत हमारे देश के नाम दर्ज हुई। यह इसलिए संभव हुआ क्योंकि हमारी सामाजिक व्यवस्था और सामाजिक कार्यकर्ताओं का मनोबल आकाश की ऊंचाई छू रहा था।

इस महान संघर्ष में हमारे समाज का भी विशेष योगदान रहा है और हमें अपने इसी अतीत का वास्ता है कि हम भविष्य में भी विकृतियों को अपने पर हावी नहीं होने दें। हमें हर स्थिति में अपने कार्यकर्ताओं और सामाजिक व्यवस्था को प्रोत्साहित करना है- उनकी अस्मिता की रक्षा के लिए वचनबद्ध रहना है।

विश्व व्यवस्था में बीसवीं सदी में ऐसे नए-नए चेहरे उभरे जिनके नाम से सारी अवधारणाएं बदलती रही और एक अनिश्चितता और भय का वातावरण पूरे विश्व को झकझोरता रहा। उपनिवेशवाद का फैलाव करता ब्रिटेन, फ्रांस, नीदरलैंड, बेल्जियम आदि तूफान के वेग से बढ़ते हुए मानवीय सभ्यताओं का शोषण कर रहे थे और एक के बाद एक राष्ट्र को गुलाम बनाने में बर्बरता की पराकाष्ठा लांघ रहे थे। दूसरी तरफ जर्मन का हिटलर, इटली का मुसोलिनी, स्पेन का फ्रेंको, पुर्तगाल का सालाजार, जापान का तोजो पूरी तानाशाही के साथ फासीवादी हरकतों से पूरे विश्व में दहशत का वातावरण फैलाने में संलग्न थे। इधर च्यांग कांईशेक कुप्रशासन से चीन को एकजुट रखने में असफल रहा और हालात का लाभ उठाते हुए माओत्सेतुंग चीन में नई जनवादी व्यवस्था की स्थापना करने में सफल हो गए। पूरी विश्व व्यवस्था दिग्भ्रमित थी और अराजकता का आलम इस कदर था कि मानवीय सभ्यता को कुछ सूझ नहीं रहा था। उसी दौर में जापान पर अमेरिका द्वारा एटम बम गिराना हीरोशीमा व नागासाकी के लाखों लोगों का क्षण भर में काल कवलित होना, वियतनाम, कंबोडिया, लाओस, कोरिया में निरंतर युद्ध होना और उसी दौर में भारत का विभाजन और सांप्रदायिक दंगों से मर्माहत व्यवस्था ने पूरी मानवता को संकट से घेर लिया था।

इन सारी त्रासदियों से जूझते भारत ने कभी भी हालात का लाभ उठाने का प्रयास नहीं किया और हकीकत को अपने अनुकूल बनाने के संकल्प के साथ संघर्ष करता रहा। हमारे सामाजिक संगठन और निष्ठावान कार्यकर्ताओं के सामने यह सबसे बड़ी चुनौती थी कि उनके बलिदान एवं सूझबूझ ने हमें न सिर्फ आजादी दिलाई बल्कि हमारी मानवीय संवेदनाओं और गौरवपूर्ण सभ्यता को विश्व में नई ऊंचाइयां प्रदान की। गांधीजी का दर्शन देश के करोड़ों लोगों के लिए प्रेरणाप्रद रहा और हमने विश्व व्यवस्था में नया इतिहास सृजन करने में सफलता पाई। बिना हिंसा व युद्ध के हमने आजादी प्राप्त की। जरूरत है इस पूरे संदर्भ में हम अपने सामाजिक संगठनों और कार्यकर्ताओं को फिर प्रेरित करें उन्हें भरोसा दें कि हालात का मुकाबला करने वाले इतिहास को अपने अनुकूल बना सकते हैं। यह हकीकत है और यही निष्ठा है. शायद यही हमें अपन कार्यकर्ताओं की प्रतिभा एवं निष्ठा के प्रति आश्वस्त होने का आधार देगी।

सामाजिक कार्यकर्ताओं का आचरण प्रभावी हो-

किसी भी सामाजिक संगठन की प्रतिष्ठा उसके कार्यकर्ताओं के आचरण और नैतिक मूल्यों के प्रति उनकी निष्ठा पर निर्भर करती है। यह कत्तई संभव नहीं कि कार्यकर्ता की कथनी और करनी में फर्क हो और वह यह समझ बैठे कि समाज उसे सम्मान देगा। वाक चातुर्य से या भ्रमित करके हम कुछ समय के लिए समाज का ध्यान बंटा सकते हैं किन्तु सत्य उजागर होने पर व्यक्ति की चालाकी और चतुराई दोनों उसे समाज की नजरों से इस कदर गिरा देगी कि वह उसके बाद समाज में अपनी छवि सुधार नहीं सकता।

सामाजिक संगठनों में कार्यरत कार्यकर्ताओं पर उनके परिवार के संस्कारों एवं परिवेश का बहुत प्रभाव पड़ता है। जिस माहौल में वे रहते हैं उससे जीवन के कई सूत्र उनको प्रेरणा देते हैं। स्वर्गीय सेठ गोविन्ददास जी मालपाणी जो हमारे सम्मेलन के १९५४ से १९६२ तक अध्यक्ष रहे अपने समय में विश्व के एकमात्र ऐसे व्यक्ति थे जो अपने देश के सर्वोच्च निर्वाचित संसद के लगातार ५० वर्ष तक सदस्य रहे। उनके परिवार के संस्कार इतने महान थे कि उसी का परिणाम रहा कि वे जीवन की तमाम सुख सविधाओं का परित्याग करके आजादी की लड़ाई में सक्रिय हुए।

उनके पितामह राजा गोकुल दास मालपाणी की शादी १८५४ में जयपुर में हुई। बारात को पैदल मार्ग द्वारा जबलपुर से जयपुर जाना था। यह तय हुआ कि वर के लिए जो रथ जाएगा उसे जैसेलमेर से आया हुआ एक वृद्ध रथवान ही चलाएगा। बचपन से राजा गोकुलदास को अपने रथ पर चढ़ाने वाला एक गरीब मरान मोटेराव यह सुनकर बेहद मर्माहत हुआ। आज ऐसे शुभ अवसर पर वह राजा गोकुलदास की सवारी अपने रथ पर नहीं करा पाएगा इसकी पीड़ा इतनी गहन थी कि वह कुछ कह नहीं पा रहा था। शिकायत करने का क्या लाभ। मोटेराव अपने भाग्य को कोसता हुआ राजमहल के बाहर एक पेड़ के नीचे बैठकर रोता रहा। लेकिन अचानक मोटेराव की पत्नी सीधे महल में गई और दूल्हा बने हुए राजा गोकुलदास को बोली 'तू ऐसा बावला है ऐसा मैं जानती तो एक दिन भी अपने रथ में तुझे बैठाने से अपने आदमी को रोक देती।' यह आक्रोश भरा स्वर उस शुभ घड़ी में राजमहल में सन्नाटा पैदा कर गया, सब अवाक् थे । राजा गोकुलदास जी के पिताजी ने समझाते हुए कहा कि यह हमारे रीति रिवाज व परंपरा का प्रश्न है, ऐसे अवसर पर जैसेलमेर के हमारे रथवान का ही अधिकार होता है कि वह रथ चलाए। परन्तु मोटेराव की पत्नी को यह बात समझ में नहीं आ रही थी। उसे तो लगा कि जब खुशी का मौका आया तो मोटेराव दरकिनार कर दिए गए और उनकी भावनाओं को, अपनत्व को और संवेदनाओं को एक झटके में झकझोर कर रख दिया। जीवन भर की सेवा का क्या यही पुरस्कार मिलना चाहिए।

माहौल इतना गमगीन था कि अचानक राजा गोकुलदास दूल्हे के वेश में बाहर आए और पूछा मां मोटेराव कहां हैं। उसके इशारा करने पर कि वहां दूर पेड़ के नीचे दुखी मन बैठा रो रहा है। राजा गोकुलदास उसी वेश में पेड़ के पास उस मां के कंधे पर हाथ रखे हुए पहुंचे। अपने दोनों हाथों से मरान मोटेराव को उठाया और दोनों पति-पत्नी को उस बैलगाड़ी में बैठा दिया जो रथ के आगे चलने वाली थी। फिर अंदर गए। एक जोड़ा स्त्री पोशाक लाए और एक जोड़ा पुरुष पोषाक लाए एवं उनको देते हुए बोले- तुम मेरे खास मेहमान बनकर चलोगे- रथ तो तुम मोटेराव जीवन भर हमारा ही चलाओगे। आज तो तुम हमारे मेहमान बनकर बाराती बनकर ठाठ से जयपुर चलोगे। साथ में केवल मेरी यह मां भी जाएगी। इस बारात में और कोई स्त्री जा भी नहीं रही है। राजमहल का वातावरण आह्लादित हो गया- कहते हैं जयपुर में मोटेराव और उनकी पत्नी की आवभगत राजा गोकुलदास जी के

परिवार के मुख्य सदस्यों की तरह ही की गई। राजा गोकुलदास का यह निर्णय वंश परंपराओं की मर्यादाओं का सम्मान कर सका और अपनों की संवेदना और कार्यकर्ता के आत्मसम्मान को गौरवमय बनाने में कीर्तिमान बन गया। इसी परंपरा में पले व बड़े हुए सेठ गोविन्द दास जी मालपाणी ने हमारे सामाजिक जीवन में कार्यकर्ताओं के सामने कई प्रेरणाप्रद कीर्तिमान स्थापित किए। उन्होंने एक सार्थक जीवन जिया और समाज-व्यवस्था को उसका गौरव प्रदान किया। उन्होंने अपनी प्रतिष्ठा और गौरवमय जीवन को कार्यकर्ताओं के स्वाभिमान को स्थापित करने में और उन्हें सम्मानित करने में लगाया। आज हमें ऐसे ही नेतृत्व की फिर जरूरत है।

कार्यकर्ता के स्वाभिमान की सुरक्षा :-

हम कई बार अपने अहम् और निजी हितों के पोषण के लिए कार्यकर्ताओं का सही सम्मान नहीं करते बल्कि होता यह है कि हम ऐसे कार्यकर्ताओं को अपना हित साधने के बाद हेय एवं छोटा समझने की भूल कर जाते हैं। परिणाम यह होता है कि तब समाज में हम स्वयं अपनी प्रतिष्ठा तो खोते ही हैं साथ ही निष्ठावान कार्यकर्ता की सेवा व अनुभव से समाज को वंचित कर देते हैं।

सामाजिक कार्यकर्ता पूरी सामाजिक व्यवस्था की ऐसी आधारशिला होता है जिस पर किसी भी समाज का गौरव व गरिमा निर्भर करती है। एक सामाजिक कार्यकर्ता पूरे इतिहास का सृजक बन जाता है और अपनी सेवा और साधना से किस प्रकार पूजनीय हो जाता है इसका एक प्रेरणाप्रद प्रसंग का जिक्र करना उचित होगा।

कहते हैं सीकर के पास काशी का बास नामक ग्राम है और उसके पास ही कदम का बास है। लगभग १५० वर्ष पहले गदर के आसपास एक माहेश्वरी बंधु उस गांव में आकर बस गए। परिवार में वे तथा उनकी पत्नी दो ही थे। माहेश्वरी जी अच्छे और सुलझे हुए वैद थे। कुछ ही अर्से में आसपास के चालीस-पचास गांवों में उनके इलाज की साख बैठ गई। वे किसी से फीस नहीं लेते थे। पर जब लोग ज्यादा आग्रह करते तो कहते कि जितनी श्रद्धा हो अनाज भिजवा देना। कभी किसी ने उनको खरल घोटते या इमाम दस्ता कूटते नहीं देखा। वे जो औषध देते अपने हाथ से देते। काढ़ा पिलाते तो अपने हाथ से औटाकर पिलाते। यह कभी पता नहीं चल पाया कि वे किस प्रणाली की औषध देते हैं। वहीं पास के एक गांव का ठाकुर माहेश्वरी जी के इलाज का मखौल उड़ाता- हंसी मजाक में फबतियां कसता और 'अनाजिया अनाड़ी' कहकर उनका अपमान करता।

एक दिन ठाकुर के यहां अनहोनी हो गई। लड़की का विवाह था। फेरे पड़ चुके थे। पहरावनी हो गई पर ठीक लड़की की विदाई के समय दूल्हा घोड़े से गिर गया। अचेत हो गया। उसके सिर में गहरा घाव हो गया। लोगों ने दौर कर दूसरे गांव के वैद्यराज को बुलाया परन्तु कोई लाभ नहीं। सारा दिन बीत गया। सबको अनहोनी की आशंका सता रही थी। तभी लड़की की मां ने ठाकुर साहब से आग्रह किया कि मेहरबानी करके एक बार कदम्ब के बास के माहेश्वरी जी को बुला लेवें। हालात की गंभीरता को देखते हुए और पुत्री के मोह ने ठाकुर साहब को विवश कर दिया। एक तेज दौड़ने वाली ऊंटनी को भेजकर माहेश्वरी जी को बुलाया। घटना का विवरण सुनकर माहेश्वरी जी आवश्यक दवा लेकर ठाकर साहब के यहां आए। लड़के के पास उपस्थित वैद्यजी व अन्य सभी को उन्होंने बाहर किया। केवल ठाकुर साहब की लड़की को वहीं रहने को कहा। फिर चूल्हे पर उन्होंने कुछ पकाया और उस लड़की के हाथ से रोगी को पिलाया। रोगी ने आंखें खोल दी। फिर दूसरी दवाई लड़की के हाथ से पिलाई। लड़के के चेहरे पर हंसी आ गई। लड़की से उन्होंने कहा- 'देख बाई, ये तेरे पाहुने यहां पर एक महीना रहेंगे। सेवा तू ही करेगी और लड़के को कहा- तू भी सुन, दवाई इसी बाई के हाथ से लेना पर बाई के शरीर का स्पर्श न करना। इतना नियम पालोगे तो आज की तिथि से ठीक एक महीने बाद तेरी विदायगी सकुशल इस गांव से हो जाएगी।' और बिना किसी से कोई बात किए माहेश्वरी जी रात १२ बजे ११ मील पैदल चलकर अपने घर सुबह पांच बजे पहुंचे। ठीक एक महीने बाद लड़की व ज्वांई को राजी खुशी विदा कर ठाकुर साहब अपनी ठकुरानी के साथ माहेश्वरी जी से मिलने कदम्ब के बास गए। ऊंट उन्होंने एक फर्लांग पर ही छोड़ दिया। माहेश्वरी जी के पैर पकड़े और क्षमा याचना की। माहेश्वरी जी भी भाव विह्वल हो गए। अपने आंसू रोक नहीं पाए। बड़ी मुश्किल से ठाकुर व ठकुरानी से अपने पैर छुड़ाए और कहा- जाओ, ५० गांवों में जितनी अनाथ विधवाएं हैं उन्हें एक-एक रजाई और दस-दस सेर अनाज बांट आओ और इतना कहकर वे अंदर चले गए।

कार्यकर्ता के सम्मान को समझने में हम जितनी देर करेंगे उतना ही समाज का अहित करेंगे। संभवत: माहेश्वरी जी समय पर बुला लिया जाता तो इलाज के लिए इतना समय नहीं लगता। संभवत: माहेश्वरी जी का सम्मान करते तो ठाकुर साहब व ठकुरानी को पश्चाताप नहीं करना पड़ता। माहेश्वरी जी उस क्षेत्र में ३० वर्ष तक जन-जन की सेवा करते रहे। वे पूजनीय हो गए और आज भी बड़े बुजुर्ग उनका आदर से स्मरण करते हैं।

सामाजिक कार्यकर्ता का सम्मान :-

कई बार हम अनजाने में अपने आत्म सम्मान और स्वाभिमान को सही ढंग से आंकने से चूक जाते हैं। हम अपने इतिहास की पहचान ठीक से करें तो संभवत: ऐसी भूल नहीं हो। हमारा इतिहास कितना पुराना है यह जानने का प्रयास सामाजिक संगठनों को करना चाहिए। इसकी जानकारी के अभाव में हम सही निर्णय करने से भटक जाते हैं और स्वयं की स्थिति हास्यास्पद बना लेते हैं। माहेश्वरी समाज का अस्तित्व महाभारत काल से पहले का बताया जाता है। अन्य समाज भी काफी पुराने समय से अस्तित्व में रहे होंगे।

कहा जाता है कि १८८५-१८८६ में किशनगढ़-अजमेर-दांदीकुई-अलवर संभाग में करीब १०० माहेश्वरी परिवार बसते थे। मध्य भारत के इंदौर, मध्य प्रांत के देवला गांव और अन्य ऐसे क्षेत्रों में माहेश्वरी-अग्रवालों की छोटी बड़ी पंचायते थी। जयपुर रियासत ने खंडेलवाल वेश्यों के एक हाईकोर्ट को मान्यता दे रखी थी और उसके फैसले की अपील सिर्फ जयुपर की कौंसिल में ही हो सकती थी। इससे प्रेरित होकर सेठ अजमेरी मलजी ने चारों तरफ खबर भेजकर खास खास लोगों को न्योता दिया ताकि किशनगढ़ में मेसरी जाति सभा का गठन किया जा सके। लगभग १०० लोग इकट्ठे हुए परंतु किशनगढ़ के राजा ने इस

सभा की अनुमति नहीं दी। सेठ अजमेरी मलजी को किशनगढ़ राजा के व्यवहार से बेहद दुख हुआ और वे अपने २१ माहेश्वरी परिवारों के साथ किशनगढ़ छोड़कर अलवर चले गए। अलवर में उन दिनों एक अंग्रेज दीवान थे। अंग्रेज दीवान ने सभी २१ परिवारों के रहने की अलवर में व्यवस्था की और सम्मान के साथ उनके आवास का प्रबंध किया और एक हलकारे को अजमेर भेजकर पोलिटिकल एजेंट से पूर्ण विवरण प्राप्त किया। दीवान के हस्तक्षेप के कारण किशनगढ़ राजा अलवर आए और सेठ अजमेरीकलजी को ससम्मान वापस किशनगढ़ ले गए। सभी २१ परिवार पुनः किशनगढ़ चले गए। अंग्रेज दीवान ने किशनगढ़ राजा को हिदायत दी कि मेसरी जाति वैश्य है, धन कमाने के साथ ये अपनी जाति को समझदारी के कानूनों में बांधना चाहते हैं, तो ब्रिटिश राज की नीति के अनुसार उन्हें मदद दी जाए। राज उसमें दखल न दें। यह ऐतिहासिक तथ्य है।

सामाजिक कार्यकर्ताओं की दृढ़ता और स्वाभिमान के प्रति उनकी जागरुकता उनका गौरव बढ़ाने में सदैव सहायक रहा है। हम स्वयं के आत्म सम्मान की सुरक्षा करेंगे तो सामाजिक व्यवस्था गौरवान्वित होगी और तब हम पूरे राष्ट्र को मजबूती प्रदान कर सकेंगे और अपनी पीढ़ियों के लिए आदर्श स्थापित कर सकेंगे। जितना दायित्व सामाजिक संगठनों का है उससे कहीं अधिक जरूरत है कि सामाजिक कार्यकर्ता अपने वजूद को समझे और स्वयं सम्मानित हो तथा पूरी समाज व्यवस्था को सम्मानित करे। अगर ऐसा हुआ तो कोई बाजार व्यवस्था हमें प्रभावित नहीं कर पाएगी। ●

पिला सकूं

● दीपचंद सुथार, मेड़ताशहर

जीवन को-
पल-पल के परिश्रम से
लोहे की तरह
तपा-तपाकर
आकार
तार का देने का कर रहा हूं
ताकि-
वीणा में कस सकूं
स्वर-
दर्द को देकर
औरों की व्यथा को
अमृत के-
दोय घूँट
पिला सकूँ।

JAI BHARAT COMMERCIAL CORPORATION

23/24, Radha Bazar Street
3rd Floor, Kolkata - 700 001

Phones : 2242-5889, 2242-7995
Fax : 2242-9813
E-mail : jbccsonthalia@yahoo.com

Manufacturers & Suppliers of :-

C.I./M.S./E.R. W/G.I./P.V.C./Rubber Pipes (Tubes), D.I. Fittings, Pipes Fittings, A.C. Pressure Pipes, C.I.D. Joints, M.S. Rounds, Tor Steel, Rubber Gasket and Rings and Pig Lead etc.

देवी शक्ति और राक्षस से पराजित, अपमानित !

✍ श्याम सुंदर बगड़िया

जिस देवी के हाथों में कमल पुष्प के साथ-साथ भयंकर शस्त्रास्त्र होते थे, मुखमंडल की सौम्यता के साथ-साथ तेजस का समन्वय रहता था, सुंदर गौरवर्ण के साथ-साथ कृष्ण वर्ण की भयंकरता भी रहती थी, वही देवी सहमी-डरी, छुई-मुई, पराजित-दमित, नुमाइश की वस्तु मात्र होती जा रही है। आश्चर्य? जिस मानव-शिशु को वह नौ महीनों की तपस्या कर इस धराधाम का दर्शन कराती है, अपनी दूध - धारा से पालन पोषण करती है, अपना अनुराग-प्यार उड़ेलती है, वही मानव शिशु शनैः शनैः व्यस्क होते होते इतना दुष्ट, अधम, पातकी कैसे हो जाता है कि वह उसी जननी को बलात्कार की अग्नि में झोंक देता है, उसके उत्पीड़न की ऐसी यातनाएं ईजाद करता है कि शैतान की रूह भी पनाह मांग ले। इससे अधिक लज्जा की बात, खून खौलने की बात किसी तनिक भी विचारशील व्यक्ति के लिए शायद हो ही नहीं सकती।

इस तरह की भयावह खबरें पढ़-सुनकर दिल को गहरी, बहुत गहरी पीड़ा होती है और तब सोचने पर मजबूर करती हैं कि आखिर ऐसा क्यों होता आ रहा है सदियों से, आखिर क्यों?

इस धरा को, देश को, मानवता को क्या लाभ हुआ राम, कृष्ण, महावीर, बुद्ध, ईसा, मूसा, मोहम्मद आदि दिव्य विभूतियों के अवतरण से, अजस्र उपदेशों- मंत्रों से, धार्मिक पूजन अनुष्ठान से, पुस्तक और ग्रंथों से? यदि नारी का, जननी-माता-बहिना का ऐसा ही हश्र होता रहना तयशुदा है तो अब समय आ गया है जब हम इन अवतारी शक्तियों को सादर कह दें नहीं आवश्यकता है 'धर्म संस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे' हेतु धराधाम पर आने, कष्ट उठाने की। जब ढाक के तीन पात होते ही हैं तो क्या लाभ उनके आगमन का, एहसान का ?

हुआ होगा कभी किसी सीता का अपहरण, किसी अहल्या का सामाजिक बहिष्कार, किसी द्रौपदी का राजसभा में चीरहरण, आज तो प्रत्येक गलियारे-चौराहे पर खड़ा है रावण सीताओं का अपहरण करने। घर-घर में गौतम जला रहा है, निष्कासित कर रहा है अहल्याओं को, अनवरत सभाओं-दरबारों (और थानों) में राज्याश्रित धर्मगुरुओं-नीतिज्ञों की उपस्थिति में दुश्शासनों द्वारा उपहासित-अपमानित हो रही हैं द्रौपदियां। क्या विधाता ने नारी की किस्मत केवल आंसू, आह, आर्तनाद की कलम से लिखी है? ऐसा क्यों? नारी को इतनी पीड़ा क्यों? लांछन क्यों? यातना क्यों?

यह कहना भी भ्रांति होगी कि नारी उत्पीड़न, नारी-नरक प्राचीन काल की देन है या आधुनिक युग का तोहफा है। कमोवेश सदियों पूर्व से ऐसा होता आ रहा है, यह जरूर है कि वर्तमान युग में जिस तीव्र गति से नारी अस्मिता मीडिया, सिनेमा, विज्ञापनों, क्लबों में बेलगाम परोसी जा रही हैं, बेची जा रही है- फैशन, विकास, कला, नारी स्वातंत्र्य के नाम पर- वह भयावह स्थिति चिंतनीय है। ताज्जुब तो तब होता है जब शिक्षित आधुनिक नारी यह सब होने के बावजूद गौरवान्वित, महिमा मंडित का बोध करती है। नग्न (अथवा अर्धनग्न) चित्रों को देखकर उसे अपने में विशिष्टता का बोध होता है। हां, कभी-कभी वह लोक दिखावे या भारी भरकम मुआवजे की खातिर इन सबका कानूनी प्रतिकार (दिल से नहीं) भी करती दिखाई पड़ती है। शायद ऐसा वह इस उद्देश्य से करती है कि उसकी पहचान बने, इसकी चर्चा हो, उसे bold समझा जाए। समाज भी दबे छिपे स्वर में भले ही पीठ पीछे बुराई करता है, किंतु प्रत्यक्ष में तो ऐसी ही विदुषी 'बोल्ड' महिलाओं के तारीफ के पुल बांधता है।

क्या हमारा जमीर हमसे कुछ कह रहा है, कुछ तकाजा कर रहा है, कुछ उपेक्षा करता है। सही मानो तो आवश्यकता है संतुलित विचारधारा की, फैशन और अश्लीलता में पार्थक्य समझने की, सुंदरता और नग्नता को सही अर्थ देने की, मस्ती का आलम और मस्ती के भोंडे इजहार की सही परिभाषा को जानने की। कहीं ऐसा न हो कि बाजारों की वेश्यावृति और आधुनिक परिवारों की (पैसा, फैशन, आचार-व्यवहार के नाम पर, स्वच्छंदता के नाम पर) अति आधुनिकता में कोई अंतर ही न रह जाये। खुशबू उड़ाते फूल को, इतराती तितली को भला कोई योगी भी क्यों न देखना-सूंघना चाहेगा, क्यों न विचलित हो जाएगा ? सहज उपलब्ध आकर्षक वस्तु के प्रायः हर कोई हथियाना क्यों न चाहेगा ?

किसी कवि की उक्ति कितनी सटीक है -

यदि नंगापन ही आज का फैशन है,
तो जानवर इस दौड़ में हमसे कहीं आगे है।

प्राचीन और अर्वाचीन भेद-विभेद त्याग कर सही सम्यक् सोच-बोध हो यह अत्यंत आवश्यक है । नग्नता का क्या कोई तल है, कभी विचार किया है? कितने वस्त्र उतारेंगे, कितने आभूषण रहित होंगे - कोई सीमा है।

अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी
आंचल में है दूध और आंखों में पानी।

कवि की यह वाणी अर्धसत्य है। किसी भी युग के परिप्रेक्ष्य है। आज की युग की या किसी भी युग की जागृत नारी का उद्घोष है, होना चाहिए, होगा ही प्रखरता से।

नारी जीवन कभी रहा था शायद शापित
आंचल में अब जोश और आंखों में शोणित।

व्यवसाय में सेवा या सेवा में व्यवसाय

✍ गौरी शंकर कायां, कार्यकारिणी सदस्य, अ.भा. मारवाड़ी सम्मेलन

कोलकाता महानगरी का मारवाड़ी समाज के उत्थान में बहुत बड़ा योगदान रहा है। राजस्थान, हरियाणा से निकलकर जीविका के संधान में जब मारवाड़ी निकले थे तो कोलकाता ने उन्हें जीविकोपार्जन का संसाधन उपलब्ध कराया था। आज से महज तीस-चालीस साल पहले तक दिशावर को निकले मारवाड़ियों का पहला पड़ाव कोलकाता होता था।

मारवाड़ी समाज के जिन विभूतियों ने व्यापार वाणिज्य में उंचाइयों को छुआ उनका संपर्क किसी न किसी रूप में कोलकाता से रहा। चाहे बिड़ला परिवार हो या गोयनका परिवार, डालमिया हों या पोद्दार। आज विश्व के समृद्धतम लोगों की सूची में तीसरे नंबर पर आने वाले लक्ष्मी नारायण मित्तल का जन्म भी कोलकाता में ही हुआ।

अंग्रेजी शासन के दौरान कोलकाता चूंकि व्यापार-वाणिज्य का प्रमुख केन्द्र था इसलिए यहां आने की प्रवणता अधिक थी। पूर्वी और पूर्वोत्तर क्षेत्र का सबसे बड़ा बाजार भी कोलकाता ही था।

आज स्थिति बदली है। कोलकाता में मारवाड़ियों का आना कम हुआ है। मुंबई, दिल्ली, गुजरात, बंगलोर, हैदराबाद आदि व्यवसाय के नये ठिकाने हो गये हैं। भूमंडलीकरण व सूचना क्रांति, तकनीकी विकास ने विदेशों में जाकर व्यवसाय के रास्ते भी खोले हैं फिर भी कोलकाता का अपना महत्व अब तक कायम है।

व्यापार-वाणिज्य में समृद्धि देने के साथ-साथ कोलकाता ने मारवाड़ियों में सामाजिक-सांस्कृतिक चेतना के विकास में भी योगदान दिया। उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध में बंगाल में हुए नवजागरण का सर्वाधिक प्रभाव बंगाली समाज के बाद मारवाड़ी समाज पर पड़ा। यह प्रभाव इतना प्रबल था कि मारवाड़ी समाज के कतिपय चिंतक सदियों की रुढ़ियों, कुरीतियों, अंधविश्वासों से समाज को मुक्त करने हेतु कमर कस कर निकल पड़े। चिन्तन की नई धारा का उत्स कोलकाता में था, लेकिन उसका असर पूरे भारत में दिखाई पड़ता था।

इसी कोलकाता में समाज सुधार आन्दोलनों की शुरूआत हुई जिसने बहुत सी प्राचीन प्रथाओं को खत्म कर आधुनिक व्यवस्था की नींव डाली। अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की स्थापना और इसके प्रारंभिक कार्यों को देखें तो उस बात की सत्यता का पता चल जाएगा। पर्दा प्रथा, बाल विवाह, धन के अपव्यय रोकने, शिक्षा विशेषकर बालिकाओं की शिक्षा को आवश्यक करने एवं व्यावसायिकता के साथ सामाजिकता व मानवीयता को सम्मानजनक रूप से प्रतिष्ठित करने में सम्मेलन की महती भूमिका रही है।

अपने जीवन के अनुभवों से बता सकता हूं कि कोलकाता में सामाजिकता और मानवीयता का कितना अहम् स्थान था। अपने प्रारंभिक दिनों में सामाजिक क्षेत्र के लोगों के बारे में जानने, समझने और उनका सान्निध्य पाने की उत्कंठा हमेशा बनी रहती थी। देखता था किस तरह व्यापक समाज के हित के लिए वे रात-दिन अथक परिश्रम करते थे और वह भी नि:स्वार्थ भाव से, आज कोलकाता में मारवाड़ी समाज के गौरवचिन्ह मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी, विशुद्धानन्द अस्पताल, विशुद्धानन्द सरस्वती विद्यालय की महिमा भले घट रही हो, पर एक समय इनकी स्थापना और संचालन में भागीदारी पाने के लिए लोग लालायित रहते थे।

व्यावसायिक उन्नति के साथ समाज और सामाजिकता में बढ़ोत्तरी की आशा थी और इसीलिए मैं स्वयं सामाजिक क्षेत्र में सक्रिय भी हुआ था पर आज जब परिस्थितियों का आकलन करता हूं तो पाता हूं कि कहीं कोई ऐसी विसंगति जरूर है जिसने बड़ा उलटफेर कर दिया है। आर्थिक स्थिति चाहे जितनी मजबूत हो रही हो पर समाज और सामाजिकता के विषय में सोचने की मानसिकता निरंतर घट रही है।

ऐसा नहीं है सामाजिक संस्थाओं की कमी है या सामाजिक लोगों का अभाव है बल्कि सच्चाई तो यह है कि सामाजिक संस्थाओं की बाढ़-सी आई हुई है और इसी अनुपात में सामाजिक लोगों की संख्या भी बढ़ रही है पर ये सब संदेह के घेरे में हैं। आम आदमी इन संस्थाओं और सामाजिक लोगों पर विश्वास नहीं कर रहा।

अविश्वास की यह भावना इतनी प्रबल है कि सच्चे समाजसेवी भी अपने को असहाय पा रहे हैं। वे जहां जाते हैं वहां एक ही बात आड़े आती है- सेवा व्यवसाय है।

मेरी नजर में सेवा जैसी पवित्र भानवा के लिए व्यवसायिकता का आरोप शर्मनाक है, वह भी एक ऐसे समाज के लिए जिसका सेवा के क्षेत्र में ऐतिहासिक योगदान रहा हो, लेकिन वास्तविकता को देखते हुए कुछ कह पाने की स्थिति में नहीं हूं।

भारत का कोई ऐसा कोना नहीं है जहां मारवाड़ी नहीं है और इसी कड़ी में यह भी ध्रुव सत्य है कि मारवाड़ियों ने हर कोने में अपनी सेवाभावना का ठोस सबूत पेश किया है। धर्मनगरियों में स्थापित मंदिरों, धर्मशालाओं की तादाद हो या महानगरियों में विद्यालयों, अस्पतालों की तादाद मारवाड़ियों के नाम हर जगह स्वर्णाक्षरों में अंकित हैं। फिर अपनी कीर्ति को धूमिल करने का प्रयास क्यों ? यही सवाल मेरे लिए अबूझ पहेली की तरह है।

सामाजिक समारोहों, धार्मिक समारोहों में जाना मेरी आदत है, बाध्यता भी और एक तरह से सामाजिकता का तकाजा भी पर वहां जिस प्रकार से धन के अपव्यय का नजारा देखता हूं सच कहूं तो अपनी उपस्थिति पर ही शर्मसार हो उठता हूं।

एक समय घर के लड़के-लड़कियों की शादी में सामाजिक संस्थाओं को दान देने की प्रथा थी और यह सामाजिक कार्यों के लिए इंधन की तरह होता था पर अब निमंत्रण पत्र से लेकर स्वागत समारोह तक खर्चे का जो रूप देखता हूं तो आंखें चौंधिया जाती

हैं। **क्या करोड़ों के खर्चे का एक हिस्सा सच्चे सामाजिक कार्यों में दान देने से महिमा घट जाएगी या समारोह का आकर्षण खत्म हो जाएगा ?**

जीवन में बहुत सी संस्थाओं से जुड़ने, काम करने एवं लोगों से मिलकर उनकी भावनाओं को समझने का मौका मिला है जिनमें मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी, विकास, बनबन्धु परिषद् आदि है। अभी भी मारवाड़ी बालिका विद्यालय से जुड़ा हुआ हूं पर कभी सेवा में व्यवसाय की भावना मन में नहीं आई।

मारवाड़ी समाज की युवा पीढ़ी ऊर्जावान, प्रतिभावान एवं नए जमाने के अनुरूप नई सोच का वाहक है। वह परंपरागत अवधारणाओं से हटकर नए क्षेत्रों में अपनी उपस्थिति दर्ज करा रहा हैं। उसमें समाज के लिए नया कुछ करने की उत्कंठा है। जरूरत है युवा पीढ़ी की ऊर्जा, प्रतिभा और सोच को समाज के व्यापक हित में प्रयोग करने की और यह काम योग्य नेतृत्व ही कर सकता है। हम योग्य नेतृत्व तैयार करें समाज अपने आप बदल जाएगा।●

रजत रश्मि २००६

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी महिला सम्मेलन

१२वां राष्ट्रीय अधिवेशन

७-८ जनवरी २००६

नागपुर महाराष्ट्र

प्रमुख अतिथि
श्री विजय दर्डा,
संसद सदस्य

विशेष अतिथि

श्री मोहनलाल तुलस्यान	श्री सीताराम शर्मा
राष्ट्रीय अध्यक्ष	राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन	
श्रीमती प्रमीला सराफ	श्रीमती रेणु शर्मा
समाज सेविका, दिल्ली	समाज सेविका, नागपुर

श्रीमती ज्योत्सना दर्डा
संस्थापक अध्यक्षा, सखीमंच, लोकमत

आमंत्रित अतिथि

श्रीमती सुशीला मोहनका, श्रमती सरोज बजाज, श्रीमती प्रेमा पंसारी, श्रीमती जया डोकानिया, श्रीमती अरुणा जैन, श्रीमती रेखा राठी, श्रीमती पुष्पा गुप्ता, श्रीमती स्मिता चिचानी, श्रीमती शारदा मेहादिया

निवेदक

श्रीमती सावित्री बाफना	श्रीमती स्मिता चिचानी	श्रीमती शारदा मेहाडिया
राष्ट्रीय अध्यक्ष	महाराष्ट्र प्रादेशिक अध्यक्ष	नागपुर शाखा अध्यक्ष

आयोजक
नागपुर शाखा

शब्द-शब्द में गुंजन आपके प्यार की, स्वर स्वर में आत्मीयता आपके अपनत्व की।
आपके आगमन से रोशनी होगी सहस्र दीयों की, रजत रश्मि से किरणे प्रस्फुटित होगी आपके स्नेह की।
नारी शक्ति, राष्ट्र शक्ति

कहानी

सबसे बड़ा दर्द

✍ नथमल केडिया, साहित्य महोपाध्याय

लम्बा कद, छरहरा बदन, गुलाबी आभा लिए गौर वर्ण और चेहरे पर तो जैसे नूर ही टपकता हो साथ ही चमड़ी इतनी पतली कि पानी भी पीये तो गले में उतरता दिखाई दे। और भी जवानी में कदम रखने को उत्सुक १४-१५ वर्ष की उम्र समझदारी में भी कोई कोर-कसर नहीं। कहना चाहिए खुदा ने उसे भरपूर बख्सा था कहीं कोई कोताही नहीं की थी। अब्बा डील डोल के लम्बे-चौड़े पंजाबी पठान, सीकर राज के सर्वेसर्वा दीवान, उनके दो लड़के २०-२२ वर्ष के कद्दावर जवान तथा यह एक लड़की। लड़के अब्बा को बहुत प्यारे पर बेटी पर तो उनका प्यार उमड़ा ही पड़ता था। वह ऐसा सामन्ती समय था जब राजगद्दी पर बैठते तो राजा ही थे- राज भी उनका ही कहलाता था पर दीवान को अपरिमित अधिकार प्राप्त थे। किसी को जान से मार देने पर भी कोई चीं-चप्पड़ करने वाला नहीं था। हां तो पठान मुसलमान होने की वजह से दीवानजी को सब खान जी - खान जी कहकर सम्बोधित करते थे जो समय पाकर खांजी - खांजी हो गया था। हां उनकी जो एक बात जो फतेहपुर वासियों को आज तक समझ में नहीं आई वह यह कि दीवानजी सीकर शहर में नहीं रहकर उससे ३२ मील दूर फतेहपुर में स्थायी वास क्यों करते थे ? अस्तु फतेहपुर में उन्होंने अपनी विशाल हवेली बनवायी- दसों नौकर चाकर-पांच सात ऊंट ऊंटनियां- रथ व वहेलियां-सजीले हृष्ट-पुष्ट बैलों की दो-दो तीन-तीन जोड़ियां जो आराम के साथ जल्द से जल्द गन्तव्य पर पहुंचा दे, आधे दर्जन घोड़े-घोड़ियां गायों का छेना, दूध-दही की भरमार पहरे पर बंदूक धारी राजपूत ठाकर-रोवदाव का क्या ठिकाना, सच पूछा जाय तो असली राजा वे ही थे।

पर उस दिन फतेहपुर के लोगों ने एक अजूबी घटना घटी देखी, उसके पहले अपनी आंखों से तो क्या अपने बाप-दादाओं के मुंह से भी ऐसी घटना नहीं सुनी थी उन्होंने। हुआ यह कि अल्ल सुबह जब खांजी की बेटी जग कर अपने बिस्तर से उठकर खड़ी हुई और अपने आलस्य को हटाने के लिए अपने दोनों हाथों को सिर के ऊपर टानते हुए अंगड़ाई ली तथा हाथों को वापिस नीचे करना चाहा तो वे वहीं अकड़ गये- नीचे नहीं हुए। क्षणों के भीतर लड़की दहशत और दर्द के मारे चिल्लाने लगी- घर के सभी लोग दौड़कर आये खानजी, उनकी पत्नी, दोनों बेटे घर के नौकर-चाकर सभी। उन्होंने देखा लड़की को- हाथ अंगड़ाई की मुद्रा में सिर पर टंगे हुए- किसी के छू भर लेने के साथ दर्द सौ गुना और लड़की की चिल्लाहट-चीख में तब्दील।

एक आध घड़ी में ही इस बात की चर्चा पूरे गांव में फैल गई - खानजी का रुतबा और प्रभाव भी इतना कि पचासों लोग दौड़ पड़े। एक किसी सयाने को बुलाकर लाया तो दूसरा किसी ओझा को तीसरा वैद्य को तो चौथा डाक्टर को। पर लड़की किसी को अपने पास भी फटकने दे तब ना। बस, वह मारे दर्द के जोर-जोर से चिल्ला रही है और लोग इधर-उधर हतबुद्धि से खड़े देख रहे हैं। सभी का यह पक्का विश्वास हो चुका था कि इस पर किसी जबरदस्त भूत या जिन्न का साया पड़ गया है। कहना नहीं होगा- इसी मज में एक दो मौलवी भी आकर जोर-शोर से आयते नुमा बोल मुंह से बड़बड़ा रहे थे।

बेचारे खानजी सिर पर हाथ धरे मायूस बैठे थे कि इतने में उनसे किसी ने कहा- खां जी ! गांव के बाहर पश्चिम के नाके जो फकूड़ रहता है वह बड़ा सिद्ध है- उसको आप बुलाये वह आपकी बेटी को ठीक कर सकता है। उसका इतना कहना था कि दो-चार लोग दौड़ पड़े और उस फकूड़ को बुलाने।

बीस-पच्चीस मिनट में फकूड़ आया तब तक वह लड़की दर्द के मारे बेहाल हो चुकी थी। कई ओझा लोग भूत को भगाने का मंत्र पढ़ रहे थे और भी कोई कुछ कर रहा था कोई कुछ। फकूड़ ने आकर देखा तो सारा माजरा उसकी समझ में आ गया। और जब उससे खांजी ने पूछा तो उसने इतमीनान से कहा- खना जी ! मैं आपकी बेटी को शर्तिया ठीक कर सकता हूं।

खान ने तुरंत कहा- तो ठीक कर दो। फकूड़ ने कहा- मैं इसको ठीक तो कर दूंगा, पर बदले में आपकी यह सांड़ (ऊंटनी) मुझे देनी होगी।

खान की वह ऊंटनी बहुत ही ऊंची नस्ल की थी और उनको बहुत प्यारी भी। वे उसको किसी भी अवसर पर किसी को देने की सोच भी नहीं सकते थे। पर यह उनकी प्यारी बेटी का मामला था जो हर क्षण दर्द के मारे बेतरह चीख रही थी।

खानजी ने उस फकूड़ से काह- मुझे मंजूर है। अब वह फकूड़ उपस्थित लोगों को सम्बोधन कर बोला- अभी तो इसका दर्द ठीक करने के लिए कोई भी माई का लाल आगे आ जाय। फिर मेरे ठीक करने के बाद कोई यह न कहे कि यह काम तो मैं भी कर देता। पर किसी की अक्ल काम कर रही हो तो वह आगे आए। और तब फकूड़ का इलाज शुरू हुआ। उसने बहुत सारी धूप लड़की के चारों ओर जलाकर, धुआं कर चकूर काटना शुरू कर दिया। उस समय वह अपने मुंह से जोर-जोर से मंत्रों के उच्चारण करने का भी नाटक कर रहा था। लोग उसके चारों ओर खड़े उत्सुकता और कौतुहल से उसके इलाज करने का ढंग देख रहे थे कि कौन-सा भूत आसमान से उतरकर लड़की को ठीक करता है। एकाएक उस फकूड़ ने जोर से चिल्लाकर उस लड़की के पाजामे की रस्सी की तरफ अपना हाथ बढ़ाया।

पलक भी नहीं झपक पाई कि उस लड़की के दोनों हाथों ने झटके के साथ अपने पाजामे को पकड़ लिया।

अब ! कहां - उसके हाथों में कहीं कोई दर्द नहीं।

और वह फकूड़ एक मिनट का भी विलम्ब किये बगैर खांजी की ऊंटनी खुलवा उस पर बैठकर वह जा - वह जा।

वह जानता था कि स्त्री की इज्जत उसके किसी भी दर्द से बड़ी है।

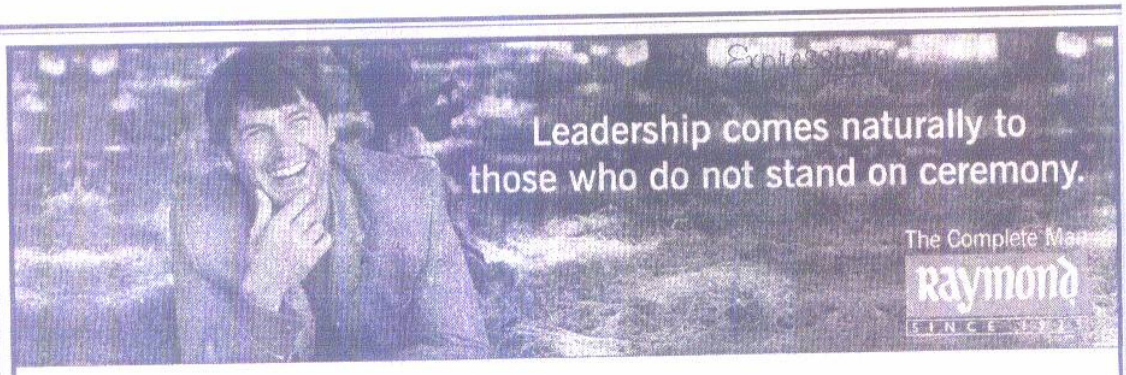

THE
Raymond
SHOP

172, Rash Behari Avenue, Kolkata- 700 029
Phone : 2463-1051, 2466-6267/7240

As soft as the
voice of an angel.

The Complete Man
Raymond
SINCE 1925

Selling agents for Orissa

SAROJ CORPORATES

Bhawsinka House
Mata Math, Cuttuck

सम्मेलन के विगत अधिवेशन और पदाधिकारी

वर्ष	स्थान	सभापति	प्रधानमंत्री
१९३५	कलकत्ता	स्व. रायबहादुर श्री रामदेव चोखानी कलकत्ता	स्व. श्री भूरामल अग्रवाल
१९३८	कलकत्ता	स्व. श्री पद्मपत सिंघानिया कानपुर	स्व. श्री ईश्वरदास जालान
१९४०	कानपुर	स्व. श्री बद्रीदास गोयनका कोलकाता	स्व. श्री रामेश्वरलाल नोपानी
१९४१	भागलपुर	स्व. श्री रामदेव पोद्दार बंबई	स्व. श्री रामेश्वरलाल नोपानी
१९४३	दिल्ली	स्व. श्री रामगोपाल मोहता बीकानेर	स्व. श्री बजरंगलाल लाठ
१९४७	बंबई	स्व. श्री बृजलाल बियानी अकोला	स्व. श्री रामेश्वरलाल केजड़ीवाल (४९ तक) श्री नंदकिशोर जालान (१९५०-५३)
१९५४	कलकत्ता	स्व. सेठ श्री गोविंददास मालपानी जबलपुर	श्री नंदकिशोर जालान
१९६२	कलकत्ता	स्व. श्री गजाधर सोमानी बंबई	स्व. रघुनाथ प्रसाद खेतान
१९६६	पूना	स्व. श्री रामेश्वरलाल टांटिया कलकत्ता	स्व. श्री रामकृष्ण सरावगी (१९७० तक) श्री दीपचंद नाहटा (१९७१ से १९७३)
१९७४	रांची	स्व. श्री भंवरमल सिंघी कलकत्ता	श्री नंदकिशोर जालान
१९७६	हैदराबाद	स्व. श्री भंवरमल सिंघी कलकत्ता	श्री नंदकिशोर जालान
१९७९	बंबई	स्व. ऑ. मेजर श्री राम प्रसाद पोद्दार बंबई	स्व. श्री बजरंगलाल जाजू
१९८२	जमशेदपुर	श्री नंदकिशोर जालान कोलकाता	स्व. श्री बजरंगलाल जाजू श्री रतन शाह (संयुक्त)
१९८६	कानपुर	श्री हरिशंकर सिंघानिया दिल्ली	श्री रतन शाह
१९८९	रांची	स्व. श्री रामकृष्ण सरावगी, कलकत्ता	स्व. श्री दुलीचंद अग्रवाल
१९९३	दिल्ली	श्री नंदकिशोर जालान	श्री दीपचंद नाहटा
१९९७	हैदराबाद	श्री नंदकिशोर जालान	श्री सीताराम शर्मा
२००१	कानपुर	श्री मोहनलाल तुलस्यान, कलकत्ता	श्री सीताराम शर्मा
२००४	मुम्बई	श्री मोहनलाल तुलस्यान	श्री भानीराम सुरेका

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

पदाधिकारी (२००४-०६)

सभापति
श्री मोहनलाल तुलस्यान

महामंत्री
श्री भानीराम सुरेका

कोषाध्यक्ष
श्री हरिप्रसाद कानोड़िया

उपसभापति
श्री सीताराम शर्मा, डॉ. जयप्रकाश शंकरलाल मुंदड़ा (विधायक)
श्री ओंकारमल अग्रवाल, श्री नन्दलाल रुंगटा
श्री जगदीश प्रसाद अग्रवाल, श्री बालकृष्ण गोयनका

संयुक्त महामंत्री
श्री राम अवतार पोद्दार
श्री राज के पुरोहित

कार्यकारिणी समिति सदस्य

श्री इंदरचंद संचेती
श्री राजेश खेतान
श्री गौरीशंकर कायां
श्री हरिप्रसाद बुधिया
श्री द्वारका प्रसाद डाबरीवाल
श्री प्रह्लादराय अग्रवाल
श्री हरिप्रसाद अग्रवाल
श्री आत्माराम सोंथलिया
श्री बालकृष्ण माहेश्वरी
श्री रामगोपाल बागला
श्री सुभाषचंद्र अग्रवाल
श्री सूर्यकरण सारस्वा
श्री शिवशंकर खेमका
श्री वीरेन्द्र प्रकाश धोका, महाराष्ट्र
श्री सतीश देवड़ा
श्री अरुण कुमार गुप्ता
श्री प्रेमचंद सुरेलिया
श्री जुगलकिशोर जैथलिया
श्री बंशीलाल बाहेती
श्री नारायण प्रसाद अग्रवाल (बिहार/बंगलोर)
श्री राजकुमार सरावगी
श्री सत्यनारायण शर्मा (छत्तीसगढ़)
श्री सांवरमल अग्रवाल
श्री गिरधारीलाल जगतरामका
श्री सत्यनारायण सिंघानिया (उत्तर प्रदेश)
श्री बनवारीलाल सोती
श्री सुभाष मुरारका
श्री ओमप्रकाश पोद्दार
श्री राजेन्द्र खण्डेलवाल
श्री दिलीप गांधी (महाराष्ट्र)
श्री रामदयाल मस्करा (बिहार)
श्री मौजीराम जैन (उड़ीसा)
श्री मंगलचंद टांटिया (मध्य प्रदेश)
डॉ. रामविलास साबू (आंध्र प्रदेश)
श्रीमती प्रेमलता खण्डलवाल (पूर्वोत्तर)
श्री गोविन्द प्रसाद डालमिया (देवघर)
श्री राधेश्याम रेणवा
श्री विश्वनाथ धानुका

(पदेन)
पूर्व अध्यक्ष एवं मंत्री

श्री हरिशंकर सिंहानिया (पूर्व अध्यक्ष)
श्री हनुमान सरावगी (पूर्व अध्यक्ष)
श्री नन्दकिशोर जालान (पूर्व अध्यक्ष)
श्री दीपचंद नाहटा (पूर्व महामंत्री)
श्री रतन शाह (पूर्व महामंत्री)
श्री सीताराम शर्मा (पूर्व महामंत्री)

प्रांतीय अध्यक्ष एवं मंत्री

श्री कैलाश प्रसाद झुनझुनवाला (अध्यक्ष, बिहार)
श्री कमल नोपानी (मंत्री, बिहार)
श्री सोम प्रकाश गोयनका (अध्यक्ष, उत्तर प्रदेश)
श्री गोपाल सूतवाला (मंत्री, उत्तर प्रदेश)
श्री विजय कुमार मंगलुनिया (अध्यक्ष, पूर्वोत्तर)
श्री बाबूलाल गग्गड़ (मंत्री, पूर्वोत्तर)
श्री सुरेन्द्र कुमार डालमिया (अध्यक्ष, उत्कल)
श्री शिव कुमार अग्रवाल (मंत्री, उत्कल)
श्री रमेश कुमार बंग (अध्यक्ष, आंध्र प्रदेश)
श्री नरेशचन्द्र विजयवर्गीय (मंत्री, आंध्र प्रदेश)
श्री मुकुन्ददास माहेश्वरी (अध्यक्ष, मध्य प्रदेश)
श्री रमेश कुमार गर्ग (मंत्री, मध्य प्रदेश)
श्री रमेशचंद्र गोपीकिशन बंग (अध्यक्ष, महाराष्ट्र)
श्री ललित सकलचन्द गांधी (मंत्री, महाराष्ट्र)
श्री लोकनाथ डोकानिया (अध्यक्ष, प. बंगाल)
श्री गोपाल अग्रवाल (मंत्री, प. बंगाल)
श्री गोविन्द प्रसाद डालमिया (अध्यक्ष, झारखंड)
श्री धर्मचंद्र जैन रारा (मंत्री, झारखंड)
श्री कैलाशमल दुग्गड़ (अध्यक्ष, तमिलनाडु)
श्री विजय गोयल (महामंत्री, तमिलनाडु)

स्थायी समिति सदस्य

श्री राजेश पोद्दार, श्री गौरीशंकर सिंघानिया, श्री जयगोविन्द इंदोरिया, श्री कैलाश टिबड़ेवाला, श्री डूंगरमल सुरेका, श्री नथमल बंका, श्री राजाराम शर्मा, श्री शम्भु चौधरी, श्री नरेन्द्र तुलस्यान, श्री ओमप्रकाश अग्रवाल, श्री भगवान खेमका, श्री विश्वनाथ गुप्ता, श्री बसन्त कुमार नाहटा, श्री नारायण जैन, श्री शांतिलाल जैन, श्री सुशील ओझा, श्री मुकुन्द राठी, श्री प्रदीप ढेडिया, श्री बासुदेव यादुका, श्री पूरनमल तुलस्यान, श्री मनीष डोकानिया।

● **सम्मेलन के पदाधिकारी इस समिति के पदाधिकारी हैं।**

उप-समितियां (२००४-२००६)

● **अध्यक्ष, उपाध्यक्ष व महामंत्री निम्न सभी उपसमितियों में पदेन सदस्य रहेंगे।**

संगठन व सदस्यता बनाने हेतु उपसमिति :

संयोजक : श्री सुभाष मुरारका, सदस्य : श्री विश्वनाथ गुप्ता, श्री रामगोपाल बागला, श्री डुंगरमल सुरेका एवं सभी प्रांतीय अध्यक्ष व मंत्रीगण।

सम्मेलन भवन निर्माण उपसमिति :

संयोजक : श्री विश्वम्भर दयाल सुरेका, सदस्य : सर्वश्री द्वारका प्रसाद डाबरीवाल, हरिप्रसाद कानोड़िया, इन्दरचंद संचेती, जुगल किशोर काजड़िया, प्रह्लाद राय अग्रवाल, राजकुमार सरावगी, रामचंद्र बडोपालिया, सुशील कुमार गोयनका।

कानूनी सलाहकार उपसमिति :

संयोजक : श्री हरिप्रसाद कानोड़िया, सदस्य- सर्वश्री हरिशंकर सिंघानिया, इन्दरचंद संचेती, नंदकिशोर जालान

भंवरमल सिंघी समाज सुधार पुरस्कार उपसमिति :

संयोजक : श्री नंदकिशोर जालान, सदस्य- सर्वश्री इन्दरचंद संचेती, मोहनलाल चोखानी, रतनलाल शाह, श्रीमती सुष्मिता गुप्ता

राजस्थानी भाषा एवं साहित्य पुरस्कार उपसमिति :

संयोजक : डॉ. कल्याणमल लोढ़ा, सदस्य- सर्वश्री नंदकिशोर जालान, रतनलाल शाह

राजस्थान धरोहर संरक्षण उपसमिति :

संयोजक : श्री नन्दलाल रुंगटा (चाईबासा)

डायरेक्टरी प्रकाशन उपसमिति :

संयोजक : श्री प्रदीप ढेडिया, सदस्य : श्री रामगोपाल बागला, श्री गोपाल अग्रवाल, श्री सूर्यकरण सारस्वा

प्रचार प्रसार एवं मीडिया उपसमिति

संयोजक : श्री राजेन्द्र खण्डेलवाल, सदस्य : श्री नारायण जैन, श्री नरेन्द्र तुलस्यान

कला संस्कृति उपसमिति

संयोजक : श्री पूरनमल सिंघवी

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

प्रांतीय अध्यक्ष एवं मंत्रीगण

बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन, पटना
अध्यक्ष, **श्री कैलाश प्रसाद झुनझुनवाला**
मंत्री, **श्री कमल नोपानी**

उत्तर प्रदेश प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन, कानपुर
अध्यक्ष, **श्री सोमप्रकाश गोयनका**
मंत्री, **श्री गोपाल सूतवाला**

पूर्वोत्तर प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन, गुवाहाटी
अध्यक्ष, **श्री विजय कुमार मंगलूनिया**
मंत्री, **श्री बाबूलाल गग्गड़**

उत्कल प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन, राउरकेला
अध्यक्ष, **श्री सुरेन्द्र कुमार डालमिया**
मंत्री, **श्री शिव कुमार अग्रवाल**

आंध्र प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन, हैदराबाद
अध्यक्ष, **श्री रमेश कुमार बंग**
मंत्री, **श्री नरेशचन्द्र विजयवर्गीय**

मध्य प्रदेश प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन, जबलपुर
अध्यक्ष, **श्री मुकुन्ददास माहेश्वरी**
मंत्री, **श्री रमेश कुमार गर्ग**

महाराष्ट्र प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन, मुम्बई
अध्यक्ष, **श्री रमेशचंद्र गोपी किशन बंग** (एम.एल.ए)
मंत्री, **श्री ललित सकलचंद गांधी**

पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन, कोलकाता
अध्यक्ष, **श्री लोकनाथ डोकानिया**
मंत्री, **श्री गोपाल अग्रवाल**

झारखंड प्रांतीय मारवाड़ी सम्मेलन, रांची
अध्यक्ष, **श्री गोविन्द प्रसाद डालमिया**
मंत्री, **श्री धर्मचन्द जैन रारा**

तमिलनाडु प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन, चेन्नई
अध्यक्ष, **श्री कैलाशमल दुगड़**
मंत्री, **श्री विजय गोयल**

मारवाड़ी सम्मेलन फाउण्डेशन ट्रस्टी

१. श्री नन्दकिशोर जालान
२. श्री इन्द्रचंद संचेती
३. श्री श्यामसुन्दर स्वाईका
४. श्री भगवती प्रसाद झुनझुनवाला
५. श्री कैलाश बगड़िया
६. श्री महेश कुमार सहरिया
७. श्री महावीर प्रसाद जालान
८. श्री दीपचन्द नाहटा
९. श्री मोहनलाल तुलस्यान (पदेन)
१०. श्री सीताराम शर्मा
११. श्री भानीराम सुरेका (पदेन)
१२. श्री नंदलाल रुंगटा
१३. श्री हरि प्रसाद कानोड़िया
१४. डा. जयप्रकाश शंकरलाल मुन्थड़ा
१५. डा. राम विलास साबू

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

के ७१वें स्थापना दिवस पर

"नयी अर्थव्यवस्था, नये अवसर"

विषयक गोष्ठी का उद्घाटन करेंगे

माननीय श्री **अशोक गहलोत**, पूर्व मुख्यमन्त्री, राजस्थान।

माननीय श्री **प्रबोधचन्द्र सिन्हा**, संसदीय कार्य एवं आबकारी मन्त्री, प०बंग सरकार मुख्य वक्ता होंगे।

इस अवसर पर पूर्व सभापति व सुप्रसिद्ध उद्योगपति एवं समाज सेवी पद्मभूषण **श्री हरिशंकर सिंहानिया** को उनकी देश, उद्योग एवं समाज के प्रति सेवा एवं योगदान के लिए सम्मानित किया जाएगा।

अध्यक्षता करेंगे सम्मेलन सभापति **श्री मोहनलाल तुलस्यान**।

आप शनिवार, २४ दिसम्बर, २००५ को **सायं ५ बजे विद्या मन्दिर, १, मोयरा स्ट्रीट, कोलकाता - १७** में सादर आमंत्रित हैं।

कार्यक्रम का समापन हिन्दी हास्य नाटक "**क्या गोलमाल है**" के मंचन से होगा।

रामअवतार पोद्दार, राज के. पुरोहित	हरिप्रसाद कानोड़िया	भानीराम सुरेका
राष्ट्रीय संयुक्त महामन्त्री	राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष	राष्ट्रीय महामन्त्री

कलाकार :

श्यामराव - दीपक शर्मा, शान्ता - प्राची कपूर
हेमन्त - अमित शर्मा, पिताजी - अशोक चतुर्वेदी
हिम्मतराव - विजय वर्मा, सारजा - रिंकी मेहता

रूपसज्जा : रजत पाल
संगीत : विजय वर्मा
मंच आलोक : प्रवाल दत्त

निर्देशक :
विजय वर्मा

हास्य-व्यंग्य हिन्दी नाटक "क्या गोलमाल है"

मुम्बई के एक छोटे फ्लैट में श्याम राव अपनी नवविवाहिता पत्नी शान्ता के साथ रह रहा है। गांव में उसके पिताजी हैं जिनसे बिना बताए उसने शान्ता से विवाह कर रखा है और झूठ बोलकर गांव में पिताजी से पैसा मंगवाता है। इन दोनों के साथ शान्ता का दिलफेंक और बातबात में झूठ बोलने वाला भाई हेमंत भी रहता है जो पढ़ाई कर रहा है। शान्ता के पिता जो थाणे के पागलखाने के डाक्टर हैं अपनी बेटी से मिलने हर सप्ताह मुम्बई आते हैं। सब कुछ ठीक-ठाक चल रहा है।

इधर श्याम राव के पिता हिम्मत राव ने जो नीमगांव के प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं एक अनाथ लड़की सारजा को पालपोस कर इसलिए बड़ा किया है कि इस भोलीभाली लड़की से वे श्याम राव की शादी करके इसे घर की बहू बनाएंगे। एक दिन सारजा को लेकर वे मुम्बई आ धमकते हैं। फ्लैट में इतने लोगों को देखकर वे चौंकते हैं, परन्तु शान्ता को महाराजिन और उसके पिता का नौकर समझ कर हुकुम चलाने लगते हैं। तो अब शुरू होता है घमासान, इसमें हेमन्त आग में घी का काम करता है-गलतफहमी और झूठ पर झूठ का कैसे अंत होता है, हिम्मत राव का गुस्सा कैसे शान्त होता है, भोलीभाली सारजा का क्या होता है, श्याम राव, शान्ता और हेमंत को क्या सज़ा मिलती है इनका उत्तर कृपया स्वयं नाटक में देखें।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन
१५२बी, महात्मा गाँधी रोड, कोलकाता - ७०० ००७, फोन : २२६८ ०३१९

Equipped with Modern Container Handling Equipments

Head Office :

8, Camac Street, Kolkata - 700 017
Phone : 2282-5784/5849, Fax : 033-2282-8760
E-mail : roadwingsinternational@gmail.com

Zonal Office :

"Nirma Plaza", Moral, Makwana Road
Andheri (E), Mumbai 400 059
Phone : 2850 7928, Fax : 022-2850 7899
E-mail : roadwings@vsnl.com

अतिथि परिचय

श्री अशोक गहलोत

श्री अशोक गहलोत राजस्थान के पूर्व मुख्यमंत्री रह चुके हैं एवं अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के महासचिव हैं। ये बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं। ये हमेशा इस समाज के विकास के पक्षधर रहे हैं एवं इस क्षेत्र में इनकी श्लाघनीय भूमिका रही है। श्री गहलोत एक साथ कई संस्थाओं के महत्वपूर्ण पदों को सुशोभित कर रहे हैं। इनका हंसमुख स्वभाव एवं मिलनसारिता सबको अपनी ओर सहज ही आकर्षित करता है। अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन ने जब-जब इन्हें याद किया है, इन्होंने अपना अमूल्य समय दिया है।

प्रो. प्रबोध चन्द्र सिन्हा

पश्चिम बंगाल के राजनीतिक फलक पर प्रो. प्रबोध चन्द्र सिन्हा का नाम एक जगमगाते नक्षत्र की भांति प्रदीप्त है। इनके पिता स्व. हरे कृष्ण सिन्हा पूर्व मिदनापुर जिला के वासिन्दा थें। प्रो. सिन्हा ने एम.ए. तथा एल.एल.बी. तक शिक्षा प्राप्त की। अपने जीवन के ६७ बसन्त पार कर चुके प्रो. सिन्हा पश्चिम बंगाल विधानसभा से कुल ७ बार निर्वाचित हो चुके हैं जिसमें ६ बार ये लगातार निर्वाचित हुए थे। प्रो. सिन्हा सन् १९९१ से पश्चिम बंगाल सरकार के संसदीय कार्य मंत्रालय में मिनिस्टर इन चार्ज के साथ-साथ मिदनापुर के कन्टाई पी.के. कालेज के इतिहास विभाग के प्रमुख भी रह चुके हैं।

प्रो. सिन्हा वर्तमान में सन् २००१ से पश्चिम बंगाल सरकार के संसदीय कार्य एवं आवकारी मंत्रालय के प्रमुख रूप में कार्यरत हैं। इसके अतिरिक्त विश्व-शान्ति एवं मैत्री समाज, युनेस्को क्लब्स एण्ड एसोसिएशन, पश्चिम बंग शाखा एवं भारत-रूस मैत्री समाज, पश्चिम बंग शाखा के अध्यक्ष, वेस्ट बंगाल फेडरेशन ऑफ युनाइटेड नेशन्स एसोसिएशन के उपाध्यक्ष, इन्टरनेशनल एसोसिएशन ऑफ एडुकेटर्स फार वर्ल्ड पीस, यु.एस.ए. के विशेष सलाहकार सहित नेताजी जयन्ती समारोह कमिटि के चीफ पैट्रन एवं अनेकों सामाजिक सांस्कृतिक संस्थाओं से जुड़े हैं।

अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्रों में भी प्रो. सिन्हा की उल्लेखनीय भागीदारी है। ७वां एफ्रो एशियन पीस एण्ड सॉलिडरिटी आर्गनाइजेशन कान्फ्रेंस, कामनवेल्थ पार्लियामेंटरी एसोसिएशंस जनरल कान्फ्रेंस, गोल्डन जुबली सेलिब्रेशन्स ऑफ डब्ल्यूएफयूएनए, लक्समवर्ग, सिऊल इन्टरनेशनल कान्फ्रेंस ऑफ एनजीओ'ज आदि दर्जनों सेमिनार एवं अधिवेशनों में श्री सिन्हा ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई है। इन्होंने अब तक श्रीलंका, सिंगापुर, हांगकांग, थाईलैण्ड, लक्समवर्ग, बेल्जियम, यु.के., हॉलैण्ड, वियतनाम, साऊथ कोरिया, नेपाल, भूटान, यु.एस.ए., स्वीट्जरलैंड, चीन, बंगलादेश आदि राष्ट्रों का भी भ्रमण किया है।

प्रो. प्रबोध चन्द्र सिन्हा ने विभिन्न विषयों पर अपनी लेखनी चलाई है तथा इनकी इतिहास विषय पर लिखी हुई पुस्तक स्कूल के छात्रों के पाठ्यक्रमों में शामिल है।

पद्मभूषण श्री हरिशंकर सिंहानिया

७२ वर्षीय श्री हरिशंकर सिंहानिया विज्ञान से स्नातक हैं। ये जे.के. समूह का संचालन करते हैं, जो कि भारतीय उद्योग समूह को आज नेतृत्व प्रदान करता है एवं पिछले सौ वर्षों से इसकी जड़ें प्रसारित हैं। 'सिंहानिया परिवार', जिसके कि ये मुखिया हैं। भारत के उद्योग परिवार में एक पुराना व प्रतिष्ठा प्राप्त परिवार है। श्री सिंहानिया सन् २००३ में भारत के राष्ट्रपति द्वारा प्रतिष्ठामूलक राष्ट्रीय पुरस्कार पद्मभूषण से नवाजे गए। उन्हें यह पुरस्कार अर्थ एवं व्यापार के क्षेत्र में उनके महत्वपूर्ण योगदान के लिए प्राप्त हुआ। अभी हाल ही में उन्हें भारत-स्वीडिश व्यापार संबंध में विकास के लिए स्वीडेन के राजा-महाराजा द्वारा उच्च स्वीडिश पुरस्कारों में से एक 'रायल आर्डर आफ द पोलर स्टार' प्रदान किया गया।

श्री सिंहानिया इंटरनेशनल चेम्बर आफ कामर्स (पेरिस), कान्फेडरेशन आफ एशिया पेसिफिक चेम्बर्स आफ कामर्स एंड इंडस्ट्रीज (फिक्की), कामन वेल्थ डेवलपमेंट कार्पोरेशन, लंदन, अटलस कापको एबी, अटलस कापको (इंडिया) लिमिटेड आदि अनेकों कंपनियों के चेयरमैन, निदेशक, अध्यक्ष पद पर सुशोभित हैं। श्री सिंहानिया अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के १९८६ में अध्यक्ष पद पर विराजमान थे।समाज सेवा में इनका अविस्मरणीय योगदान रहा है। शिक्षा के माध्यम से लोगों के जीवन स्तर के विकास में इनका पूरा परिवार तन-मन-धन से समर्पित है।

With best compliments from

A WELL WISHER

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन, कोलकाता

(७०वें स्थापना दिवस से ७१वें स्थापना दिवस तक)

राष्ट्रीय महामंत्री श्री भानीराम सुरेका का प्रतिवेदन

प्रिय साथियों,

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के ७१वें स्थापना दिवस पर आप सभी को पुनः अपने बीच पाकर हृदय गदगद है। मैं इस अवसर पर आप सबका तहेदिल से स्वागत-अभिनंदन करता हूं। मैं आभार प्रकट करता हूं राजस्थान के पूर्व मुख्यमंत्री माननीय श्री अशोक गहलोत का जिन्होंने अपने व्यस्ततम कार्यक्रमों में से समय निकालकर इस समारोह को अपनी उपस्थिति से गौरवान्वित करने की हमें स्वीकृति प्रदान की। मैं आभार प्रकट करता हूं पश्चिम बंग सरकार के संसदीय कार्य एवं आवकारी मंत्री प्रो. प्रबोध चंद्र सिन्हा का जो हमारा निमंत्रण स्वीकार कर समारोह का मान बढ़ाने के लिए हमारे बीच उपस्थित है। यह एक आनंद का विषय है कि आज सम्मेलन की स्थापना दिवस के अवसर पर सम्मेलन के ही पूर्व सभापति व सुप्रसिद्ध उद्योगपति एवं समाजसेवी पद्मभूषण श्री हरि शंकर सिंघानिया को उनकी देश, उद्योग एवं समाज के प्रति सेवा तथा योगदान के लिए सम्मानित किया जाएगा। इस ७१वें पड़ाव तक पहुंचने के लिए आप सबका कदम दर कदम स्नेह और प्रेरणा मिली वही मेरी थाती है और उसके लिए मैं आप सबका आभारी हूं । सफलता-असफलता जीवन की एक सहज प्रक्रिया है अतः असफलता को भी स्वीकार करते हुए आज हम ७१ वें पड़ाव पर पहुंच चुके हैं। यहां मैं ७०वें स्थापना दिवस से आज ७१वे स्थापना दिवस तक सम्मेलन की एक साल की गतिविधियों, क्रियाकलापों को महामंत्री के प्रतिवेदन के रूप में आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए प्रसन्नताबोध कर रहा हूं।

१. बैठकें/सभाएं

गत स्थापना दिवस समारोह के उपरांत सम्मेलन की राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति की पांच एवं स्थायी समिति की एक बैठक हुई। कार्यकारिणी की पांच बैठकों में चार कोलकाता में एवं एक हैदराबाद में हुई। ११ सितंबर को सम्मेलन की सर्वोच्च नीति निर्धारक समिति अखिल भारतीय समिति की बैठक पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के आतिथ्य में कोलकाता में हुई। २२ अक्टूबर को वार्षिक साधारण सभा की बैठक हुई। बैठकों में सदस्यों ने कई अहम सुझाव एवं प्रस्ताव रखे तथा कई महत्वपूर्ण एवं रचनात्मक निर्णय लिए गए।

२. गोष्ठियां

परिवर्तनशील परिस्थितियों के मद्देनजर 'रोजगार के बढ़ते अवसर', 'महिला शक्ति', 'राष्ट्र शक्ति' 'गिरते सामाजिक मूल्य एवं बढ़ता दिखावा' आदि विभिन्न सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक विषयों पर समय-समय पर गोष्ठियां आयोजित की गई जिसमें राजस्थान की राज्यपाल श्रीमती प्रतिभा पाटिल, मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे, कांग्रेस के वरिष्ठ नेता एव भूतपूर्व केंद्रीय मंत्री श्री रामनिवास मिर्धा, राजस्थान विधानसभा अध्यक्षा श्रीमती सुमित्रा सिंह, केंद्रीय श्रम और रोजगार मंत्री श्री शीषराम ओला, महिला आयोग की अध्यक्षा डा. गिरजा व्यास, राजस्थान सरकार के समाज कल्याण एवं सहकारिता मंत्री श्री मदन दिलावर आदि ने उपस्थित होकर अपने बहुमूल्य विचारों से सम्मेलन एवं समाज को दिशा-निर्देश दिया।

३. स्थापना दिवस

सम्मेलन ने इसी बाच अपना ७०वां स्थापना दिवस मनाया जिसमें 'नए अवसर एवं नई चुनौतियां' विषयक

गोष्ठी पर सांसद एवं सुविख्यात उद्योगपति व समाजसेवी श्री संतोष बागड़ोदिया तथा उद्योगपति श्री रवि पोद्दार ने अपने विचार प्रस्तुत करते हुए क्रमशः समाज की व्यवस्था में परिवर्तन की आवश्यकता तथा संयुक्त परिवार का टूटना चिंताजनक बताया। इस अवसर पर समाज विकास पत्रिका का विशेषांक प्रकाशित किया गया एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए गए। स्थापना दिवस के कार्यक्रम सम्मेलन के सभी प्रांतीय शाखाओं एवं उपशाखाओं द्वारा आयोजित किए जाते हैं।

४. बंगला भाषा साहित्य पुरस्कार

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन ने विभिन्न प्रांतों में बढ़ती क्षेत्रीयता एवं जातीयता की भावना से चिंतित होकर विभिन्न समुदायों के बीच साहित्य संबंधों के माध्यम से संस्कृति सेतु का निर्माण करने एवं समरसता स्थापित करने के लिए बंगला भाषा साहित्य की स्थापना तत्कालीन सम्मेलन महामंत्री श्री सीताराम शर्मा के प्रयासों से १९९८ में की थी। पश्चिम बंगाल सरकार की पश्चिम बंग बंगला अकादमी के सहयोग से इस कार्यक्रम में सम्मेलन उन बंगाली साहित्यकारों को प्रेरित, प्रोत्साहित और पुरस्कृत करता है जो राजस्थान संबंधी उत्तम साहित्य की रचना करते हैं। स्थानीय भाषा के युवा रचनाकारों का भी उत्साहवर्द्धन करना इसके उद्देश्यों में एक है।

पूर्व वर्षों में मेजर रामप्रसाद पोद्दार, मुंबई; कायां फाउंडेशन, कोलकाता; मारवाड़ी सम्मेलन फाउंडेशन के सहयोग से चंदवरदाई पुरस्कार, मीराबाई पुरस्कार व भरतव्यास पुरस्कार सात साहित्यकारों को दिए गए हैं। इस वर्ष चतुर्थ मारवाड़ी सम्मेलन बंगला भाषा साहित्य पुरस्कार २००५ में उदीयमान बंगाली लेखिका सुश्री अहना विश्वास को उनकी रचना 'आमादेर मायावी समय' के लिए भरतव्यास पुरस्कार एवं श्री बुद्धदेव राय को राजस्थानी भाषा से संबंधित उनकी रचना 'मीरार भजन स्वरलिपि' के लिए मीराबाई पुरस्कार से सम्मानित किया गया। सम्मानस्वरूप प्रत्येक को मानपत्र, उत्तरीय, मिठाई, पुष्पगुच्छ एवं १० हजार एक रुपये की राशि प्रदान की गई। ये राशियां मामराज अग्रवाल फाउंडेशन के अध्यक्ष श्री मामराज अग्रवाल एवं कायां फाउंडेशन के ट्रस्टी श्री गौरीशंकर कायां द्वारा प्रदान की गई।

समरसता स्थापित करने के दृष्टिकोण से ऐसा कार्यक्रम सभी प्रांतीय सम्मेलन एवं उनकी शाखाओं द्वारा आयोजित करने का आह्वान सम्मेलन वर्षों से करता आ रहा है।

५. सांगठनिक दौरा

समय-समय पर सम्मेलन के राष्ट्रीय पदाधिकारियों द्वारा दौरा किया गया एवं सभाएं आयोजित करके सांगठनिक क्षमता का विकास किया गया। राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मोहन तुलस्यान ने महाराष्ट्र के जालना व औरंगाबाद, झारखंड के रांची, आंध्रप्रदेश, पूर्वोत्तर, बिहार, उड़ीसा, पश्चिम बंगाल का दौरा किया वहीं संयुक्त महामंत्री श्री राम अवतार पोद्दार सहित मैंने कर्नाटक, तमिलनाडु, गुजरात, राजस्थान का दौरा किया एवं प्रांतीय शाखाओं के साथ महत्वपूर्ण बैठकें आयोजित की। राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा ने दिल्ली, मुंबई तथा पश्चिम बंगाल के रानीगंज का दौरा किया एवं शाखा सम्मेलन को दिशा प्रदान की।

६. प्रांतीय अधिवेशन

इस वर्ष फरवरी एवं मार्च दो माह में तीन प्रांतीय सम्मेलनों के अधिवेशन हुए। हैदराबाद में आंध्र प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन का १०वां अधिवेशन हुआ। सम्मेलन के पदाधिकारियों सहित कोलकाता से कई सदस्यों ने हैदराबाद के इस अधिवेशन में हिस्सा लिया। अधिवेशन का सबसे सार्थक पहलू था महिला सत्र जिसमें 'अंतर्जातीय विवाह : एक सामाजिक चिंतन' पर खुलकर एवं महत्वपूर्ण परिचर्चा हुई। इस सत्र का उद्घाटन राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मोहन लाल तुलस्यान द्वारा किया गया। राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा ने उक्त विषय पर अपना गंभीर संबोधन दिया। अधिवेशन में प्रांतीय अध्यक्ष का कार्यभार श्री रमेश कुमार बंग को दिया गया एवं श्री नरेशचंद्र विजयवर्गीय को प्रांतीय महामंत्री किया गया।

पूर्वोत्तर के जोरहाट में १२वां प्रांतीय अधिवेशन आयोजित हुआ। राष्ट्रीय पदाधिकारियों में राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री तुलस्यान एवं मैं इस समारोह में सम्मिलित हुआ था। अधिवेशन को असम के पूर्व मुख्यमंत्री श्री प्रफुल्ल कुमार महंत

एवं वर्तमान मुख्यमंत्री तरुण गोगोई ने सुशोभित किया। अधिवेशन में गौहाटी में बालिका छात्रावास के लिए जमीन व रुपए १७ लाख देने की एवं एक करोड़ का सम्मेलन कोष बनाने की घोषणा की गई। नए सत्र में श्री कन्हैयालाल बाकलीवाल अध्यक्ष एवं श्री बाबूलाल गग्गर महामंत्री बनाए गए।

इस वर्ष का तीसरा अधिवेशन पटना सिटी में बिहार प्रदेश का २४वां अधिवेशन के रूप में संपन्न हुआ। अधिवेशन में पूर्व राज्यपाल श्री जगन्नाथ पहाड़िया द्वारा मारवाड़ी समाज की सेवाभावना की सराहना की गई। अधिवेशन में राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मोहन लाल तुलस्यान एवं उपाध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा सहित मैं भी उपस्थित था। श्री कैलास प्रसाद झुनझुनवाला नए सत्र के अध्यक्ष एवं श्री कमल नोपानी महामंत्री बनाए गए। अधिवेशन में महिला, युवा एवं खुला सत्र में बहुत से उपयोगी प्रस्ताव पारित हुए एवं आर्थिक रूप से समाज के कमजोर वर्ग के हित पर विशेष बल दिया।

७. प्रांतीय संगठन

वर्तमान में पश्चिम बंगाल, उत्कल, बिहार, झारखंड, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, उत्तर प्रदेश, पूर्वोत्तर, तमिलनाडु, आंध्रप्रदेश में सम्मेलन की प्रांतीय सभाएं कार्य कर रही है। कर्नाटक, गुजरात, छत्तीसगढ़, उत्तरांचल, सिक्किम में प्रांतीय सम्मेलन खोलने का प्रयास जारी है। राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक के निर्णयानुसार राजस्थान में प्रांतीय सम्मेलन की स्थापना करने की दिशा में अग्रसर होते हुए राजस्थान के जयपुर में श्री सतीश चंद्र कट्टा को वहां का प्रभारी बनाया गया है। अभी हाल ही की मेरी राजस्थान यात्रा के दौरान उनके साथ बैठक हुई और वे शीघ्र ही पदाधिकारियों की एक बैठक जयपुर में बुलाने जा रहे हैं एवं सदस्यता अभियान पर अग्रसर हैं। श्री कट्टा राजस्थान के उद्योगपति एवं चर्चित समाजसेवी हैं। पूर्वोत्तर के अध्यक्ष श्री कन्हैया लाल बाकलीवाल के आकस्मिक निधन से पूर्वोत्तर के अध्यक्ष पद पर श्री विजय कुमार मंगलुनिया निर्वाचित हुए हैं। झारखंड के अध्यक्ष श्री गोविंद प्रसाद डालमिया द्वारा प्राप्त सूचना के अनुसार झारखंड प्रांत का दूसरा अधिवेशन इस वर्ष के अंत तक देवघर में किए जाने का कार्यक्रम है।

८. प्रांतीय सम्मेलन की गतिविधियां

बिहार, पश्चिम बंगाल, पूर्वोत्तर सम्मेलन काफी सक्रिय है। झारखंड, उत्तर प्रदेश, उत्कल, आंध्रप्रदेश की गतिविधियां संतोषजनक है।

बिहार ने २४वां प्रादेशिक अधिवेशन आयोजित किए। प्रांतीय पदाधिकारियों ने लगातार सांगठनिक दौरा किया है। जिसकी जानकारी प्रांतीय सम्मेलन द्वारा प्रकाशित 'संवाद पत्रिका' में हम पाते हैं। भाग्यशाली दानपत्र योजना इनकी अनुपम योजना है। शिक्षा समिति द्वारा राममनोहर लोहिया व्याख्यान माला, छात्रवृत्ति प्रदान आदि इनकी विशेष गतिविधियां हैं। यह प्रांतीय सम्मेलन अपने सैकड़ों उपशाखाओं द्वारा पूर्ण रूप से सक्रिय है।

पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन भंवरमल सिंधी जयंती, नि:शुल्क कृतिम पांव शिविर का आयोजन, मारवाड़ी पार्षदों का अभिनंदन के साथ-साथ अपने कलकत्ता, दुर्गापुर आदि शाखाओं द्वारा स्वाधीनता दिवस, गणतंत्र दिवस, होली एवं दीपावली प्रीति सम्मेलन का भी आयोजन करता आया है।

पूर्वोत्तर ने अपना १२वां प्रांतीय अधिवेशन मनाया। असम में बाढ़ की समस्या अधिक है। अत: बाढ़ राहत कार्य में इस सम्मेलन की अति सराहनीय भूमिका रहती है। मारवाड़ी समाज पर अनर्गल वक्तव्य एवं हिंसा पूर्वोत्तर में अधिक होने के कारण प्रांतीय सम्मेलन बराबर इसके प्रतिवाद में मुखर रहता है।

झारखंड प्रांतीय सम्मेलन द्वारा अध्यक्ष का निर्वाचन एवं पदाधिकारियों द्वारा सांगठनिक दौरा किया गया। शीघ्र ही इसका द्वितीय प्रांतीय अधिवेशन किए जाने का कार्यक्रम है।

मध्यप्रदेश प्रादेशिक सम्मेलन द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम अनुष्ठित किए गए एवं परिचय पुस्तिका का प्रकाशन किया गया।

महाराष्ट्र में भीषण वर्षा से आई तबाही में महाराष्ट्र सम्मेलन द्वारा बाढ़ पीड़ितों की मदद की गई वहीं उत्तर प्रदेश

सम्मेलन द्वारा शरद मेला का आयोजन किया गया। उत्कल की बलांगीर शाखा नि:शुल्क मोतियाबिंद आपरेशन शिविर चलाए गए।

उत्कल प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन की तदर्थ समिति द्वारा १ अक्टूबर को भुवनेश्वर में एवं कटक में बैठक आयोजित कर सर्वसम्मति से श्री सुरेंद्र डालमिया को प्रांतीय अध्यक्ष मनोनीत किया गया। शीघ्र ही अधिवेशन किए जाने की बात है।

आंध्र प्रदेश मारवाड़ी सम्मेलन अपनी शाखाओं-प्रशाखाओं के साथ पूर्ण सक्रिय हैं। शिक्षा कोष ट्रस्ट द्वारा विद्यार्थियों को बराबर छात्रवृत्ति प्रदान किया जा रहा है। हैदराबाद में १०वें प्रांतीय अधिवेशन को सफलतापूर्वक संपन्न किया गया। १९ फरवरी २००५ को राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मोहनलाल तुलस्यान की अध्यक्षता में प्रांतीय सम्मेलन द्वारा हैदराबाद में राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति की बैठक हुई जिसमें गुजरात, राजस्थान, छत्तीसगढ़, सिक्किम, उत्तरांचल और केरल में प्रांतीय सम्मेलन का गठन करने, राष्ट्रीय स्तर पर सदस्यता अभियान चलाकर दस हजार नए सदस्य बनाने आदि महत्वपूर्ण निर्णय के साथ-साथ कोलकाता में भव्य सम्मेलन भवन के निर्माण में प्रांतीय सम्मेलनों से सहयोग का आग्रह किया गया।

प्रांतीय सम्मेलनों के साथ-साथ अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी महिला सम्मेलन द्वारा अपने विभिन्न शाखा-प्रशाखाओं के माध्यम से कृतिम पांव प्रत्यारोपण शिविर कोलकाता में, उद्योग मेला पटना में, महिला प्रकोष्ठ का गठन कानपुर में किया गया, आदिवासी बच्चों को सहायता प्रदान की गई एवं सबसे उल्लेखनीय कार्य रहा पश्चिम उड़ीसा से ३० महिलाओं को एक दल द्वारा पूर्व अध्यक्ष श्रीमती प्रेमा पंसारी के नेतृत्व में सांस्कृतिक आदान-प्रदान हेतु सिंगापुर, मलेशिया एवं थाईलैंड का भ्रमण तथा भ्रमण के दौरान बैंकाक में मारवाड़ी महिला समिति की स्थापना।

अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच के पदाधिकारियों द्वारा शाखाओं का दौरा एवं गठन किया गया। अपने सैकड़ों शाखाओं-उपशाखाओं के माध्यम से युवा मंच ने भी बाढ़ पीड़ितों को राहत सामग्री, कृतिम पैर व कैलीपर शिविर, कार्यशाला का आयोजन, नि:शुल्क चिकित्सा शिविर, सुनामी पीड़ितों को सहायतार्थ शिविर, नि:शुल्क स्वास्थ्य मेला शिविर, विचार गोष्ठी आदि आयोजित कर सामाजिक कार्य में अपनी भूमिका बखूबी निभाई।

९. मारवाड़ी सम्मेलन भवन

सम्मेलन के वर्षो का एक सपना था कि सम्मेलन के पास अपना एक भवन हो। यह सपना पूरा हुआ था ११ अप्रैल २००३ को रामनवमी के दिन। तब से प्रत्येक वर्ष रामनवमी के दिन भगवान राम की पूजा अर्चना कर इसकी वर्षगांठ मनाई जाती है जो कि इस वर्ष भी मनाई गई।

भवन को बहुद्देशीय सामाजिक योजना के अंतर्गत नव निर्माण कराने का विचार है। इसके लिए प्रांतीय सम्मेलन से सहयोग का आग्रह है। इस वर्ष स्वाधीनता दिवस के अवसर पर सम्मेलन भवन में दानदाताओं के संगमरमर शिला पट्ट पर अंकित नामों का उद्घाटन किया गया।

१०. लंदन में सहयोगी संस्था

अप्रवासी मारवाड़ियों की सुविधा एवं कल्याण तथा अंतरराष्ट्रीय शहरों के सम्मेलनों की स्थापना के विशेष प्रयास के मुख्य उद्देश्य से अखिल भारतीय मारवाड़ी सम्मेलन की ब्रिटेन के लंदन शहर में 'दि राजस्थानी फाउंडेशन' नामसे एक सहयोगी संस्था खोली गई एवं डा. कृष्ण सरावगी को अध्यक्ष, श्री अशोक संचेती को उपाध्यक्ष एवं श्री संजय अग्रवाल को मंत्री मनोनीत किया गया। दि राजस्थानी फाउंडेशन के उद्घाटन समारोह में लगभग २२० समाज बंधुओं की उपस्थिति रही। इस कार्य में सम्मेलन के राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री हरि प्रसाद जा कानोड़िया का प्रशंसनीय योगदान प्राप्त हुआ।

११. प्रकाशन

सम्मेलन द्वारा इसका हिंदी मासिक मुखपत्र 'समाज विकास' का नियमित रूप से प्रकाशन किया जा रहा है जिससे देश के कोने-कोने में बस रहे समाज के लाखों परिवार लाभान्वित हो रहे हैं। सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष श्री नंद किशोर जालान के कुशल संपादन में समाज विकास सुरुचिपूर्ण, सामाजिक एवं चिंतनशील लेखों के साथ अपनी गरिमा को प्रतिबिंबित कर रहा है।

१२. सम्मेलन डायरेक्टरी

सम्मेलन ने अपने आजीवन एवं साधारण विशिष्ट सदस्यों की एक डायरेक्टरी का प्रकाशन का निर्णय लिया है। इस दिशा में अधिकांश कार्य संपन्न हो चुके हैं एवं आज इस ७१वें स्थापना दिवस समारोह के अवसर पर माननीय अतिथियों के कर-कमलों से इसका विमोचन का कार्यक्रम है। श्री प्रदीप ढेडिया के प्रति आभार प्रदर्शित करते हैं जिन्होंने इसके निःशुल्क प्रकाशन का वीड़ा उठाया है।

१३. समाज पर हो रहे प्रत्यक्ष एवं परोक्ष हमले पर प्रतिवाद

समाज सुरक्षा सम्मेलन के उद्देश्यों में से एक है। आए दिनों पूर्वोत्तर आदि क्षेत्रों में मारवाड़ी समाज पर जो भी हमले हुए हैं उसका अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन ने पुरजोर प्रतिवाद किया है। चाहे वह हमला प्रत्यक्ष रूप में हुआ हो या किसी नेता, मंत्री या साहित्यकार की जुबान से टिका-टिप्पणी के रूप में परोक्ष रूप से हुआ हो। इन हिंसात्मक घटनाओं पर त्वरित कार्यवाही करते हुए राष्ट्रीय सम्मेलन ने राज्य एवं केंद्रीय स्तर पर विरोध जताया है एवं प्रांतीय सम्मेलनों को भी दिशा निर्देश दिया है।

इसी सिलसिले में सम्मेलन के ७ सदस्यीय प्रतिनिधि मंडल द्वारा भारत के उपराष्ट्रपति श्री भैरोसिंह शेखावत से राजभवन कोलकाता में मुलाकात की गई थी एवं सम्मेलन की गतिविधियों की जानकारी देने के साथ-साथ देश के पूर्वोत्तर हिस्से में मारवाड़ियों पर हो रहे हमले पर चिंता व्यक्त की गई थी।

विगत माह साहित्यकार एवं लेखक कमलेश्वर द्वारा मारवाड़ी समाज को शोषणकर्ता एवं पूर्वोत्तर, असम एवं नेपाल की समस्या के लिए दायी ठहराने के लिए अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन ने उनकी टिप्पणी एवं मंतव्य का कठोर प्रतिवाद किया और उनसे क्षमा याचना की मांग की। इसी प्रकार भुवनेश्वर से प्रकाशित 'धारित्री' के संपादक तथागत सत्पथी के मारवाड़ी समाज के प्रति आपत्तिजनक टिप्पणी की सम्मेलन द्वारा घोर निंदा की गई एवं सम्पादक से समाज से माफी मांगने की मांग की गई। इसके लिए स्थानीय समाचार पत्रों का सम्मेलन को वृहद सहयोग प्राप्त हुआ।

१४. राजस्थानी भाषा

राजस्थानी भाषा को संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल करने के प्रति सम्मेलन दीर्घ दिनों से प्रयासरत है।

१५. श्रद्धांजलि

गत स्थापना दिवस से लेकर अब तक सम्मेलन ने अपने कई वरिष्ठ सदस्यों एवं शुभचिंतकों को खो दिया जिनके प्रति हार्दिक श्रद्धांजलि व्यक्त की गई। उन शख्सियतों में प्रमुख हैं सम्मेलन के पूर्व राष्ट्रीय उपाध्यक्ष रामनिवास शर्मा, हैदराबाद महिला सम्मेलन की सिलीगुड़ी शाखा की अध्यक्षा श्रीमती सरिता सरावगी, विशिष्ट समाजसेवी अभिमन्यु भुवालका, कोलकाता, हिमाचल प्रदेश एवं उत्तर प्रदेश के पूर्व राज्यपाल एवं साहित्य मनीषी आचार्य विष्णुकांत शास्त्री, सम्मेलन के आजीवन सदस्य चिमनलाल भालोटिया, जमशेदपुर, नरसिंहलाल गुप्ता, कोलकाता; किशनलाल महिपाल, कोलकाता; पुरुषोत्तमदास चितलांगिया, कोलकाता एवं सम्मेलन के पूर्व उपाध्यक्ष बेनी प्रसाद शर्मा, गुवाहाटी तथा पूर्वोत्तर प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के नवनिर्वाचित अध्यक्ष श्री कन्हैया लाल बाकलीवाल आदि।

चित्र दीर्घा

हैदराबाद में कार्यकारिणी बैठक का दृश्य : अध्यक्ष मोहनलाल तुलस्यान, उपाध्यक्ष सीताराम शर्मा, महामंत्री भानीराम सुरेका, संयुक्त मंत्री रामअवतार पोद्दार, कोषाध्यक्ष हरिप्रसाद कानोड़िया, उपाध्यक्ष जगदीश प्रसाद अग्रवाल, मौजीराम जैन, सुभाष मुरारका, बालकृष्ण माहेश्वरी, तमिलनाडू शाखा के महामंत्री विजय गोयल, चिरंजीलाल अग्रवाल, रामकिसन गुप्ता, राधेश्याम रेणवा, रमेश बंग आदि परिलक्षित हैं।

कोलकाता में अखिल भारतीय समिति की बैठक को सम्बोधित करते हुए राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मोहनलाल तुलस्यान। बाएं हैं राष्ट्रीय महामंत्री सर्वश्री भानीराम सुरेका, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष सीताराम शर्मा, पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष लोकनाथ डोकानिया, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष हरिप्रसाद कानोड़िया आदि।

मंचासीन परिलक्षित हैं बाएं से प.बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष सर्वश्री लोकनाथ डोकानिया, पूर्व राष्ट्रीय उपाध्यक्ष रतन शाह, राष्ट्रीय महामंत्री भानीराम सुरेका, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष सीताराम शर्मा एवं नन्दलाल रुंगटा, राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री राम औतार पोद्दार, उत्कल से मौजीराम जैन, झारखण्ड के प्रान्तीय अध्यक्ष गोविन्द प्रसाद डालमिया एवं राष्ट्रीय उपाध्यक्ष जगदीश प्रसाद अग्रवाल (उत्कल)।

चित्र दीर्घा

सम्मेलन के शिष्टमंडल की श्री शेखावत से भेंट : बाएं से सर्वश्री इन्दरचन्द संचेती, लोकनाथ डोकानिया, हरिप्रसाद कानोड़िया, उपराष्ट्रपति श्री भैरों सिंह शेखावत , नन्दकिशोर जालान, सीताराम शर्मा, रतन शाह एवं पवन जालान।

काफी संख्या में महिलाओं की उपस्थिति में पश्चिम बंगाल मारवाड़ी महिला सम्मेलन की अध्यक्षा श्रीमती विमला डोकानिया

बायीं ओर परिलक्षित हैं संयुक्त महामंत्री श्री रामऔतार पोद्दार, उपाध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा, महामंत्री श्री भानीराम सुरेका।

चित्र दीर्घा

महामहिम प्रतिभा पाटिल सम्मान गोष्ठी कार्यक्रम को सम्बोधित करती हुई। बाएं से हैं राष्ट्रीय उपाध्यक्ष सर्वश्री सीताराम शर्मा, कोषाध्यक्ष हरिप्रसाद कानोड़िया, अध्यक्ष मोहनलाल तुलस्यान एवं पूर्व सांसद महेश चन्द्र शर्मा।

दर्शक दीर्घा में परिलक्षित हैं सर्वश्री दीपचन्द नाहटा, सुनील कानोड़िया, नन्द किशोर जालान, लोकनाथ डोकानिया, अरुण जालान, बंशीलाल बाहेती, आत्माराम सोंथलिया, सांवरमल भीमसरिया, श्रीमती चम्पादेवी कानोड़िया, राम गोपाल बागला, नवरतनमल सुराना आदि सहित सम्मेलन के विभिन्न पदाधिकारीगण, सदस्यगण एवं समाज के विशिष्ट प्रबुद्धजन।

चित्र दीर्घा

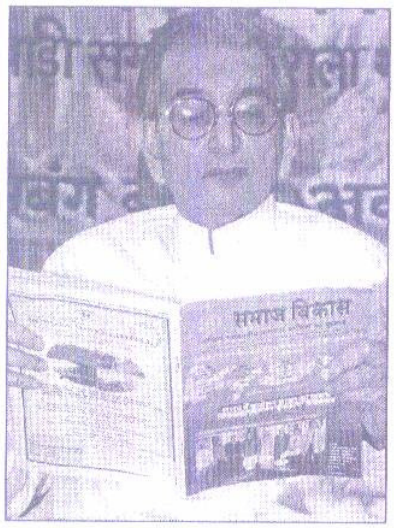

समाज विकास का तन्मयता से अवलोकन करते हुए डॉ. श्यामल कुमार सेन।

भरत व्यास तथा मीरा बाई पुरस्कार से पुरस्कृत साहित्यकारद्वय क्रमशः सुश्री अहना विश्वास एवं श्री बुद्धदेव राय।

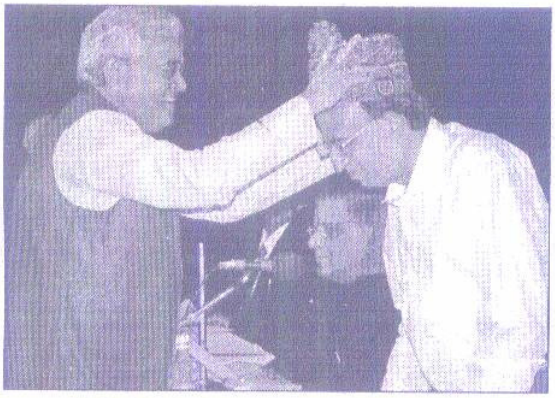

मुख्य अतिथि श्री रवि पोद्दार को पगड़ी पहनाकर उनका सम्मान करते हुए सम्मेलन के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा।

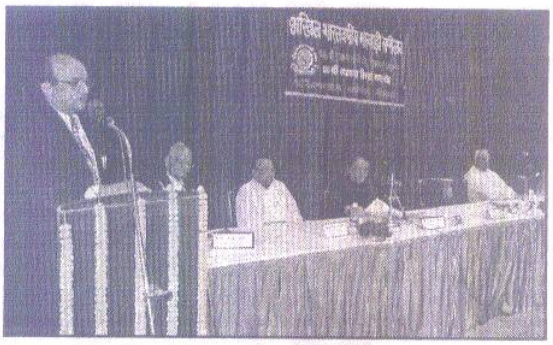

सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मोहनलाल तुलस्यान समारोह को उद्‌बोधित करते हुए

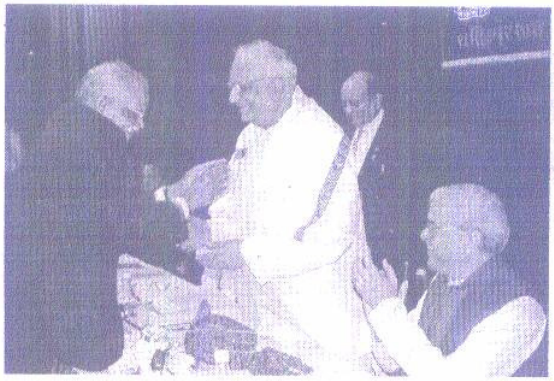

श्री बागड़ोदिया को शॉल ओढ़ाकर उनका स्वागत करते हुए सम्मेलन के राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री हरिप्रसाद कानोड़िया।

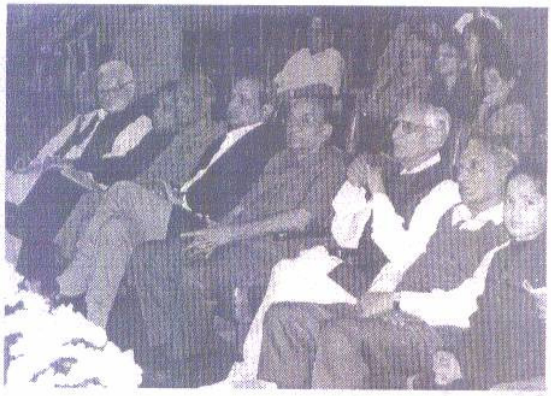

कार्यक्रम का लुत्फ उठाते हुए दर्शकवृन्द

चित्र दीर्घा

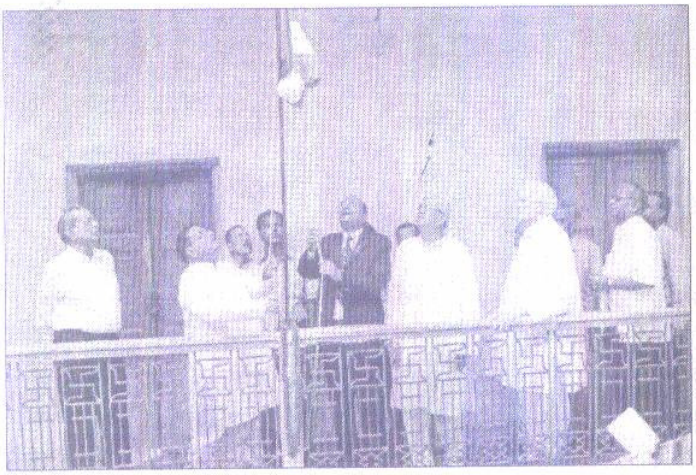

स्वाधीनता दिवस समारोह के अवसर पर झण्डोत्तोलन करते हुए सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मोहनलाल तुलस्यान। साथ में हैं सर्वश्री आत्माराम सोंथलिया, महामंत्री भानीराम सुरेका, उपाध्यक्ष सीताराम शर्मा, संयुक्त महामंत्री रामऔतार पोद्दार, आत्माराम तोदी, जुगल किशोर जैथलिया, बंशीलाल बाहेती, ओम लड़िया, ताराचन्द पाटोदिया आदि।

सम्मेलन भवन में दानदाताओं के संगमरमर शिलापट्ट पर अंकित नाम।

मंच पर बैठे श्री जगन्नाथ पहाड़िया, श्री मोहनलाल तुलस्यान, श्री सीताराम शर्मा, श्री भानीराम सुरेका, श्री रामावतार पोद्दार, श्री कैलाश प्रसाद झुनझुनवाला एवं डा. रमेश कुमार केजड़ीवाल।

अधिवेशन में उपस्थित जन समूह को सम्बोधित करते हुए राष्ट्रीय अध्यक्ष मोहनलाल तुलस्यान, सांसद अंजन कुमार यादव, सांसद श्री गिरीश कुमार संघी न्यायमूर्ति जी. भिक्षपति, स्वागताध्यक्ष कन्हैया लाल लोहिया, श्री मुरली नारायण बंग, महामंत्री श्री भानीराम सुरेका, रमेश कुमार बंग एवं अन्य।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

कार्यकारिणी एवं स्थायी समिति की बैठक की रपट

युग पथ चरण

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की कार्यकारिणी एवं स्थायी समिति की संयुक्त बैठक १७ दिसम्बर २००५ को सम्मेलन सभापति श्री मोहनलाल तुलस्यान की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई।

महामंत्री श्री भानीराम सुरेका ने दोनों समितियों के गत बैठक की कार्यवाहियों को पढ़कर सुनाया जिन्हें सर्वसम्मति से स्वीकृत किया गया।

महामंत्री की रपट को सर्वसम्मति से स्वीकृत किया गया। २४ दिसम्बर की सायं विद्यामंदिर में आयोजित होने जा रहे सम्मेलन के ७१वें स्थापना दिवस समारोह पर विस्तृत चर्चा हुई। सदस्यों ने तत्सम्बन्धित अपने-अपने सुझाव प्रस्तुत किए।

सदस्यों से अधिक से अधिक संख्या में उपस्थिति का अनुरोध किया गया।

इस अवसर पर प्रकाशित होने जा रहे सम्मेलन का मुखपत्र समाज विकास को संग्रहणीय बनाने हेतु सदस्यों से लेख एवं विज्ञापन सहयोग की अपील की गई।

इस अवसर पर प्रकाशनाधीन सम्मेलन के सदस्यों की डायरेक्टरी के पूर्ण होने की उम्मीद की गई।

समाज विकास विशेषांक एवं सम्मेलन डायरेक्टरी के प्रकाशन पर सदस्यों ने प्रसन्नता व्यक्त की।

सभापति को धन्यवाद के उपरान्त सभा समाप्त की गई।

पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन

कोलकाता :- दीपावली प्रीति सम्मेलन संपन्न

दीपावली प्रीति सम्मेलन के अवसर पर विशुद्धानंद सरस्वती विद्यालय के सभागार में परिलक्षित हैं सर्वश्री सीताराम शर्मा, लोकनाथ डोकानिया, मोहनलाल तुलस्यान, प्रह्लाद राय अग्रवाल, भानीराम सुरेका, सांवरमल भीमसरिया, अनिल अग्रवाल आदि।

समाज के संपन्न व्यक्ति की जिम्मेदारी है कि वह गरीब, असहाय तथा पिछड़े लोगों का जीवन उन्नत बनाए। मारवाड़ी समाज सदा ही ऐसे कार्यों में आगे रहा है। आज जरूरत है कि हम संपन्न लोग एक-एक गांव गोद लेकर गरीबों का जीवन स्तर उन्नत बनाए । यह बात पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन एवं कोलकाता मारवाड़ी सम्मेलन के दीपावली प्रीति सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए प्रसिद्ध उद्योगपति श्री प्रह्लाद राय अग्रवाल ने कही। मारवाड़ी समाज में आ रही बुराइयां तथा कुरीतियों को दूर करने की जरूरत बताते हुए आपने सम्मेलन के लोगों को आगे आने की अपील की। सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मोहनलाल तुलस्यान, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा, राष्ट्रीय महामंत्री श्री भानीराम सुरेका एवं अनिल शर्मा ने भी समाज के लोगों से अपनी गौरवमयी प्रतिष्ठा कायम रखने की जरूरत बताई। श्री ओमप्रकाश पोद्दार अध्यक्ष, कोलकाता मारवाड़ी सम्मेलन, श्री लोकनाथ डोकानिया अध्यक्ष पं.बंग प्रा. मा. सम्मेलन ने अपना प्रतिवेदन पेश किया। सभी वक्ताओं ने समाज की शिक्षा, स्वास्थ्य तथा परोपकार जैसी सेवाओं का उल्लेख करते हुए इसे आगे बढ़ाने की अपील की। सरस शब्दों में धन्यवाद ज्ञापन करते हुए श्री सावरमल भीमसरिया ने प्रकाश पर्व दीपावली पर उपस्थित सभी लोगों को शुभकामनाएं दी।

उत्तर प्रदेश प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन

कानपुर : दीप पर्व अभिनन्दन समारोह सम्पन्न

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की प्रादेशिक कानपुर शाखा द्वारा दीप पर्व अभिनंदन समारोह के अन्तर्गत श्री गोविन्द भार्गव जी की भजन संध्या का आयोजन किया गया। इस अवसर पर प्रदेश उपाध्यक्ष श्री विश्वनाथ पारीक एवं शाखा अध्यक्ष श्री सत्यनारायण सिंहानिया ने मुख्य अतिथि श्री मुरलीधर अग्रवाल एवं आगन्तुकों का हार्दिक स्वागत किया एवं दीप पर्व की शुभकामनाएं दी। शाखा मंत्री श्री अनिल परसरामपुरिया ने सभी सदस्यों एवं गणमान्य नागरिकों को धन्यवाद दिया। कार्यक्रम का संचालन संयोजक श्री सुशील तुलस्यान ने किया। इस अवसर पर संस्था के प्रति विशेष सहयोग हेतु अनेक महानुभावों को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम को सफल बनाने में सर्वश्री सुनील मुरारका, सुबोध रुंगटा, महेश भगत, रमेश रुंगटा, विश्वनाथ पारीक, श्रीगोपाल तुलस्यान, श्रीराम अग्रवाल, वासुदेव सर्राफ, भजनलाल शर्मा, बलदेव प्रसाद जाखोदिया, बालकृष्ण शर्मा, हरिकृष्ण चौधरी, मनोज टीबड़ेवाल, पंकज बंका, सुनील केडिया, कीर्ति सर्राफ एवं किशन सरावगी आदि का उल्लेखनीय योगदान रहा।

बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन

पटना :- छात्रवृति हेतु आर्थिक सहायता के लिए एक अपील

सभी गणमान्य समाज के सभी प्रतिष्ठित शिक्षा चिकित्सा प्रेमियों से बिहार मारवाड़ी सम्मेलन शिक्षा समिति पटना के अध्यक्ष श्री महेंद्र कुमार चौधरी, महासचिव श्री प्रह्लाद राय शर्मा, मारवाड़ी चिकित्सा सेवा समिति नाला रोड, पटना के महासचिव डा. आर के मोदी एवं कोषाध्यक्ष श्री विजय कुमार बुधिया, बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन पटना के वर्तमान अध्यक्ष श्री कैलास प्रसाद झुनझुनवाला एवं महासचिव श्री कमल नोपानी, श्री अग्रसेन सेवा न्यास एवं दादी जी सेवा समिति, शक्तिधाम, बैंक रोड, पटना के महासचिव श्री अमर कुमार अग्रवाल ने अपने संयुक्त अपील में उपरोक्त सभी महानुभाव से निवेदन किया है कि श्री विमल बुधिया से प्रेरणा लेकर उनकी तरह ही एक छात्र /छात्रा को उच्च शिक्षा प्राप्त करने हेतु आर्थिक सामर्थ्य के अनुसार ५००/- रुपए से ३०००/- रुपए तक प्रत्येक महीना ५ वर्ष के लिए शिक्षा समिति को अवश्य आर्थिक सहायता प्रदान कर इस पुनीत शिक्षा के कार्य को आगे जारी रखेंगे।

पूर्वोत्तर प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन

नगांव : प्रादेशिक अध्यक्ष का चुनाव सम्पन्न

पूर्वोत्तर प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष श्री कन्हैया लाल बाकलीवाल के निर्वाचन के कुछ दिनों पश्चात् ही निधन हो जाने के कारण यह पद रिक्त था। श्री नेमचन्द करनानी को अध्यक्ष पद के निर्वाचन हेतु निर्वाचित अधिकारी मनोनीत किया गया।

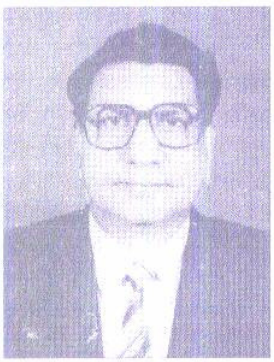

दिनांक ६.११.०५ को जोरहाट में एक प्रादेशिक सभा का आयोजन किया गया, जिसमें पूर्वोत्तर की चौथी शाखाओं के साठ से भी अधिक प्रतिनिधि उपस्थित थे। शाखा प्रतिनिधियों एवं प्रादेशिक पदाधिकारियों सहित अन्य गणमान्य लोग उपस्थित थे। काफी विचार-विमर्श के पश्चात प्रादेशिक उपाध्यक्ष श्री प्रदीप खदरिया ने नगांव शाखा के श्री विजय कुमार मंगलूनिया का नाम अध्यक्ष पद हेतु प्रस्तावित किया तथा जोरहाट शाखा के राजकुमार सेठी ने उनका समर्थन किया। इसके साथ ही उपस्थित कई शाखाओं ने भी श्री मंगलूनिया के नाम का समर्थन किया। तत्पश्चात् सर्वसम्मति से श्री विजय कुमार मंगलूनिया को प्रादेशिक अध्यक्ष हेतु मनोनीत किया गया। इसी सभा में सम्मेलन के वरिष्ठ समाज सेवी श्री मांगीलाल चौधरी ने श्री मंगलूनिया को प्रादेशिक अध्यक्ष पद की शपथ दिलाई।

श्री मंगलूनिया पूर्वोत्तर मारवाड़ी सम्मेलन के प्रादेशिक महामंत्री (१९९८-२००१), प्रादेशिक उपाध्यक्ष (२००१-२००५) तथा प्रादेशिक कार्यकारी अध्यक्ष (२००५) पद पर अपनी सेवायें प्रदान कर चुके हैं। श्री मंगलूनिया अति कर्मठ सामाजिक कार्यकर्ता एवं समाजसेवी हैं। शिक्षा से बी.एससी, एलएलबी सह अधिवक्ता श्री मंगलूनिया ने सन् १९६३ में राजस्थानी युवक संघ के माध्यम से अपना सामाजिक जीवन आरम्भ किया। सन् १९७० में इन्होंने लायन्स क्लब आफ नगांव की सदस्यता ग्रहण की और अपनी कार्यकुशलता एवं नेतृत्व क्षमता के बल पर लगातार विभिन्न पदों पर कार्य करते हुए सन् १९९६-९७ में डिस्ट्रिक्ट गवर्नर पद की जिम्मेदारियों का भी सफलतापूर्वक निर्वाहन किया। इस संदर्भ में आपको कई बार विदेशों में भी जाने का मौका मिला।

उत्कल प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन

बलांगीर : शाखाध्यक्ष का स्पष्टीकरण

समाज विकास के अक्टूबर २००५ अंक में पृष्ठ २७ पर प्रकाशित प्रान्तीय अध्यक्ष के चयन सम्बन्धित रिपोर्ट में उल्लेखित उपस्थित व्यक्तियों में एक श्री गौरी शंकर अग्रवाल (अध्यक्ष, बलांगीर शाखा) ने सम्मेलन को स्पष्ट किया है कि वे उस बैठक में उपस्थित नहीं थे।

अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच

भटली अग्रसेन जयंती धूमधाम से पालन

मारवाड़ी युवा मंच भटली शाखा की ओर से महाराज अग्रसेन जी की जयंती महा समारोह मनाई गई। इस अवसर पर विभिन्न प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। सभा में मुख्य अतिथि के रूप में उत्कल प्रांतीय मारवाड़ी युवा मंच के प्रांतीय संयोजक श्री किशन लाल अग्रवाल सम्मानित अतिथि के रूप में मारवाड़ी युवा मंच की पूर्व सचिव श्रीमती राधा अग्रवाल उपस्थित थे। मंच पर भटली के समाजसेवी तथा वयोवृद्ध रघुनाथ अग्रवाल भी उपस्थित थे। मंच का संचालन शाखा के अध्यक्ष प्रदीप अग्रवाल ने किया। मुख्य अतिथि श्री अग्रवाल ने कहा कि आगामी दो माह के अंदर विभिन्न सांसदों के जरिए राज्य में ग्यारह नई एंबुलेंस सुविधा मुहैया कराई जाएगी। उन्होंने कहा कि पूरे भारत में एंबुलेंस सेवा मारवाड़ी युवा मंच एक नंबर में है। सभा के उपरांत विभिन्न प्रतियोगिता में विजयी प्रतिनिधियों को मुख्य अतिथि के द्वारा पुरस्कार वितरण किया गया। शाखा सचिव नरेश अग्रवाल ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

बरगढ़ :- प्रांत के दो पदाधिकारियों को मुख्यमंत्री द्वारा सम्मान

उत्कल प्रांतीय मारवाड़ी युवा मंच के दो पदाधिकारियों को पूरे राज्य में सबसे अग्रणी सामाजिक संस्था के रूप में प्रांतीय अध्यक्ष श्री श्यामसुंदर अग्रवाल व समाजसेवा एवं पत्रकारिता के क्षेत्र के लिए प्रांतीय जनसंपर्क संयोजक श्री किशन लाल अग्रवाल को राज्य के मुख्यमंत्री श्री नवीन पटनायक द्वारा सम्मान पत्र दिया गया। इस अवसर पर राज्य के पूर्व मुख्यमंत्री श्री गिरधर गोमांगो, सूचना मंत्री देवाशीष नायक, मंत्री मनमोहन सामल, भुवनेश्वर के सांसद श्री प्रसन्न पटसानी, केंद्रीय मंत्री श्री जयपाल रेड्डी मुख्य रूप से उपस्थित थे।

रक्तदान शिविर आयोजित

कालाहांडी : १४.११.२००५। पंडित जवाहरलाल नेहरू के ११७वे जन्मदिवस एवं बाल दिवस पर मारवाड़ी पंचायत भवानी पटना द्वारा जिला रेडक्रास के सहयोग से नवनिर्मित अग्रसेन भवन में एक रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें ४० व्यक्तियों ने स्वेच्छा से रक्तदान किया। शिविर में कालाहांडी के मुख्य जिला चिकित्सा अधिकारी डा. दामोदर दास उपस्थित थे। श्री दास ने ४० बोतल रक्त संग्रह मे कालाहांडी का प्रथम स्थान बताया। संस्था सचिव श्री रमेश अग्रवाल ने यह शिविर प्रतिवर्ष लगाने की घोषणा की। अध्यक्ष श्री जगमोहन मुरारीलाल सहित राजू, अभिनंदन गोल्डी, विनय प्रवीण, विक्की, रूपेश ने शिविर की सफलता में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

कांटाबांजी : राष्ट्रीय अधिवेशन रायपुर में

अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच का अष्टम राष्ट्रीय अधिवेशन उल्लास पर्व २००६ रायपुर सेंट्रल शाखा के आतिथ्य में दिनांक ३१ दिसंबर २००५ एवं १ व २ जनवरी २००६ को छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर में आयोजित होने जा रहा है। इसकी थीम है : उपलब्धि, अवलोकन एवं आयोजन।

इस तीन दिवसीय राष्ट्रीय अधिवेशन में राष्ट्रीय सभा का आयोजन शाखाओं को वार्षिक पुरस्कारों का वितरण, राष्ट्रीय अध्यक्ष व राष्ट्रीय उपाध्यक्षों का चयन, नव वर्ष का स्वागत, भव्य उद्घाटन सत्र, राष्ट्रीय गीत प्रतियोगिता का निर्णय, अधिवेशन विशेषांक 'मंचिका' का विमोचन, व्यक्तिगत विकास पर डा. विजय बत्रा द्वारा कार्यशाला, सांस्कृतिक कार्यक्रम, विराट शांति सद्भावना रैली, सुंदर फोटो प्रदर्शनी, राजनैतिक चेतना सत्र में विशिष्ट राजनेताओं स्वच्छ परिचर्चा, उद्योगपति सत्र में प्रमुख उद्योगपतियों के साथ सीधा संवाद, नारी चेतना सत्र में महिलाओं के नेतृत्व पर चर्चा, नव निर्वाचित राष्ट्रीय पदाधिकारियों का शपथ विधि समारोह, यादगार समापन समारोह आदि कार्यक्रम आयोजित होंगे।

अधिवेशन की स्वागत समिति के प्रमुख संरक्षक हैं सांसद श्री नवीन जिंदल एवं प्रमुख मार्गदर्शक हैं पूर्व सांसद श्री लखीराम अग्रवाल व वरिष्ठ समाजसेवी श्री निरंजन लाल अग्रवाल। इस महासभा को सफल बनाने हेतु राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री बलराम सुल्तानिया व राष्ट्रीय महामंत्री श्री पुरुषोत्तम शर्मा, स्वागताध्यक्ष श्री अशोक अग्रवाल व स्वागत मंत्री श्री कन्हैया अग्रवाल, आयोजक शाखाध्यक्ष श्री राजेश केडिया व शाखामंत्री श्री विशाल अग्रवाल के साथ समस्त राष्ट्रीय, प्रांतीय व शाखा पदाधिकारी प्रयासरत हैं।

रामगढ़ : अमृतधारा परियोजना का शुभारंभ

युवा मंच रामगढ़ केंट द्वारा छात्रों हेतु अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच की अमृतधारा परियोजना का शुभारंभ किया गया। मंच सदस्यों ने सेठ चंदनमल जाजू चेरिटेबल ट्रस्ट, रामगढ़ के ट्रस्टी श्री हनुमान प्रसाद जाजू को प्रेरित कर एक्वागार्ड एवं कूलर प्राप्त किया। उसका उद्घाटन स्थानीय प्रबुद्ध नागरिकों की उपस्थिति में ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री हनुमान प्रसाद जाजू द्वारा किया गया। शाखाध्यक्ष श्री विवेक अग्रवाल ने निकट भविष्य में अमृतधारा परियोजना के अंतर्गत और प्याऊ लगाने का संकल्प लिया।

युवा मंच की रामगढ़ शाखा ने हजारीबाग शहर में कृतिम पैर प्रत्यारोपण शिविर के आयोजन में अग्रणी भूमिका निभाई। अध्यक्ष ने फरवरी माह में पोलियो सर्जरी करेक्टिव सर्जरी के शिविर के आयोजन की घोषणा की।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी महिला सम्मेलन

दीपावली मिलन समारोह आयोजित

मारवाड़ी महिला समिति जूनागढ़ शाखा द्वारा दीपावली का आयोजन किया गया। इस अवसर पर समिति अध्यक्ष श्रीमती जामोती देवी अग्रवाल ने सभी बहनों को गले लगाकर दीपावली की ढेरों शुभकामनाएं दीं एवं अखिल भारतवर्षीय एवं उत्कल प्रादेशिक मा.म.स. को अपना शुभ संदेश प्रसारित किया। दिनांक ४ नवंबर को जहां समिति ने दीपावली को एक बार फिर इकट्ठे मनाया वहीं दूसरी ओर समिति ने अग्रसेन भवन निर्माण कमिटी की प्रथम बैठक में हिस्सा लिया। दिनांक ६ नवंबर साय स्थानीय गायत्री महाकालेश्वर मंदिर में हुई इस बैठक में अग्रसेन भवन निर्माण संबंधी तथ्यों पर चर्चा हुई एवं महिला समिति ने निर्माण कार्य में आर्थिक सहयोग करने का आश्वासन दिया।

अन्य संस्थाएं

रायपुर : परिचय सम्मेलन एवं सामूहिक विवाह ३१ जनवरी से २ फरवरी तक

खण्डेलवाल सेवा समिति, रायपुर द्वारा आगामी बसन्त पंचमी ३१ जनवरी से २ फरवरी तक तीन दिवसीय अखिल भारतीय खण्डेलवाल युवक-युवती परिचय सम्मेलन एवं सामूहिक विवाह का आयोजन गोदड़ीवाला संत बाबा हरदास राम सेवा मंडल, आर.टी.ओ. आफिस के पास देवपुरी, धमतरी रोड, रायपुर में किया जाएगा।

जयपुर : विद्यार्थी सम्मान समारोह

१० नवंबर : प्रतिभाओं का सम्मान हमारी संस्कृति की विशेषता है आज पूरा विश्व भारतीय प्रतिभाओं का लोहा मान रहा है क्योंकि दुनिया के विकसित देशों में आज भारतीय प्रतिभाओं ने महत्वपूर्ण स्थान बना लिया है। यह कहना है राजस्थान की राज्यपाल प्रतिभा पाटील का। श्रीमती पाटील राजभवन में कोलकाता की समाजसेवी संस्था मामराज अग्रवाल फाउंडेशन द्वारा आयोजित मेधावी विद्यार्थी सम्मान समारोह को संबोधित कर रही थी। इस समारोह में राजस्थान और केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की दसवीं और बारहवीं परीक्षाओं के साथ सीए परीक्षा में सर्वश्रेष्ठ परिणाम प्राप्त करने वाले राजस्थान के ९२ विद्यार्थियों को नगद पुरस्कार राशि, प्रमाण पत्र व अंग वस्त्र भेंट किये गए। राज्यपाल ने कहा कि भविष्य में विश्व की अर्थव्यवस्था को वही निदेर्शित करेगा जो ज्ञान विज्ञान के क्षेत्र में आगे बढ़ेगा। भारत इसी दिशा में प्रगति कर रहा है। आधुनिक जीवन शैली में विद्यार्थियों के पथ विचलन के बहुत आकर्षण मौजूद हैं लेकिन प्रतिभाशाली विद्यार्थी अपनी पढ़ाई पर ही ध्यान केंद्रित रखते हैं और सर्वश्रेष्ठ परिणाम प्राप्त करते हैं।

राज्यपाल ने राजस्थान की विद्यार्थी प्रतिभाओं को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से मामराज अग्रवाल फाउंडेशन द्वारा किए जा रहे

प्रयासों की सराहना करते हुए कहा कि राजस्थान के ग्रामीण क्षेत्रों विशेष दक्षिण राजस्थान के आदिवासी इलाकों में शैक्षिक जागरुकता लाने की जरूरत है। ताकि इन क्षेत्रों की प्रतिभाओं को आगे बढ़ने का अवसर मिल सके। इस अवसर पर विधानसभा अध्यक्ष श्रीमती सुमित्रा सिंह ने कहा कि प्रतिभाएं समाज की पूंजी होती है और प्रतिभाओं के योगदान से राष्ट्र और समाज विकसित होता है। फाउंडेशन के अध्यक्ष मामराज अग्रवाल ने स्वागत संबोधन में कहा कि मेधा और प्रतिभा ही मनुष्य की पहचान है और प्रतिभाशाली व्यक्ति ही राष्ट्र और समाज को प्रगति की दिशा में आगे बढ़ाने का कार्य करता है। समारोह में राजस्थान फाउंडेशन की अध्यक्ष सावित्री कुंहाड़ी, मामराज फाउंडेशन के सचिव ब्रह्मानंद अग्रवाल व संरक्षक दामोदर अग्रवाल भी उपस्थित थे। फाउंडेशन के स्थानीय संरक्षक आरपी गोयल ने आभार व्यक्त किया। समारोह का संचालन महावीर प्रसाद रावत ने किया।

दिल्ली परिचय सम्मेलन रविवार १२ फरवरी २००६ को

अग्रवाल निदेशिका समिति के तत्वाधान में विवाह योग्य अग्रवाल युवक-युवतियों, विधुर विधवाओं, परित्यक्त परित्यक्ताओं का ४२वां परिचय सम्मेलन रविवार १२ फरवरी २००६ को धर्मभवन, साउथ एक्सटेंसन भाग-एक, नई दिल्ली १०००४९ में होगा। परिचय सम्मेलन के विवरण फार्म महामंत्री अग्रवाल निर्देशिका समिति डी- ३६ साउथ एक्सटेंशन-एक, नई दिल्ली ४९ के कार्यालय में नि:शुल्क उपलब्ध है। इस अवसर पर प्रत्याशियों के विवरण की परिचय पुस्तिका भी प्रकाशित होगी। विवरण छपवाने के लिए प्रत्याशियों के विवरण फार्म ३१ जनवरी २००६ तक कार्यालय में पहुंच जाने चाहिए।

अमरावती : श्री कृष्णदासजी जाजू की ५०वीं पुण्यतिथि पर भावपूर्ण श्रद्धांजलि

२३ अक्टूबर। माहेश्वरी समाज की परम वंदनीय विभूति स्व. श्री कृष्णदास जी जाजू सतत ५० वर्षो तक माहेश्वरी महासभा के सूत्रधार शिल्पकार बने रहे। विलक्षण बुद्धि प्रतिभा के धनी होने से तत्कालीन मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री पद तथा देश के वित्तमंत्री का पद आपके पास बार-बार आया। किंतु आपने सत्ता सुख को बरी विन्रमता से नकार दिया था। अनाशक्त कर्मयोगी निष्काम समाजसेवी एवं स्वतंत्रता संग्राम सेनानी श्री कृष्णदास जी जाजू की ५० वीं पुण्यतिथि पर अमरावती जिला माहेश्वरी सभा की श्री क्षेत्र जहांगीरपुर की विशेष सभा में भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की गई। सभा के अध्यक्ष डा. मधुसूदन मारू ने उनकी विशाल प्रतिमा को पुष्पमाला पहनाई। सभा की अध्यक्षता श्री नवलकिशोर राठी ने की।

दिल्ली :- माहेश्वरी क्लब दिल्ली को मिला बेस्ट सोसल सर्विस का एवार्ड

माहेश्वरी क्लब एमटी एनएन परफेक्ट हेल्थ मेला २००५ में माहेश्वरी क्लब तथा हार्ट केयर फाउंडेशन आफ इंडिया ने नि:शुल्क एक्यूप्रेशर प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया। हजारों की संख्या में लोगों ने इस पद्धति से इलाज करवाया। क्लब ने नि:शुल्क जल की भी व्यवस्था की जिसमें दस दिनों तक रोजाना ५०,००० लोगों से भी अधिक के लिए पीने के पानी की व्यवस्था की गई। दीनदयाल अस्पताल दिल्ली के साथ मिलकर रक्तदान शिविर का आयोजन किया। दस दिन के दौरान करीब २०० लोगों ने रक्तदान किया। हार्ट केयर फाउंडेशन आफ इंडिया के साथ मिलकर मेले में लगाए गए सभी स्टालों के सदस्यों के खाने-पीने की व्यवस्था की । जिसमें करीब १००० सदस्यों को रोजाना भोजन कराया गया। इन सभी कार्यक्रमों को सफल बनाने में सभापति श्री राजकुमार डागा, समाज कल्याण मंत्री श्री गोविंद मूधड़ा, श्री नंदलाल जी चांडक का विशेष सहयोग रहा। अंत में एमटी एनएल परफेक्ट हेल्थ मेला के डायरेक्टर श्री अनिल जाजू ने इस अवसर पर माहेश्वरी क्लब को बेस्ट सोसल सर्विस का अवार्ड दिल्ली सरकार के मंत्री श्री मंगतराम सिंहल के द्वारा प्रदान किया गया।

कोलकाता : वृहत्तर कलकत्ता प्रादेशिक माहेश्वरी सभा द्वारा प्रतिभा सम्मान

२४.९.२००५ कलकत्ता के विभिन्न अंचलों में निवास करने वाले स्वजातीय परिवारों के मेधावी विद्यार्थियों को प्रतिभा सम्मान समारोह में रजत पदक एवं स्मृति चिंह भेंट कर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए श्री सीएम बच्छावत (वाणिज्यकर आयुक्त प. बं. सरकार) ने कहा कि छात्रों को प्रशासनिक एवं तकनीकी क्षेत्र में भी अग्रणी भूमिका लेनी चाहिए। विशेष अतिथि श्री कृष्ण जाजू स्मारक ट्रस्ट के प्रबंध न्यासी श्री दामोदर लाल बंग ने सभागार को ट्रस्ट के बारे में जानकारी दी।

सम्मानित अतिथि श्री जगमोहन दास पलोड़ ने वैश्वीकरण युग नें सक्रिय भागीदारी का आह्वान किया। महासभा के संयुक्त मंत्री श्री अशोक द्वारकानी ने स्वयं एवं महासभा की ओर से शुभकामना दी। प्रमुख वक्ता श्री विश्वंभर नेवर ने युवाओं को समाज के प्रति अपने उत्तरदायित्व का निर्वहन करने हेतु कहा। समारोह अध्यक्ष श्रीयुक्त बेणुगोपाल बांगड़ ने कार्यक्रम की सराहना करते हुए प्रतिभागियों को सर्वांगीण विकास हेतु समाज से आग्रह किया कि । समारोह के प्रायोजक नृसिंहदास लक्ष्मी देवी मूंधड़ा चेरिटेबल ट्रस्ट के अध्यक्ष एवं प्रदेशाध्यक्ष श्री जगदीस चंद्र एन मूंधड़ा ने कार्यक्रम की विस्तृत जानकारी देते हुए आगतों का स्वागत किया। इस अवसर पर उपस्थित सुप्रसिद्ध उद्योगपति श्री गोविंद शारडा ने चार वर्ग के विशिष्ट प्रतिभाओं को स्वर्ण पदक प्रदान कर सम्मानित किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में सर्वश्री कौशल मोहता, अंजनी सोमानी, राजेश वियानी, प्रकाश काबरा, विनोद राठी, मदन गोपाल राठी, पवन चांडक, कुलदीप गडानी, एवं श्रीमती सुधा मूंधड़ा का योगदान विशेष उल्लेखनीय रहा। कार्यक्रम का सफल संचालन संयोजक श्री देवकिशन करनानी के किया।

सम्मान / बधाई

मुम्बई : श्री मोहनलाल तुलस्यान को दादाभाई नौरोजी सेवा पुरस्कार

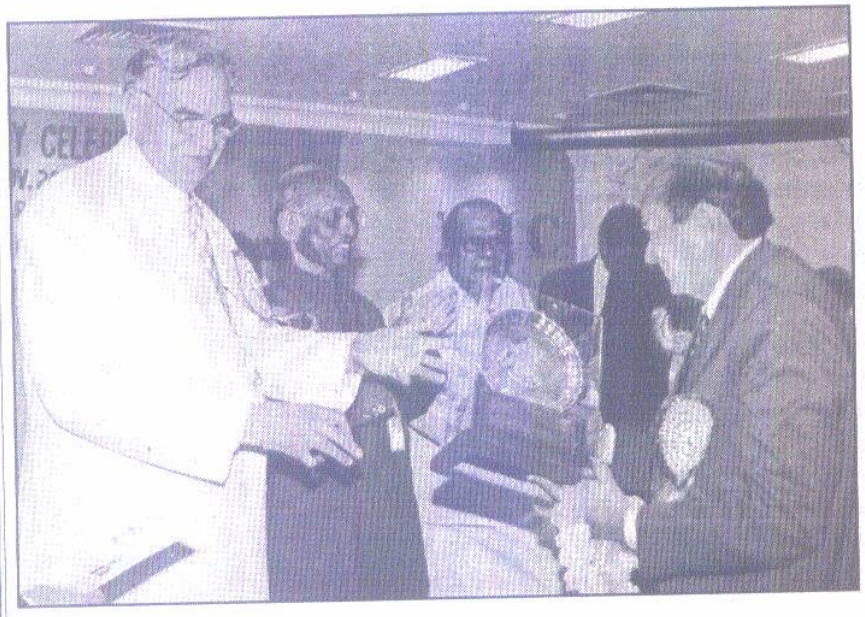

१९ नवम्बर। अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मोहनलाल तुलस्यान को पिछले दिनों सेवा के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए प्रतिष्ठित दादा भाई नौरोजी सेवा पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर मध्य प्रदेश के राज्यपाल श्री बलराम जाखड़, दादा भाई नौरोजी फाउंडेशन के अध्यक्ष प्रख्यात संविधान विशेषज्ञ डा. लक्ष्मीमल सिंघवी व सचिव एस एस महापात्र सहित देश के प्रख्यात उद्योगपति, सामाजिक व सांस्कृतिक क्षेत्र के लोग उपस्थित थे।

देवघर : इन्टर की परीक्षा में मनीष टापर

झारखण्ड एकेडमिक काउंसिल द्वारा प्रकाशित इंटर की परीक्षाफल में स्थानीय ए.एस. महाविद्यालय के छात्र मनीष शर्मा ने ६६० अंक प्राप्त कर जिले भर में सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया। श्री भोलानाथ शर्मा के पुत्र मनीष शर्मा ने अपनी सफलता के पीछे अपने पिता की प्रेरणा, अपनी लगन तथा बड़ों का आशीर्वाद बताया। मनीष ने अपना लक्ष्य आई.ए.एस. बनना बताया।

शोक सभा / श्रद्धांजलि

राउरकेला : पूर्व प्रान्तीय अध्यक्ष को मातृ शोक

३० नवम्बर। सम्मेलन के उत्कल प्रांत के पूर्व अध्यक्ष एवं शहर के उद्योगपति और समाजसेवी श्री विश्वनाथ मारोठिया की माता एवं समाजसेवी स्वर्गीय रामजीवन लाल मारोठिया की पत्नी श्रीमती पार्वती देवी मारोठिया का बैकुण्ठवास हो गया। वह ८५ वर्ष की थीं एवं अपने पीछे भरा-पूरा परिवार छोड़ गई हैं। श्रीमती पार्वती देवी अपने जीवनकाल में कई सामाजिक संस्थाओं से जुड़ी हुई थीं।

सम्मेलन श्री विश्वनाथ जी मारोठिया के प्रति इस दु:ख की घड़ी में अपनी सहानुभूति प्रकट करते हुए दिवंगत आत्मा को मोक्ष प्राप्ति हेतु ईश्वर से प्रार्थना करता है।

SREI, committed to the growth of the country's core sector has gone far beyond providing finance and refinance for construction equipment and spare parts.

Today, SREI provides valuable inputs as financiers and consultants across infrastructure projects and roads, power and ports in particular.

Fuels the growth in the Indian transportation sector through attractive financial schemes for the commercial vehicle segment and automobiles.

Serves the international traveller through convenient foriegn exchange transactions.

Creates a better environment by funding equipment and projects that are environmentfriendly.

Ensures complete protection by providing an entire range of insurance services.

Provides a range of investment oppurtunities through Government bonds, securities, fixed deposits and mutual funds.

Over the years SREI has built considerable expertise in the management of assets and financial services.

With its widespread network across the country, SREI is ready to meet growing customer needs with tailor-made solutions.

SREI is totally prepared and committed to stand by you to meet your diverse requirements as a complete finance solutions company.

Financially yours,

SREI INTERNATIONAL FINANCE LIMITED

EQUITY PARTNERS IFC USA • DEG GERMANY • FMO HOLLAND

SREI Equik (EQUIPMENT FINANCE) SREI Requik (EQUIPMENT REFINANCE) SREI Parts (SPARE PARTS FINANCE) SREI Core (INFRASTRUCTURE FINANCE) SREI Auto (AUTO FINANCE) SREI Monitor (ASSET MANAGEMENT SERVICES) SREI Bhaskar (SOLAR POWER FINANCE)

SREI Forex (FOREX SERVICES) SREI Life (LIFE INSURANCE SERVICES) SREI General (GENERAL INSURANCE SERVICES) SREI Money (INVESTMENT SERVICES) SREI Treasure (FIXED DEPOSITS) SREI Capital (INVESTMENT BANKING)

Viswakarma, 86C Topsia Road South, **Kolkata** 700046 • Phone 22850112-15/024-27 • Fax 22857542
New Delhi Phone 23322274/90/23360994/23314030 • **Bhubaneshwar** Phone 545177 • **Mumbai** Phone 24968636
Chennai Phone 28555584 • **Hyderabad** Phone 55666791 9/20 • **Bangalore** Phone 2276727
Email : corporate@srei.com • Web : www.srei.com

© 2001 SREI INTERNATIONAL FINANCE LIMITED

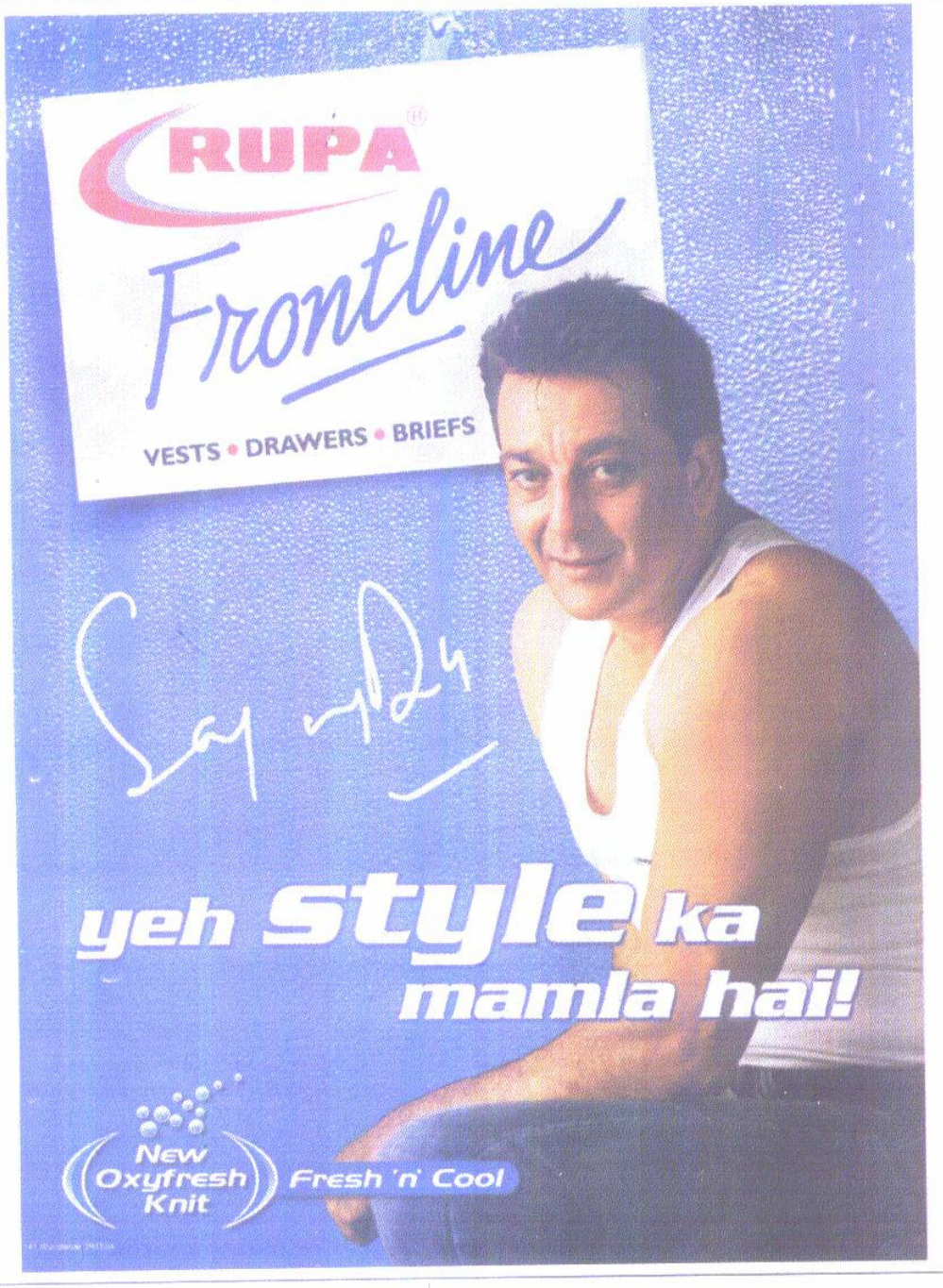

From :
All India Marwari Federation
152B, Mahatma Gandhi Road
Kolkata - 700007
Phone : 2268-0319

To,